# जीवन विवेचन

शरणानन्दजी महाराज के
प्रसंग, संस्मरण
की जानकारी व सन्तवाणी
में प्रवेश करने के लिए
दिव्य ज्योति देवकी माताजी
(M.A. मनोविज्ञान) के
जीवन विवेचन के प्रवचन
सुनें और पढ़ें..

जीवन विवेचन भाग 1 से 7
कैसेट 01 से 70 के कुछ अमृत बिन्दु

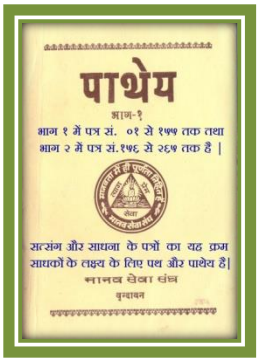

मेरे नाथ !

कौन है सृष्टि का मालिक ? कौन है मेरा निर्माता ? क्या मजा आता है उसको सृष्टि बनाने में और व्यक्ति को इतना विवश और दु:खी करके रखने में कि वह जो चाहता है सो होता नहीं, जो होता है सो भाता नहीं और जो भाता है वह रहता नहीं ? यह भी कोई लीला है जिसमें कोई तड़प-तड़प कर जीने के लिये बाध्य हो और किसी का खेल चले ! प्रो. देवकी जी (M.A. मनोविज्ञान) का इस तरह का ईश्वर के प्रति तार्किक, विद्रोही द्रष्टिकोण था |

जब उन्हें भगवान के घर का दरवाजा देखे हुए सन्त (स्वामी शरणानन्द जी) मिल गए तो इतना परिवर्तन हुआ कि उन्होंने स्वामीजी की पुस्तकों को आत्मसात किया, लिपिबद्ध किया तथा सन्तवाणी की cassettes तैयार करवाई | उनके द्वारा लिखी "प्रस्तावना" साधकों को पुस्तक के गूढ़ विषय में सुगमता से प्रवेश कराने में सक्षम है | कालांतर में स्वामीजी उन्हें मंच पर अपने साथ बैठाकर "दर्शन" की व्याख्या तथा "प्रश्नोत्तरी" करवाते थे |

प्रो.देवकी जी से दिव्य ज्योति देवकी माताजी तक की सफ़र जिन क्रमबद्ध पत्रों के द्वारा हुई वह "पाथेय" नामक पुस्तक से उपलब्ध है | सत्संग और साधना के जो क्रम ने देवकीजी को लक्ष्य तक पहुँचाया वह "पाथेय" जीवन-पथ के अन्य पथिकों को भी उपलब्ध है |

स्वामी शरणानन्द जी महाराज के जीवन की अंतरंग बातें, घटनाएँ, प्रसंग, मुलाकातें इत्यादि की माहिती तथा स्वामीजी महाराज के गहन से गहन मनोवैज्ञानिक एवं गूढ़ से गूढ़ दार्शनिक तथ्यों की सुगम-सरल व्याख्या देवकी जी की "जीवन-विवेचन" पुस्तकें पढनेसे तथा प्रवचन cassette/cd सुननेसे मिल जाती है |

स्वामी शरणानन्द जी तथा देवकी माताजी की पुस्तकें तथा प्रवचन cassettes मिलना "अनन्त" की अहैतु की कृपा है !

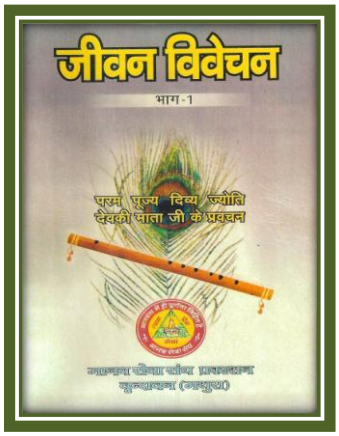


|| हरि: शरणम ||

# स्वामी शरणानन्दजी महाराज की अमरवाणी पर आधारित जीवन विवेचन के प्रवचनों तथा पुस्तकें मानवमात्र के लिए संजीवनी बूटी के समान है |

## जीवन विवेचन भाग – 1, कैसेट नं. 1 से 5 के कुछ अमृत बिन्दु —

1) यह एक विशेष बात है कि 'उनसे' अभिन्न होने के लिए बाहरी किसी भी वस्तु, व्यक्ति, अवस्था, परिस्थिति की अपेक्षा नहीं है | (प्रवचन 1, page -11, cassette no.1A)

मानव का जो जीवन है वह बड़े ऊँचे उद्देश्य से रचा गया है और बड़ी अच्छी योजना है 'उसकी' |

(प्रवचन 1, page -20, cassette no.1A)

2) "मैं" की रचना अविनाशी तत्वों से हुई है इसलिए इसका नाश नहीं होगा और शरीर की रचना भौतिक तत्वों से हुई है इसलिए उसका नाश अवश्य होगा | (प्रवचन 2, page -23, cassette no.1B)

जिन संकल्पों के शेष रह जाने के कारण तुम्हें जन्म लेने के लिए बाध्य होना पड़ा उन संकल्पों को छोड़ दो |

(प्रवचन 2, page -32, cassette no.1B)

3) जो लोग उस अविनाशी जीवन के आनन्द को जानने के लिए परिवर्तनशील नाशवान संसार को अपने लिए नापसन्द कर देते हैं, वे पार पा जाते हैं | (प्रवचन 3, page -39, cassette no.2A)

जिसको अविनाशी चाहिए उसको नाशवान द्रश्यों में से अपनी पसन्दगी हटा लेनी चाहिए |

(प्रवचन 3, page -40, cassette no.2A)

4) गाय के तुरन्त जन्मे हुए बच्चे की तरह कितनी भी असमर्थ और गंदी क्यों न हो, तुम अपनी सारी गन्दगी सहित उस जगज्जननी, उस जगतपिता की शरण में अपने को छोड़ दो | (प्रवचन 4, page -50, cassette no.2B)

सर्व समर्थ की महिमा का आधार लेने वाला दुर्बल से दुर्बल, पतित-से-पतित साधक आगे निकल जाता है और गुणों का अभिमान रखने वाला बड़े-से-बड़ा पंडित पीछे रह जाता है | (प्रवचन 4, page -52, cassette no.2B)

5) करुणा का रस मनुष्य के ह्रदय में आता है तो सुख-भोग की रुचि का नाश हो जाता है | करुणा और प्रसन्नता मनुष्य के लिए इतना आवश्यक तत्व है कि इसके द्वारा बड़े जबरदस्त भव-रोगों का नाश हो जाता है |

(प्रवचन 5, page -66, cassette no.3A)

'वह' ज्यों का त्यों है, कभी मिटा ही नहीं, कभी मिटेगा भी नहीं | अपना सम्बन्ध रखना है—एक से, और सबके प्रति सद्भाव रखना है उस एक के नाते | (प्रवचन 5, page -73, cassette no.3A)

6) हे परमात्मा ! सबका भला हो ! हे भगवान ! सबका कल्याण हो | सभी सुखी रहें ! सबका विकास हो ! यह बहुत बड़ी चीज है | इससे संसार का विकास जो होगा वह तो होगा ही, लेकिन इससे हमारे चित्त की शुद्धि हो जाएगी |

(प्रवचन 6, page -76, cassette no.3B)

द्रश्य जगत में मेरा व्यक्तिगत कुछ नहीं है, द्रश्य जगत से मुझे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए – यह ज्ञान से सिद्ध है और सर्व समर्थ प्रभु अपने हैं – यह विश्वास से साध्य है | (प्रवचन 6, page -81, cassette no.3B)

7) जिसको परमात्मा की प्रसन्नता के अतिरिक्त अपने लिए कुछ नहीं चाहिए, उसके द्वारा भजन होता है | मेरा कुछ नहीं है, सब कुछ तुम्हारा है और तुम्हारा मुझ पर सब प्रकार का अधिकार है | ऐसा एक सर्वस्व-समर्पण का भाव है |

(प्रवचन 7, page -93, cassette no.4A)

तुम एक बार झूठ-मूठ को भी कह तो दो कि हे प्रभु ! मैं तेरा ! तुम्हारी झूठी बात को भी सच्ची करने के लिए वे इतने तत्पर रहते हैं,कि वे पकड़ लेंगे तो फिर तुम छुड़ाना चाहो तो नहीं छोड़ेंगे | (प्रवचन 7, page -94, cassette no.4A)

8) More and more we study in psychology, we find our-selves hanging in the air. Our findings are base-less. Therefore I want to come to Indian Saints to find “something solid”, “something more dependable” — Dr. Boss (प्रवचन 8, page -104, cassette no.4B)

जो अपने में ही है, स्वरूप में ही है, जिसमें तुम हो, जो तुम में है, वह बाहर कहाँ मिलेगा ? कैसे मिलता है ? उसकी जरूरत अनुभव करो, तो वह तो एकदम तैयार खड़ा है | प्यार की जो भावना है और प्रेम का जो रस है वह हम लोगों से भी ज्यादा परमात्मा को मीठा लगता है | (प्रवचन 8, page -117, cassette no.4B)

9) सन्त–वाणी की बहुत ही आवश्यक, मौलिक, अनिवार्य तीन बातें — अकिंचन और अचाह हुए बिना शान्ति मिलेगी नहीं | दूसरों के काम आये बिना करने का राग मिटेगा नहीं | और प्रभु को अपना माने बिना स्मृति और प्रियता जागेगी नहीं | (प्रवचन 9, page -118, cassette no.5A)

जो तुम्हारे ही में विध्यमान है और तुमसे भी अधिक तुमको अपनाने के लिए लालायित है, उसकी स्मृति जब आती है, तो वह नित्य विध्यमान परमात्मा तत्काल ही अपनी विभूतियों से, अपने सान्निध्य से तुमको भर देता है |

(प्रवचन 9, page -129, cassette no.5A)

10) परमात्मा का धन्यवाद कि असत के संग में मिलकर रहने में मुझे सन्तुष्ट नहीं होने दिया | बड़ा उपकार किया तुमने कि किसी प्रकार सन्तुष्टि नहीं होने दी | .... रसस्वरूप जो हमारे जीवन का उद्गम है उससे विमुख हो जाओ, तो भीतर-भीतर नीरसता रहेगी ही | .... उसके भीतर जो कमी महसूस हो रही है वह तो उस परम प्रेमास्पद परम हितचिंतक का निमन्त्रण है कि भैया, तू रस कहाँ खोज रहा है ? रस तो मेरे पास है | आ, मैं तुझे तृप्त करूँ |

(प्रवचन 10, page -134, cassette no.5B)

स्वामी रामसुखदासजी महाराज तथा शरणागत प्रेमी भक्तों की बातें —

काहू को बल भजन है, काहू को आचार | व्यास भरोसे कुँवरि के, सौंवे पाँव पसार | , माला जपूँ न कर जपूँ, मुख से कहूँ न राम | हरि मेरा सुमिरन करे, मैं पायो विश्राम | , भरत सरिस को राम सनेही, जग जप राम, राम जप जेही | , मन ऐसा निर्मल भया, जैसे गंगा नीर | पीछे-पीछे हरि फिरे कहत कबीर-कबीर | , भरि आये दोउ राजिव नयना | ....

(प्रवचन 10, page -142 to 144, cassette no.5B)

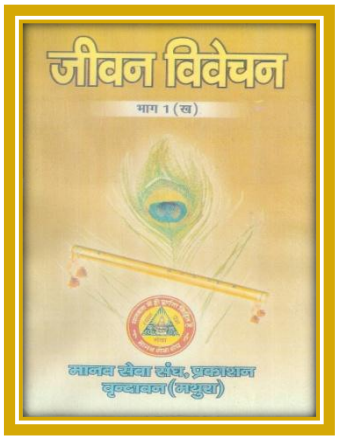


|| हरि: शरणम ||

# स्वामी शरणानन्दजी महाराज की अमरवाणी पर आधारित जीवन विवेचन के प्रवचनों तथा पुस्तकें मानवमात्र के लिए संजीवनी बूटी के समान है |

## जीवन विवेचन भाग – 1B, कैसेट नं. 6 से 10 के कुछ अमृत बिन्दु —

11) मैं सच्ची बात कहता हूँ तुम से, कि अधीर साधक की प्रार्थना के वाक्य पूरे होते हैं पीछे और समर्थ प्रभु उसकी बाँह पकड़ते हैं पहले | (प्रवचन11, page -12, cassette no.6A)

साधक जब अपनी ओर से हारता है, तो करुणासागर करुणा करते हैं | साधक जब साधना के पथ में अपने विचारों में उलझ करके दुःखी होता है, तब उसका दुःख दुःखहारी हरि से सहन नहीं होता है |

(प्रवचन 11, page -20, cassette no.6A)

12) परमात्मा में ही यह सामर्थ्य है कि जब कोई व्यक्ति देखे हुए सुहावने, लुभावने संसार को इन्कार करके उस बिना देखे को अपना मानना पसन्द करता है, तो उसकी एक बहादुरी पर वे सर्वसामर्थ्यवान रीझ जाते हैं |

(प्रवचन 12, page -24, cassette no.6B)

बनाने वाले परमात्मा ने आपको इतना बढ़िया बनाया है कि जड़-जगत का कोई भी पदार्थ आपको सन्तुष्ट नहीं कर सकता | जब तक उनके प्रेम-रस की मिठास हमारे जन्म-जन्मान्तर के अभावों को मिटा नहीं देगी और रस से भर नहीं देगी, तब तक इस जीवन का कोई स्वाद नहीं है | (प्रवचन 12, page -33, cassette no.6B)

13) जीवन-मुक्ति, भगवत-भक्ति का आनन्द लेने में जो मनुष्य सब प्रकार से स्वाधीन है और समर्थ है, वही मनुष्य जिस संसार को आज तक कोई पकड़ नहीं सका, उसी संसार को पकड़कर बैठे रहने की चेष्टा में अनमोल जीवन गँवाता है |

(प्रवचन 13, page -35, cassette no.7A)

समाज की बड़ी-भारी सेवा हो जायेगी, अगर मनुष्य-मनुष्य के भीतर यह विश्वास जग जाए कि वह अपना उद्धार इसी वर्तमान में अपने द्वारा कर सकता है बहुत बड़ी बात है | (प्रवचन 13, page -40, cassette no.7A)

14) इस दृश्य-जगत में ऐसा कुछ ठोस है ही नहीं कि तुम उसको पकड़ कर अपने पास रख लो | वस्तु, व्यक्ति, अवस्था, परिस्थिति आदि में कहीं पर ठहराव नहीं है, स्थिरता नहीं है | भ्रम-ही-भ्रम है |

(प्रवचन 14, page -50, cassette no.7B)

वैज्ञानिक सत्य यह है कि जो अपने में नहीं है, जो अपना नहीं है, उसकी कामना अपने में रखोगे, तो जो अपने में है, उसके होनेपन का आनन्द नहीं मिलेगा | (प्रवचन 14, page -52, cassette no.7B)

कामनाओं की उत्पत्ति मात्र से व्यक्ति अपने स्वाभाविक संन्तुलन से हट जाता है अर्थात् उसका *Equilibrium Disturb* हो जाता है | अपनी स्वाभाविक शान्ति, जो उसका स्वरूप है, उससे वह हट जाता है | जिसकी उत्पत्ति मात्र से हम "स्व" की और से विमुख होकर "पर" की ओर आकर्षित हो जाते है, उसका नाम है 'कामना' | उससे मिलने वाले सुख का लालच छोड़ दो, तो उसकी उत्पत्ति बन्द हो जाएगी | (प्रवचन 14, page -55, cassette no.7B)

यह दौड़-धुप जो चल रही है, जिसमें कभी सुख मालूम होता है, कभी दुःख मालूम होता है—यह सब कोरा भ्रमजाल ही है | सब तमाशा प्रतीत होने लग जाएगा | इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है, जिस पर गौरव किया जा सके |

(प्रवचन 14, page -56, cassette no.7B)

15) सबसे पहले करने योग्य पुरुषार्थ — कामना-पूर्ति के सुख का लालच छोड़ देना चाहिए | यह सबसे पहली बात है | कामनाओं के बन्धन में बँधा हुआ व्यक्ति न समाज के काम आता है, न अपने काम आता है और न परमात्मा के प्रेम का पात्र बन सकता है | तीनों ही दृष्टियों से जीवन में घोर असफलता ही असफलता है |

(प्रवचन 15, page -59, cassette no.8A)

जब तक हम काम से जी चुराते रहेंगे, तब तक हमारे सामने से यह प्रवृत्ति का जाल कभी कटेगा नहीं | जिस किसी ने छोटी से छोटी सेवा प्रवृत्ति में भी पूरी शक्ति लगाकर निस्पृहतापूर्वक, लगन से, प्रेम पूर्वक काम करके अपने को वीतराग बना लिया, उसके सामने से यह परिस्थिति हट जाती है | (प्रवचन 15, page -63, cassette no.8A)

अगर सचमुच आपके हाथ से प्राप्त सम्पत्ति का सदुपयोग होने लग जाएगा, तो प्रकृति की उदारता का दरवाजा बहुत चौड़ा हो जाएगा | ....आपकी उदारता से प्रस्सन हो कर इतना बरसा देते है कि जितने की आप कल्पना भी नहीं कर सकते | (प्रवचन 15, page -67, cassette no.8A)

अपना सौभाग्य मानो, प्रभु की विशेष कृपा मानो कि उन्होंने अपने इतने बड़े वृहत-ब्रह्माण्ड के कार्य में एक छोटी-सी जगह पर तुम को कहीं फिट तो किया है | बड़ी भारी मशीनरी है, जिसके द्वारा अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड़ों का संचालन हो रहा है | (प्रवचन 15, page -68, cassette no.8A)

16) अविनाशी जीवन की अभिव्यक्ति के लिए असत के प्रभाव को अपने पर से उतारे बिना काम नहीं चलेगा | उसके लिए पहली बात है—संकल्प-पूर्ति के सुख के प्रलोभन का त्याग | दूसरी बात यह है कि जब अपने संकल्प-पूर्ति के सुख के लिए कुछ करना ही नहीं है, तो करने की सामग्री जो मिली है, उसे निकटवर्ती जनसमुदाय की सेवा में लगाओ | तीसरी बात है कि जिस समय अवसर मिले उस समय थोड़ी देर के लिए अकेले हो जाओ | (प्रवचन 16, page -75, cassette no.8B)

आप शांति को महत्व देंगे, जीवन मुक्ति को महत्व देंगे, भगवत-भक्ति को महत्व देंगे, आपके भीतर इन अविनाशी तत्वों के प्रति महत्वबुद्धि अगर पैदा हो गई, तो फिर अपने विकारों को मिटाने के लिए आपको प्रयास और संघर्ष नहीं करना पड़ेगा | (प्रवचन 16, page -77, cassette no.8B)

जिस साधक ने कृपा-शक्ति का आश्रय लिया, उसको उन कृपालु की कृपा शक्ति स्वयं ही जाल में से निकालती है, उसकी दुर्बलताओं को मिटाती है, उसकी मलिनताओं को धोकर साफ करती है, प्रभु के प्रेम का पात्र बनाती है | तो वह प्रक्रिया बड़ी ही आरामदेह है | साधक अपनी ओर से जब हारने लगता है, तो जिताने वाले को मजा आता है | बहुत आनन्द की बात है | (प्रवचन 16, page -79, cassette no.8B)

17) मानव-सेवा-संघ के सत्य के द्वारा मानव-समाज को परित्राण दिलाने के लिए तो अच्छे-अच्छे साधक, बड़े-बड़े व्यक्तित्व आएँगे तुम्हारे पास उन्हीं की प्रेरणा से सब कार्य हो रहा है और वे स्वयं अदृश्य रूप से कार्य कर रहे है | अब तक मैं जितना कर चुका हूँ, उससे अधिक करूँगा | अब तक मैं जितना कह चुका हूँ उससे अधिक कहूँगा |

(प्रवचन 17, page -81, cassette no.9A)

मानव-सेवा-संघ ने सिखाया कि अनुसरण करो अपने विचार का और आदर करो सबके विचारों का | अगर इतनी उदारता आपके व्यक्तिगत जीवन में आ गई तो मंच पर बैठकर के व्याख्यान दिए बिना भी यह उदार नीति मानव-समाज में फ़ैल जाएगी | (प्रवचन 17, page -82, cassette no.9A)

अब आप सोचकर के देखिए, कि हममें से हर एक उस अनन्त परमात्मा की एक छोटी इकाई है, और उसमें से जो बिजरूप में प्रेम तत्व विध्यमान है, उसी के आधार पर हम अनन्त परमात्मा के प्रेमी होने जा रहे हैं—यह लक्ष्य है अपना | इसमें अगर इस दृश्य जगत के भीतर हम लोग भेद बना देंगे, तो हमरा उद्देश्य पूरा नहीं होगा |

(प्रवचन 17, page -83, cassette no.9A)

18) जो परमात्मा दिखाई नहीं देता, समझ में नहीं आता, कुछ उसके बारे में अपनी जानकारी भी नहीं है, उसके भरोसे बैंक एकाउन्ट से अधिकार, शरीर का मोह, कुटुम्बीजनों का सहारा कैसे छोड़ दे ? इतना बड़ा खतरा कौन ले ?

(प्रवचन 18, page -93, cassette no.9B)

मानव-सेवा-संघ का विचार जो है यह Spiritual Democracy है | अर्थात आध्यात्मिक विकास में सबका समान अधिकार है | (प्रवचन 18, page -94, cassette no.9B)

मनुष्य बुरा न रहे, अतृप्त न रहे, अभाव से पीड़ित न रहे, पराधीनता में फँसा न रहे और अपने रसरूप उद्गम से बिछुड़ कर रस के अभाव में दुनियाँ की धूल फाँकता न फिरे —ऐसा संकल्प मेरे जीवन दाता का भी है |

(प्रवचन 18, page -96, cassette no.9B)

19) वह जो सत्य तत्व है, नित्य तत्व है, परम प्रेमास्पद परमात्मा है, उसके साथ जो अपना लगाव है, खिंचाव है, वह बनाया हुआ नहीं है, अपितु वह मूल में ही है | जब यह अहम् रूपी अणु अर्थात "मैं" उसकी ओर से आँख हटा करके उससे अपने को बिछुड़ा करके जिससे नित्य सम्बन्ध नहीं है उसको पकड़ने की चेष्टा में लग जाता है, तो दीनता, अभिमान, सम्मान, अपमान, सुख-दुःख, संयोग-वियोग, जन्म-मरण में फँस जाता है | (प्रवचन 19, page -103, cassette no.10A)

शरीर और संसार के साथ नित्य सम्बन्ध नहीं है, आवश्यकता के अनुसार सम्बन्ध बन जाता है और काम खत्म होने से टूट जाता है | इसको अगर हमने स्वाभाविक बना लिया तो सारी वृत्ति सिमट करके अन्तर्मुख हो जाएगी और सुनने के बाद न सुनना, बोलने के बाद न बोलना, काम करने के बाद कुछ न करना, अप्रयत्न होकर, अहं-वृत्ति रहित होकर, नित्य तत्व से नित्य योग में परमानन्द को पाना हो सकता है | यह जीवन की बहुत ही स्वाभाविक, वैज्ञानिक, दार्शनिक और आस्तिक द्रष्टि से सच्ची बात है | (प्रवचन 19, page -104, cassette no.10A)

जो मिला हुआ दिखाई देता है, किसी भी समय में खत्म हो सकता है | तो जो बाहर-बाहर दिख रहा है उसमे आस्था मत रखिए | जो भीतर-भीतर है, वह अनमोल आनन्द, प्रेमरस, जो जीवन का खजाना है, वह खुलता है कैसे ? "कुछ नहीं करने से" | व्रत करो, उपवास करो, दान करो, काम करो, तीर्थ यात्रा करो, जो भी कुछ करना है करो, लेकिन करते-करते न करने की घडी आनी चाहिये | (प्रवचन 19, page -106, cassette no.10A)

अल्प समय है, अल्प आयु है, अल्प सामर्थ्य है, अगर यहीं बैठे-बैठे साधक बिल्कुल फ्री अर्थात आजाद हो करके यहाँ से न उठे, तो क्या सत्संग हुआ ? आपके भीतर जो सत्य विद्यमान है, उसकी सरसता को अनुभव करने के लिए आप परिस्थितियों के फेर में मत पड़िए | (प्रवचन 19, page -109, cassette no.10A)

20) सुख-भोग की प्रवृत्ति की थकान तो शरीर के स्थूल स्तर पर होती है, उसको आसानी से मिटाया भी जा सकता है | लेकिन सुख-भोग का लालच, जो अति सूक्ष्म है भीतर से उसको भी निकालिए | (प्रवचन 20, page -114, cassette no.10B)

जब कभी भीतर से सूना-सा लगे, तो उस घडी का बहुत अच्छा उपयोग करना चाहिए | अपने में खूब जागृति और चेतना लानी चाहिए कि यह नीरसता तो मेरे रस स्वरूप प्रेमास्पद प्रभु की याद दिला रही है | तो बाहर की दौड़-धूप खत्म हो जाएगी | (प्रवचन 20, page -118, cassette no.10B)

उनको तो मानव-ह्रदय का प्रेम इतना पसंद है, इतना पसंद है कि तुम्हारे भीतर का रस सूख गया, तो वे अपना ही अनन्त रस तुम्हारे में भर देंगे और तुम जब अर्पण करोगी तो वे अच्छा मानेंगे, आनन्दित होंगे, स्वयं तुमको आनन्दित करेंगे और बड़ा उपकार मानेंगे | तो दिया हुआ उनका ही है और उन्हीं के प्रति अर्पित है और वे जानते हैं कि मेरा दिया हुआ है, फिर भी उपकार मानते है, आनन्दित होते है और बहुत ही उपकृत हो करके देने वाले भक्त को अपना प्रेमास्पद बनाते है |

(प्रवचन 20, page -119, cassette no.10B)



मानव मात्र में क्रान्ति आ जाये ऐसे क्रान्तदर्शी श्री शरणानन्द जी महाराज की विचार धारा का प्रचार-प्रसार करना सन्तों की प्रसन्नता का हेतु है | श्री शरणानन्दजी महाराज का पूरा साहित्य (Approx cost Rs. 1500/- only) मानव सेवा संघ, वृन्दावन (ph. 9760823149) से उपलब्ध है | जिसे आश्रमोंमें, संस्थाओंमें तथा साधु-सन्तों, साधकों, कथाकारों इत्यादि तक पहुँचाना चाहिए – भेट करना चाहिए | - एक साधक

**हे मेरे नाथ ! मैं आपको भूलूँ नहीं**

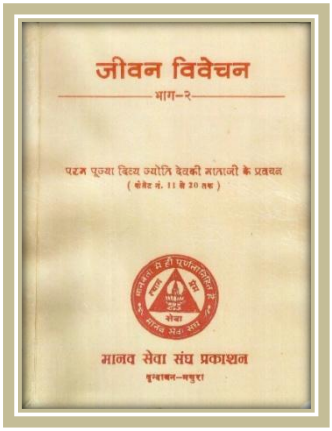


|| हरिः शरणम ||

# स्वामी शरणानन्दजी महाराज की अमरवाणी पर आधारित जीवन विवेचन के प्रवचनों तथा पुस्तकें मानवमात्र के लिए संजीवनी बूटी के समान है!

## जीवन विवेचन भाग – 2, कैसेट नं. 11 से 20 के कुछ अमृत बिन्दु —

21) अमुक प्रकार की परिस्थिति बन जाएगी तो जीवन बड़ा सरस हो जाएगा | इसी में सर्वनाश हो गया | न मनचाही परिस्थिति बने और न चैन मिले | अनुकूल परिस्थितियों की कामना ने मनुष्य को शान्ति से जीने नहीं दिया | .... केवल अप्राप्त परिस्थिति की कल्पना में, अप्राप्त वस्तु की कामना में, आस-पास दिखाई देने वाले शरीर और संसार की ममता में, अपने को बर्बाद कर लिया | (प्रवचन21, page -11, cassette no.11A)

22) दूसरों की सहायता पर मेरा विकास निर्भर है, ऐसा सोचना मानवता का बड़ा भारी अपमान है | (प्रवचन22, page -15, cassette no.11A)

जिसने देखे हुए संसार को नापसन्द किया, और बिना देखे हुए परमात्मा को पसंद कर लिया, उसको शरीर के रहते-रहते परमात्मा के मिलन का अनुभव हो जाता है | यह जीवन का सत्य है | (प्रवचन22, page -17, cassette no.11A)

23) मानव के जीवन का कितना बड़ा भ्रम (illusion) है कि हमें प्राप्त परमात्मा अप्राप्त मालूम होता है और कभी न प्राप्त होने वाला संसार प्राप्त मालूम होता है | .... यहाँ बैठे ही बैठे, बातचीत करते ही करते, मेरे बोलते ही बोलते, आपके सुनते ही सुनते इस भ्रम का नाश यहीं पर हो जाना चाहिए और ऐसा हो सकता है | (प्रवचन23, page -20, cassette no.11B)

निःस्पृह भाव से सेवा की है तो सेवक के हृदय में विश्व प्रेम का ऐसा प्रादुर्भाव होता है कि उसमें सर्वेंद्रियाँ डूब जाती हैं | रोम-रोम तृप्त हो जाता है, और प्रेम-समाधि लग जाती है | (प्रवचन23, page -25, cassette no.11B)

24) साधन क्या है ? बुराई रहित होना | उपासना क्या है ? परमात्मा से आत्मीय सम्बन्ध स्वीकार करना | भजन क्या है ? आत्मीयता के फलस्वरुप परमात्मा के प्रति प्रियता का उदित होना | प्रिय की मधुर स्मृति का जाग्रत होना भजन है और प्रेम के आदान-प्रदान में प्रेमी के अस्तित्व का खो जाना भगवत मिलन है | (प्रवचन24, page -30, cassette no.12A)

इश्वर की कल्पना तुम्हारे जी में कैसी है सो तुम जानो | तत्व एक ही है और उसके प्रेम से ही मानव हृदय की पूर्णता होती है | (प्रवचन24, page -40, cassette no.12B)

25) जिसको तुम देख रहे हो वह तुमको नहीं देख रहा है और फिर भी हम उसके पीछे पड़े हुए हैं | इसके विपरीत जो नित्य निरन्तर मुझे देख रहा है, जो सर्वज्ञ है, सर्वान्तर्यामी है, सर्वत्र है, सभी का है, सभी में है, और सभी को निरन्तर देख रहा है उसकी ओर हम नहीं देखते | (प्रवचन25, page -48, cassette no.12B)

दो ही बातें महाराजजी ने कहीं — पहली यह कि सारी सृष्टि की जितनी शक्ति है उससे भी अधिक शक्ति आपमें है और दूसरी बात, आपका जो अहंरुपी अणु है जिसको कि हम लोग "मैं" कहकर सम्बोधित करते हैं, इस आपके अहं की जो सीमा है वह सारी सृष्टि से बड़ी है | (प्रवचन25, page -52, cassette no.12B)

"फूल को तोड़ने में देर लगती है, सत्य से अभिन्न होने में समय नहीं लगता |" "घोड़े की रकाब में पैर डालने में देर लग सकती है, तत्ववित् होने में, भगवान से मिलने में देर नहीं लगती है |" काल अपेक्षित है ही नहीं | जो अभी है, अपने में है, सभी का है, सभी में है, उससे अभिन्न होने में, काल अपेक्षित नहीं है | (प्रवचन25, page -53, cassette no.12B)

26) मनुष्य संसार में सुख-दुःख का दास बनने नहीं आया है | परिस्थितियों का उपयोग करके सभी परिस्थितियों से अतीत आनन्द और अनन्त प्रेम का पात्र बनने के लिए आया है | (प्रवचन26, page -58, cassette no.13A)

ध्यान करना पीछे, मंत्र जपना पीछे, आसन लगाना पीछे, ये सब जब होंवे तुमसे तब करना | आज अगर जीवन की यात्रा आरम्भ करते हो तो सबसे पहली बात यह है कि अपने द्वारा इस बात को स्वीकार करो कि मैं परिस्थितियों का दास नहीं हूँ | (प्रवचन26, page -62, cassette no.13A)

आपको परमात्मा ने स्वाधीन बनाया और आपकी स्वाधीनता को सुरक्षित रखना पसन्द किया | किसलिए, कि आप स्वेच्छा से यह कह सकें कि दिखाई देने वाला सुहावना-लुभावना संसार मुझे नहीं चाहिए | यह बनने-बिगड़ने वाली सृष्टि का सुख मुझे नहीं चाहिए | मुझको तो सदा-सदा तक रहने वाला, अजर-अमर अविनाशी परम प्रेमास्पद परमात्मा चाहिए | (प्रवचन26, page -67, cassette no.13A)

27) हम लोगों ने मानव जीवन के उत्थान के लिए एक अचूक मंत्र सुना | यह स्वामीजी महाराज का अनुभूत सत्य है और मानव मात्र के जीवन का सत्य है | क्या है ? कुछ चाहोगे तो कुछ मिलेगा, कुछ नहीं मिलेगा और कुछ नहीं चाहोगे तो सब कुछ मिलेगा | (प्रवचन27, page -68, cassette no.13B)

मनुष्य की सब इच्छायें पूरी नहीं होती है तो इसमें प्राकृतिक विधान का दोष नहीं है | परमात्मा का दोष नहीं है क्योंकि इसमें मनुष्य का हित है कि उसकी सब इच्छायें पूरी नहीं हो | मानव जीवन के लिये बड़ी भारी हितकारी बात है | आप सोचिए कि जिन वस्तुओं, व्यक्तियों और परिस्थितियों के संयोग में हम सदा के लिए ठहर नहीं सकते हैं, उनकी इच्छा करके कहाँ तक आदमी शान्ति और सन्तोष पा सकता है ? (प्रवचन27, page -72, cassette no.13B)

संकल्पों की अपूर्ति से जीवन में जो विकृति आती है, संकल्पों की अत्यधिक पूर्ति से भी वही विकृति आती है | (प्रवचन27, page -75, cassette no.13B)

28) भक्त होना सबसे ऊँची बात है मानव-जीवन की | जो किसी भी वस्तु पर अपना अधिकार मानता है, जो अकिंचन नहीं हो गया है वह भक्त नहीं हो सकता |जो अचाह नहीं हो गया, वह भक्त नहीं हो सकता | तो अकिंचन हो जाना अर्थात् ममता रहित हो जाना | मेरा करके, इस सारी सृष्टि में कुछ भी नहीं है | इस बात को सच्चाई से अपने लिये मान लेना, साधकों के लिए अनिवार्य है | (प्रवचन28, page -82, cassette no.14A)

आपको यदि उत्पत्ति विनाश युक्त कोई भी वस्तु चाहिए और किसी भी वस्तु में आपकी ममता है तो जिसको बनने-बिगड़ने वाला संसार चाहिए, उसकी कभी न मिटने वाले अविनाशी परमात्मा में भक्ति नहीं जम पायेगी | (प्रवचन28, page -83, cassette no.14A)

दृश्य जगत के संयोग से जीवन को सरस बनाने की चेष्टा में कितनी भी उम्र बिता दो, कितनी भी शक्तियों का नाश कर दो, और कितने भी सुख-लोलुप बन जाओ, और कितनी भी शक्ति इन्द्रिय-लोलुपता में नष्ट कर दो, फिर भी भीतर की जो बनावट है, मौलिक तत्व है, जिसमें प्रभु प्रेम की प्यास है वह प्यास कभी भी मिटती नहीं है | (प्रवचन28, page -85, cassette no.14A)

29)जब व्यक्ति अपने द्वारा अपने जीवन में सुधार लाने के लिए तत्पर होता है, स्वेच्छा से जीवन को बुराई रहित बनाने के लिए जब तत्पर हो जाता है तो इसको महराजजी ने 'क्रान्ति' कहा है | यह क्रान्ति है, अपने द्वारा बुराई न करने का व्रत क्रान्ति है और बलपूर्वक बुराई रोकने की क्रिया आन्दोलन है | (प्रवचन29, page -91, cassette no.14A)

कुछ मत करो | यह बात बिल्कुल सत्य है | अपने जाने हुए असत् के संग का त्याग मैं न करूँ तो किसी उपदेशक का उपदेश मुझको शान्ति नहीं दे सकता और अपने जाने हुए असत् के संग का त्याग जो है, यह कोई क्रिया नहीं है, इसमें श्रम नहीं है, इसमें पराधीनता नहीं है | (प्रवचन29, page -92, cassette no.14A)

क्रियाशीलता से शक्ति का ह्रास होता है और विश्राम से, कुछ नहीं करने से, अप्रयत्न होने से शक्ति संचित होती है | (प्रवचन29, page -93, cassette no.14B)

परम प्रेमास्पद, जिसके प्रेमरस का एक कण सारी सृष्टि के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त है,उससे मिलने के लिए अभ्यास नहीं चाहिए, केवल विश्वास चाहिए, केवल भाव चाहिए | (प्रवचन29, page -97, cassette no.14B)

30)इस दृश्य जगतमें कोई संयोग ऐसा नहीं है कि वह प्राप्त भी हो जाए तो आपको सदा के लिए सन्तुष्ट कर सके | है ही नहीं | (प्रवचन30, page -101, cassette no.14B)

जन्म-जन्मान्तर से भूल करते-करते पाप का पहाड़ बना दो, प्रभु की करुणा की एक बूँद, उसको समाप्त करने के लिए पर्याप्त है | उसकी महिमा सँभाल लेगी तुम्हें | तुम्हारा दायित्व केवल इतना है कि तुम उस बिना देखे, बिना जाने को अपना कहकर स्वीकार करो | (प्रवचन30, page -105, cassette no.14B)

31)मेरा कुछ नहीं है, मुझे कुछ नहीं चाहिए | ये दोनों व्रत जो हैं, अशुद्ध अहम् को शुद्ध करते हैं | अशुद्ध अहम् जब शुद्ध होता है, तब उसमें सत्य की विभूतियाँ प्रकट होती हैं |.... अहम् की अशुद्धि के रहते हुए जब हम लोग सोचते हैं, कि मैं कुछ नहीं हूँ, तो घबड़ाहट मालूम होती है | (प्रवचन31, page -112, cassette no.15A )

सारी सृष्टि बनाई उन्होंने आपके प्यार से प्रेरित होकर, आपको सुख देने के लिए, और आपको बनाया अपने लिए | सचमुच मानव-जीवन की रचना जो हैं, बड़े ऊँचे उद्देश्य से हुई है | (प्रवचन31, page -118, cassette no.15A )

32)देखा हुआ जगत सेवा का पात्र है, विश्वास का नहीं | बिना देखे, बिना जाने परमात्मा में विश्वास करें | (प्रवचन32, page -120, cassette no.15B )

इश्वर का मिलन किस रुप में होगा, उस रुप की तुम अपनी ओर से कल्पना मत करो | .... मैंने इश्वर में विश्वास किया है तो इश्वर को अमुक-अमुक प्रकार का रुप बनाकर मेरे सामने आकर खड़ा होना ही चाहिए, ऐसा मत सोचिए | इसमें घाटा लग जायेगा | (प्रवचन32, page -123, cassette no.15B )

33)लेने की भावना जब तक अपने भीतर बनी रहेगी, शरीर और संसार की पराधीनतासे मुक्त होनेकी सामर्थ्य नहीं आयेगी | (प्रवचन33, page -130, cassette no.16A )

घर के भीतर से लेकर के जगत में आपका जहाँ तक संपर्क है वहाँ तक- किसी को नुक्सान नहीं पहुँचाना पहली बात,जिसके प्रति जो अपना कर्तव्य हैं, उसे पूरा करना दूसरी बात, दूसरों के कर्तव्य पर ध्यान न देना तीसरी बात, दूसरों पर अपना अधिकार न जमाना चौथी बात | (प्रवचन33, page -132, cassette no.16A )

विवेक के प्रकाश में देख करके अपने अलौकिक जीवन पर दृष्टि रखकर, की हुई भलाई के फल और अभिमान को छोड़ देंगे तो शरीर और समाज की पराधीनता मिट जायेगी | फिर सही प्रवृत्ति के बाद सहज निवृत्ति की शान्ति में निवास करेंगे तो शरीरों से तादात्म्य टूट जायेगा | अपने स्वतन्त्र अस्तित्त्व का अपने को पक्का अनुभव मिल जायेगा |

(प्रवचन33, page -136, cassette no.16A)

34) जो देखा हुआ है और दीखता है उसके सम्बन्ध के कारण भीतर की जड़ता जाती नहीं है, और जब जड़ता मिटती नहीं है तो बिना देखा, बिना जाना हुआ, उतना अपना नहीं लगता जितने ये हाड़-माँस के पुतले अपने लगते है | यह कमी रह जाती है | (प्रवचन34, page -142, cassette no.16B )

अपने में अपना जो है, उससे अभिन्न होने का जो आनन्द होता है उसमें कमी इसलिये रह जाती है कि उस अलौकिक अविनाशी आनन्द स्वरुपको भी हमने पसंद किया और इस बनने-बिछुड़ने वाले संसार से भी सम्बन्ध रखा |

(प्रवचन34, page -142, cassette no.16B )

प्रेमस्वरुप प्रभु ने 'उनको' प्रेम प्रदान करने का अधिकार आपको दिया है, और किसी को नहीं दिया, और यह श्रेय आपने नहीं लिया, 'उनके' मुख से एक बार ऐसे वचन सुन नहीं लिये- "तुम जो कियो सो कोऊ न कियो हे गोपियो |" तो जी कर क्या किया ? (प्रवचन34, page -153, cassette no.16B )

35) दूसरों के साथ हम जो कुछ करेंगे, वही अनेक गुणा अधिक होकर, अपने साथ होता है | बुराई किसी के साथ मत करो, नहीं तो वह बहुत बड़ी होकर तुम्हारे साथ होगी | और भलाई करने की बात जब जीवन में आवें तब शक्ति भले ही सीमित हो, समय सीमित हो, लेकिन आपका भाव असीम होगा | (प्रवचन35, page -154, cassette no.17A )

जो सुख के भोगों का त्याग कर देगा, भोगों की इच्छाओं और वासनाओं का त्याग कर देगा, उसका दुःख मिट जायेगा |

(प्रवचन35, page -154, cassette no.17A )

जो मनुष्य संसार में रहते हुए, द्वन्द्व की घडी में सद्विचारों का सहारा लेकर सत्य को महत्व दे देता हैं, छुटने वालों को छोड़ देता है तो उसी समय उसके सद्विचार से आनन्दित होकर उसके पाँव के निचे से धरती ऊँची हो जाती है | उसका बड़ा समर्थन है | (प्रवचन35, page -161, cassette no.17A )

36) नाशवान की ओर से अपना सम्बन्ध तोड़ लेना और अविनाशी से जो नित्य सम्बन्ध है, सदा-सदा से है उसको मान लेना | ये दो ही बातें हर प्रणाली के साधक के लिये अनिवार्य तत्व है | (प्रवचन36, page -165, cassette no.17B )

ईश्वर में ही विश्वास करने वाले लोग, मरे हुए सम्बन्धियों को नहीं भूलते हैं, और नित्य विद्यमान परमात्मा की उनको विस्मृति हो जाती है | दुःख की बात है कि नहीं ? (प्रवचन36, page -169, cassette no.17B )

37) जब तक शरीरों में कुछ भी करने का बल है, तब तक उस बल का सदुपयोग आवश्यक है, इसलिए कि करने का राग मिट सके और एक शरीर का अनेकों शरीरों के साथ कुशलतापूर्वक अभियोजन हो सके |

(प्रवचन37, page -178, cassette no.18A )

जो भी कुछ करना है, करने के राग की निवृत्ति के लिए हैं, अपने प्यारे की पूजा के लिए है | न मुझे शरीर से कुछ चाहिए, न मुझे संसार से कुछ चाहिए | (प्रवचन37, page -182, cassette no.18A )

बनने-बिगड़ने वाली परिस्थितियों से अपने को क्या लेना है ? हम तो 'उसके' हैं, जो सर्व उत्पत्ति का आधार है, हम तो 'उसके' हैं जो अनन्त ऐश्वर्यवान है, जिस पर कोई विजयी नहीं हो सकता और हम तो 'उसके' हैं जो हमसे अपनेपन का नाता मानता है | (प्रवचन37, page -190, cassette no.18A )

38) परम प्रेमास्पद अनन्त माधुर्यवान प्रभु में इतना घना आकर्षण है, आपको पकड़कर अपनी तरफ खींचने का और उस आकर्षण में आपको अपनी ओर लुभा लेने की जो मधुरता है उसकी तुलना संसार की किसी भी सुखद परिस्थिति से नहीं हो सकती | (प्रवचन38, page -193, cassette no.18B)

परमात्मा है और सभी का होने से मेरा भी है, सदैव होने से मुझमें हैं, अभी है और मेरा है ऐसा करके जिसने स्वीकार किया तो इस स्वीकृति के बाद उसको कुछ अभ्यास करना पड़ेगा तब अनुभव होगा ऐसी बात नहीं है | इस स्वीकृति मात्र से अहं में एक परिवर्तन होता हैं | (प्रवचन38, page -197, cassette no.18B)

39) हम मिटने वाले का सहारा छोड़ें | सहारा ही छोड़ना है और कुछ नहीं छोड़ना हैं, क्योंकि संसार में यह सामर्थ्य नहीं कि यदि आप स्वयं न छोडें तो वह सहारा छुडवा देवे | (प्रवचन39, page -211, cassette no.19A)

प्यारे प्रभु ! तुम चाहे जैसे हो और तुम चाहे जहाँ रहो और चाहे कुछ करो, तुम मेरे हो, मै तेरा हूँ | तुम भी आजाद रहो, मैं भी आजाद हूँ | वह प्रेम ही क्या, जो प्रेमास्पद को अपने संकल्पों में बाँधे | और वह प्रेमास्पद क्या, जो प्रेमी को अपने अधीन रखना पसन्द करे | (प्रवचन39, page -213, cassette no.19A)

40) 'मैं' का अस्तित्व जो स्वीकार करता हैं वह व्यक्ति परमात्मा के अस्तित्व से इन्कार कर ही नहीं सकता क्योंकि "मैं" की उत्पत्ति 'उसमें' से हुई है जिसमें से हमारी उत्पत्ति हुई है और जिसकी सत्ता हम अपने द्वारा अनुभव करते हैं उसी को भक्तजन भगवान् कहते हैं | (प्रवचन40, page -218, cassette no.20A)

शुभ कर्म करने का भी जब संकल्प है, तब तक शरीरों का साथ हम नहीं छोड़ सकते | शुभ कर्म करने के बाद भी शुभ कर्म करते रहने का राग, कर्मों का फल, और कर्तापन के अभिमान, सबसे छूट सकेंगे तो अशरीरी जीवन में प्रवेश होगा | (प्रवचन40, page -228, cassette no.20A)

41) परिस्थिति विशेष का मनुष्य के जीवन में महत्व नहीं है | परिस्थिति के सदुपयोग का महत्व है | (प्रवचन41, page -230, cassette no.20B)

वर्तमान में जो कुछ आपके पास है, उसी के सदुपयोग से वही अविनाशी जीवन मिल सकता है जो किसी भी विशेष सामर्थ्यशाली को मिला होगा | (प्रवचन41, page -237, cassette no.20B)

सही प्रवृत्ति के बाद सहज निवृत्ति में निवास नहीं करोगे तो शरीरों से अतीत अशरीरी जीवन जो तुम्हारे में ही विद्यमान हैं, उसके प्राकट्य का अनुभव तुमको नहीं होगा | (प्रवचन41, page -242, cassette no.20B)

42) मेरे बिना चाहे और बिना किये जो कुछ हो रहा है, वह सदैव ही हितकर है, ऐसा मान करके हमें उससे घबराना नहीं चाहिए | (प्रवचन42, page -243, cassette no.19B)

भूतकाल हमारा चाहे जैसा भी था, अब वर्तमान से लेकर के भविष्यमें फिर कभी हम नये विकारोंको पैदा नहीं होने देंगे | पुरानी जो विकृतियाँ पैदा हो गई हैं उनको मिटाने की जिम्मेदारी प्रभु हम लोगों पर नहीं डालते हैं | परिणाम से जो विकार पैदा हो गये, उनको मिटाने के लिए मुझे कुछ नहीं करना पड़ेगा | (प्रवचन42, page -248, cassette no.19B)

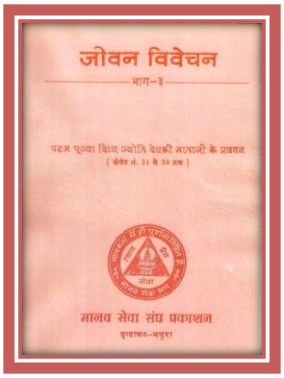


|| हरि: शरणम ||

# स्वामी शरणानन्दजी महाराज की अमरवाणी पर आधारित जीवन विवेचन के प्रवचनों तथा पुस्तकें मानवमात्र के लिए संजीवनी बूटी के समान है!

## जीवन विवेचन भाग – 3, कैसेट नं. 21 से 30 के कुछ अमृत बिन्दु —

43)सन्त की सलाह है कि हृदय की नीरसता का नाश करना हो, अभाव को मिटाना हो, जीवन को सरस बनाना हो तो रस स्वरुप परमात्मा से आत्मीय सम्बन्ध स्वीकार करो | वे स्वयं रस के अथाह सागर हैं |

(प्रवचन43, page -7, cassette no.21A)

प्रभु में विश्वास करना और उनका विश्वास उनसे माँगना दोनों ही समान फलदायक होते हैं | साधक पथ के हारे हुए साधकों के लिए यह संजीवनी है, पुनर्जीवन देनेवाला तत्व है | (प्रवचन43, page -10, cassette no.21A)

शांति-संपादन, साधक की सब प्रकार की शक्तियों के विकास के लिए अनिवार्य बात है |

(प्रवचन43, page -11, cassette no.21A)

44)जो चाहती हूँ सो होता नहीं है, जो होता है वह भाता नहीं है, जो भाता है सो रहता नहीं है, यह भी कोई जिन्दगी है ? स्वामीजी महाराज ने एक ही वाक्य में उत्तर दे दिया | जब तुम्हारा ही अनुभव है कि जो चाहती हो सो नहीं होता है, तो चाह छोड़ क्यों नहीं देती ? (प्रवचन44, page -17, cassette no.21B)

अपने दोषों को मिटाने में अपना बल काम नहीं करता है तो असमर्थता की वेदना से अहम् का अभिमान गलता है | अहम् शुन्य होते ही अपने में विद्यमान सत्य अभिव्यक्त होता है | (प्रवचन44, page -27, cassette no.21B)

45)जिन प्राकृतिक तथ्यों की सहायता से शरीर बनता है, उन्हीं प्राकृतिक सीमाओं के भीतर यह शरीर रह सकता है |

(प्रवचन45, page -28, cassette no.22A)

देखो भाई, हम कैसे हैं, यह परमात्मा देखता नहीं है | हम कैसे हैं, यह वह क्या देखे | हम जैसे हैं वैसे हैं | एक बात उन्हें मालूम है पक्की तौर से कि उन्होंने अपने में से ही हमारा निर्माण किया है | (प्रवचन45, page -37, cassette no.22A)

"देखो तो, इनका प्रेमी स्वभाव तो देखो | मानव हृदय के प्रेम का आदर करने के लिये वह अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक, पूर्ण ब्रह्म परमात्मा, ब्रह्म भाव का त्याग करके जीव भाव स्वीकार करके तुम्हारे पास आता है और उसको प्रेम प्रदान करने के लिए तुम अपनी तुच्छ कामनाओं का त्याग नहीं कर सकते ?" (प्रवचन45, page -39, cassette no.22A)

46)प्रभुविश्वासी साधक जो होता हैं, उनका कोई अपना संकल्प नहीं रहता | उनके लिए प्रभु की प्रसन्नता ही अपनी प्रसन्नता है | जैसे चाहें, जिसमें उनको प्रसन्नता हो, सो करें | (प्रवचन46, page -41, cassette no.22B)

प्रेम तत्व का हिसाब ऐसा है कि एक ओर एक मिलकर दो नहीं होते | एक और एक मिलकर एक ही रहता है, शुद्ध अद्वैत तो प्रेम तत्व में ही सिद्ध होता है | क्योंकि प्रेमी और प्रेमास्पद दो नहीं रहते हैं | (प्रवचन46, page -46, cassette no.22B)

47) सत्संग का बड़ा भारी महत्व है | यह मानव जीवन का सबसे ऊँचा पुरुषार्थ है | इसलिये कि इस जीवन की समस्यायें सत्संग के द्वारा ही हल होती हैं, और किसी उपाय से नहीं | (प्रवचन47, page -48, cassette no.23A)

प्रसंग

एक कथा पढाई जाती थी दिग्विजयी सम्राट सिकन्दर की | जब उसका शरीर शान्त होने को आया तो उसने अपने मंत्री-मण्डल को बुलाया, परिवार के प्रिय कुटुम्बीजनों को बुलाया और उनसे कहा, कि जब मेरी लाश को तुम लोग अंत्येष्टि के लिये ले जाओ तो ये दोनों हाथ ऐसे खुले हुए, कफ़न से बाहर निकाल देना, इनको मत ढकना | सिकन्दर ने ऐसा कहा तो मंत्री लोग परेशान होने लगे | कहने लगे कि जहाँपनाह ! यह ऐसी आज्ञा आप क्यों दे रहे हैं ? इसका क्या अर्थ होता है ? तो उस महापुरुष ने अपने ह्रदय की भावना प्रकट की और कहा कि देखो, मै मरने के बाद भी अपनी प्रजा की यह सेवा करना चाहता हूँ | इस घटना से अपनी प्रजा को यह बता देना चाहता हूँ कि तुम्हारा विश्वविजयी सम्राट सिकन्दर जैसे खाली हाथ दुनिया में आया था, वैसे ही खाली हाथ यहाँ से जा रहा है | यह शिक्षा मैं अपनी प्रजा को देना चाहता हूँ | इसलिये मेरे इस आदेश का पालन होना चाहिये | (प्रवचन47, page -59, cassette no.23A)

बड़ा अनमोल अवसर है, बड़ा अनमोल जीवन है | जो कभी नहीं हो सकता, जो ह्रदय के रस का स्तोत्र सुखा देता है, जो विवेक पर पर्दा डाल देता है, जो साधारण मानवता के व्यवहार से भी नीचे गिरा देता है, ऐसे कामनाओं के फेर में पड़े रहकर एक भी क्षण अपना बर्बाद न किया जाये | (प्रवचन47, page -60, cassette no.23A)

48) जो कुछ अपने को मिला हुआ-सा प्रतीत होता है उसका सदुपयोग करना, सेवा में लगाना तथा व्यक्तिगत रुचि-पूर्ति को जीवन में स्थान न देना – यह कदम है जो हर भाई-बहन आरम्भ कर सकते हैं | आज हम अप्राप्त की कामना और प्राप्त के दुरुपयोग में बँधे हैं | जीवन-मुक्ति का आनन्द जिसको चाहिये, उसको इन दोनों ही भूलों को मिटा देना पड़ेगा |

(प्रवचन48, page -66, cassette no.23B)

प्रसंग

सड़क से जा रहे है सन्त | सहजोबाई को देखकर यह गाते हुए निकल गये- **"क्षणिक सुहाग के कारने कहा सजावति माँग"** – सहजोबाई ने सुन लिया | सुनकर उनके ध्यान में आ गया कि बात तो सच्ची है | एक आदमी की लगन में क्षणिक सुहाग के लिये जिन्दगी कौन लगाये | बस शाम हुई और बारात आने से पहले सहजोबाई गायब हो गई | मिली ही नहीं फिर | वे बड़ी उच्चकोटि की वीतराग और ज्ञानवती महिला, प्रभु प्रेम की प्रतीक बन गई | (प्रवचन48, page -66, cassette no.23B)

49) जो भक्तजन होते हैं, वे आँखें खोलते हैं तो कहते हैं – 'जित देखूं तित तू ही तू' | वे आँखें बंद करते है तो भीतर भी वही है, और बाहर देखते है तो बाहर भी वही है – जित देखूं तित श्याममयी हैं | हममें क्या कमी हो गयी कि हम नाम लेते हैं भगवान का, और आँख खोलते है तो संसार देखते हैं, और बन्द करते हैं तो घोर अन्धकार ?

(प्रवचन49, page -75, cassette no.24A)

We do not see things as they are, we see things as we are. (प्रवचन49, page -76, cassette no.24A)

कबीरजी से सलाह पूछो कि संतजी, बताइये कि संसार कैसा है ? तो कहते हैं-
**'हाड़ जले जैसे लकड़ी, केस जले जैसे घास, सब जग जलता देखकर, कबिरा भया उदास |'**

(प्रवचन49, page -76, cassette no.24A)

मनुष्य अपना सही मूल्यांकन करके संसार में रहे और ज्ञान के प्रकाश में अविनाशी जीवन से अभिन्न होना अपना लक्ष्य बनावे या ह्रदय में ईश्वरीय प्रेम भरके उस प्रेमस्वरुप परमात्मा को रस प्रदान करने की-अपनी उस महिमा को याद रखे, तो सचमुच संसार की कोई वस्तु उसको आकर्षित नहीं कर सकेगी | (प्रवचन49, page -78, cassette no.24A)

50) मनुष्य में यह सामर्थ्य है कि वह देखे हुए संसारको इन्कार कर देता है कि नहीं.....नहीं..., मुझे नहीं चाहिये; और बिना देखे, बिना जाने, परमात्मा पर, बिना किसी शर्त के अपने को समर्पित कर देता है | बड़ी बहादुरी की बात है | सहज नहीं है | लेकिन है | (प्रवचन50, page -85, cassette no.24)

इस दृश्य जगत में कुछ भी रहनेवाला नहीं है | इसलिये वस्तु, व्यक्ति जो भी तुम्हारे सामने आये; आदरपूर्वक, स्वागतपूर्वक वस्तुओं का सदुपयोग करो व्यक्तियों की सेवा में | (प्रवचन50, page -93, cassette no.24B)

51) सुख भोग का विधान ऐसा है कि जो किसी प्रकार का सुख लेना पसंद करेगा उसको दुःख में फँसना पड़ेगा |

(प्रवचन51, page -97, cassette no.25A)

सुख भोग की वासनाओं से भरी हुई दृष्टि थी तो संसार बड़ा आकर्षक दिख रहा था | इस वासना के त्याग के बाद अब विवेक की दृष्टि है तो सारा संसार काल की अग्नि में जलता हुआ दिखने लगता है |

(प्रवचन51, page -98, cassette no.25A)

संत कबीर आनन्द में मस्त होकर कहते हैं, **"मन ऐसा निर्मल भया जैसा गंगा नीर, पीछे-पीछे हरि फिरे, कहत कबीर-कबीर |"** परमात्मा उस प्रेमी के पीछे-पीछे फिर रहे हैं | क्योंकि उसने सुख का भोग और सुखभोग के त्याग का आनन्द-सब परम प्रेम के लिये न्यौछावर कर दिया | (प्रवचन51, page -104, cassette no.25A)

वह दर्शन दे कि न दे, यह तो उनकी मर्जी पर छोड़ दो | वह भक्त क्या जो भगवान को बाध्य करे कि तुमको दर्शन देने के लिये आना पड़ेगा ? उसका नाम प्रेमी नहीं है जो अपना संकल्प अपने प्रेमास्पद पर लादे |

(प्रवचन51, page -106, cassette no.25A)

52) प्रसंग

आकर्षण के आधार पर अगर तुम किसी प्रवृत्ति में प्रवृत्त हो जाओ, तो वह क्या सदा के लिये संतोष देने वाली होगी ? नहीं होगी | स्वामी रामतीर्थ के जीवन की एक सच्ची घटना है | उनको बहुत ही सुगन्धित पके हुए लाल सेब खाने का बड़ा शौक था | जब अपनी भूल मिटाने का प्रश्न उनके सामने आया, जब नाशवान द्रश्य से सम्बन्ध तोड़ने का प्रश्न आया तो वे बाजार से बहुत अच्छे-अच्छे सेब पसन्द कर खरीद लाते और अपने कमरे में study table पर रख देते और उनको देखते रहते | दो दिन बीते, चार दिन बीते, दस दिन बीते ! फिर क्या हुआ ? उनका लाल-लाल रंग उड़ गया | छिलका धीरे-धीरे सिकुड़ गया | गुद्दी सूख गयी, सड़ गयी, उसमें से दुर्गन्ध आने लगी | सत्य के स्वरूप का दर्शन करके, सेबों को उठाकर फेंक दिया | (प्रवचन52, page -111, cassette no.25B)

सुखद घड़ियों में, भोग प्रवृत्तियों में प्रवृत्त होते रहने पर भी, अनेक प्रकार के सुखद साथियों के बीच में रहने पर भी मनुष्य का अपना जो अनुभव है वह यह है कि संसार के सम्पर्क से मिलने वाला ऊँचे से ऊँचा सुख आदमी को भीतर से संतुष्ट नहीं कर पाता | (प्रवचन52, page -113, cassette no.25B)

क्षण भर के सुखद आभास के लालच में अनन्त आनन्द पर परदा डालकर हम बैठ जाते हैं | इस भूल को मिटा दीजिये | अपने द्वारा अपने को सुख भोग का लालची स्वीकार ही मत कीजिये | (प्रवचन52, page -116, cassette no.25B)

प्रसंग

एक बार एक साधक स्वामीजी महाराज को मिले | उनके दोनों हाथ, दोनों पाँव कटे हुए थे | बड़ी प्रसन्न मुद्रा थी | स्वामीजी महाराज उन दिनों में अकेले चम्बल नदी के किनारे पहाड़ की गुफा में रहा करते थे | कुछ लोग उन साधक को पीठ पर लाद करके गुफा पर ले गये | पत्थरों का बना पहाड़ वह नहीं है | इटावा जिले में चम्बल नदी के किनारे मिट्टी का पहाड़ है | वहाँ सीढ़ियाँ भी नहीं बन सकतीं | मिट्टी काट कर लोग कुछ सहारा ले लेते हैं | रोज बनती रहती हैं, टूटती रहती हैं, ऊपर चढ़ना बड़ा मुश्किल है | लेकिन कुछ लोग ले गये उनको पीठ पर लाद करके स्वामीजी महाराज के पास | वे बड़ी प्रसन्न मुद्रा में थे | ले जाकर के वहाँ बिठा दिया, उनके पास | महाराजजी से बातचीत होने लगी | बड़े आनन्दित थे वह सज्जन | दोनों हाथ, दोनों पाँव कटे हुए थे | संग में कोई साथी नहीं और पैसा पास रखने का तो कोई प्रश्न ही नहीं | हाथ ही नहीं तो रखेंगे कैसे ? कुछ नहीं था उनके पास | बड़े आनन्द में मस्त थे | स्वामीजी महाराज ने पूछा कि भैया, तुम आये कैसे ? तो हँस के कहते हैं कि आपके पास पहुँच गया | जैसे लोगों ने वहाँ से उठाकर यहाँ पहुंचा दिया, ऐसे ही लोग उठाकर एक जगह से दूसरी जगह रख देते हैं | ऐसा क्यों करते हो ? यात्रा क्यों कर रहे हो ? तो कहने लगे, मेरे गुरु महाराज ने कहा था, चारों धाम घूम आना | और सब यात्रा हो गई, बद्रिकाश्रम बाकी है | मैं ट्रेन से जा रहा था | आपके भक्त लोगों ने कहा मुझसे, कि चलो एक भगवत अनुरागी सन्त से मिला दें | महाराज आपका दर्शन करने आ गया | खूब आनन्द में आनन्दित थे | कोई दुःख नहीं, अभाव नहीं, पराधीनता नहीं, शारीरिक असमर्थता का कोई प्रभाव नहीं, ऐसा होता है, हो सकता है | (प्रवचन52, page -117, cassette no.25B)

53) जब तुम्हारे भीतर कोई इच्छा पैदा नहीं हुई थी, तो स्वभाव से तुम्हारे अन्दर शान्ति थी | संकल्प के उठने से, इच्छाओं के पैदा होने से तुम्हारी वह स्वाभाविक शान्ति बिखर गई, मस्तिष्कका संतुलन बिगड़ गया | एक तनाव पैदा हो गया | इच्छा की पूर्ति से तनाव थोड़ी देर के लिए ढीला हो गया | (प्रवचन53, page -122, cassette no.26A)

जीवन में प्रधानता किस बात की है ? प्रधानता वस्तु की नहीं है, प्रधानता इस बात की है कि तुमको आराम कितना है | प्रधानता सम्पत्ति की नहीं है, प्रधानता इस बात की है कि तुमको शान्ति कितनी है | प्रधानता बड़े भारी पद की और बड़े भारी सम्मानकी और बड़े अच्छे कुटुम्ब की नहीं है, प्रधानता इस बातकी है कि तुम्हारे चित्तमें प्रसन्नता कितनी रहती है ?
(प्रवचन53, page -125, cassette no.26A)

अकेले-अकेले बैठ करके विचार करते जाओ, जीवन के प्रति द्रष्टिकोण बदलते जाओ, जीवन के सत्य को स्वीकार करते जाओ | तुम्हारे ही भीतर से राग मिट जायेगा, क्षोभ मिट जायेगा, कामना मिट जायेगी, अभिमान मिट जायेगा, दीनता मिट जायेगी | भीतर तो शांति विद्यमान ही है | खोजने कहीं बाहर जाना ही नहीं है |
(प्रवचन53, page -131, cassette no.26A)

54) विवेक के प्रकाश में जीवन के प्रति अपने द्रष्टिकोण को बदल डालो और यह निश्चय करो कि काम किया जाता है विश्राम के लिए और विश्राम होता है अपने लिए | काम किया जाता है सुंदर समाज के निर्माण के लिए और विश्राम लिया जाता है अपनी शान्ति, मुक्ति, भक्ति के लिए | (प्रवचन54, page -132, cassette no.26B)

जो भी तुमको क्रियाशक्ति मिली है उस सारी शक्ति को ऐसे काम में मत लगा दो कि काम करते करते फिर काम करने की उत्पत्ति होती रहे | किये बिना न रहा जाये तो इस ध्येय को सामने रखकर काम करो कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ, वह सब विश्राम की प्राप्ति के लिये है | (प्रवचन54, page -135, cassette no.26B)

55) जैसे अन्य शरीरों से तुम तटस्थ रहते हो, असंग रहते हो, उसी प्रकार से एक शरीर, जिसको तुमने अब तक अपने पास समझा था, अपना माना था, उससे भी असंग रहो, तो तुम्हारी समस्या हल हो जाये |

(प्रवचन55, page -144, cassette no.27A)

परमात्मा के लिए प्रेम की वृद्धि कराने का एक बड़ा अच्छा उपाय यह है कि संसार के सभी प्राणी उसके प्यारे है, तो प्यारे की प्यारी-प्यारी सृष्टि की सेवा करो | किस उद्देश्य से ? कि सृष्टि की सेवा करोगी, प्राणियों को आराम पहुँचाओगी तो प्राणियों के जो पिता हैं, वे प्रसन्न होंगे | उनकी प्रसन्नता का एक बड़ा भारी प्रभाव मनुष्य के जीवन पर पड़ता है |

(प्रवचन55, page -152, cassette no.27A)

प्रेमास्पद है और प्रेम है ! प्रेमास्पद और प्रेम है !! बस हो गया | उसी का सब स्वरुप | उसी की विभूति ! वही रह गया और बाकी सब कुछ गलकर प्रेम की धातु में समा गया | (प्रवचन55, page -155, cassette no.27A)

56) जो ह्रदय से, परपीड़ा से पीड़ित होता है उसमें अपने व्यक्तिगत सुख भोग की वासना शेष नहीं रहती |

(प्रवचन56, page -156, cassette no.27B)

चाहे तुमने अपनी जो भी दुर्गति कर ली हो, वे परम उदार सदा ही अपनी उदारता से उनको क्षमा करने के लिए, अपनी मधुरता से शीतल करने के लिए तैयार हैं | (प्रवचन56, page -160, cassette no.27B)

जिस दिन से सुख-भोग की द्रष्टि आपने बदल डाली उसी दिन से अशुद्धि का नाश आरम्भ हो गया, जिस क्षण से दुःखियों की पीड़ा को अपने ह्रदय में धारण कर लिया उसी क्षण से सुख-भोग की वासनाओं की जड़ कट गई और जिस दिन से सारे जगत को प्यारे प्रभु का मानकर प्रभु की प्रसन्नता के लिये सेवा-कार्य किया उसी दिन से कार्यकाल में और कार्य के बाद प्यारे प्रभु कि याद निरन्तर बनी रहने लगी है | (प्रवचन56, page -164, cassette no.27B)

57) करने वाली बात क्या है भाई ? करने वाली बातों के दो भाग हैं | परिश्रम और पराश्रय के आधार पर सेवा करो | स्वाश्रय और विश्राम के आधार पर सत्संग करो | (प्रवचन57, page -171, cassette no.28A)

जो 'स्व' के द्वारा 'नहीं' को 'नहीं' करके इन्कार करने, और 'है' को 'है' मानकर स्वीकार करने का पुरुषार्थ है, उसमें पराश्रय नहीं है, पराधीनता नहीं है | (प्रवचन57, page -172, cassette no.28A)

जगत में किसी भी द्रश्यसे मेरा त्रिकाल में भी नित्य सम्बन्ध नहीं है | न पहले था, न आज है, न आगे होगा – यह विचार-पथ के साधक का जाना हुआ सत्य है | (प्रवचन57, page -176, cassette no.28A)

58) अपने को याद दिला कर बिस्तर में से उठो कि भाई, मैं मनुष्य हूँ और यही मौका है, यही अवसर है, मानव योनि ही ऐसी योनि है कि जिसमें आ करके हम जन्म मरण का बंधन काट सकते हैं, सदा-सदा के लिये परमस्वाधीन जीवन पा सकते हैं, अलख, अगोचर, परमात्मा के प्रेमी होकर उन्हें प्रेमरस प्रदान करके उनके साथ प्रेम के आदान-प्रदान का आनन्द ले सकते हैं | (प्रवचन58, page -184, cassette no.28B)

नई-नई भोग प्रवृत्ति में अपने को नहीं उलझाना चाहिये क्योंकि भूतकाल के भोगे हुए सुखों का स्टाम्प भी तो भीतर में लगा हुआ है | भोगे हुए सुखों का प्रभाव आज हम लोगों को शान्त नहीं रहने देता है, प्यारे प्रभु की याद में नहीं रहने देता है | (प्रवचन58, page -188, cassette no.28B)

59) जो सत्य है, जीवन का जो वास्तविक तत्व है वह बिना पुकारे ही साधकों की मदद कर देता है | उनमें बल आ जाता है, उनके दोष मिट जाते हैं और उनको भी आगे बढ़ने का अवसर मिल जाता है | (प्रवचन59, page -200, cassette no.29A)

60) "मूक सत्संग" – इस शब्द का अर्थ है, कुछ न करने के द्वारा सत्य के संग में होने का अनुभव करना |

(प्रवचन60, page -204, cassette no.29B)

जो 'स्व' में है वह आपका द्रश्य नहीं बनेगा और जिसको आप द्रश्य के रूप में देखते हैं, वह आपके 'स्व' में नहीं है |

(प्रवचन60, page -209, cassette no.29B)

61) जो मनुष्य सत्संग के द्वारा सत्संग के प्रकाश में साधक के ढंग की जिन्दगी नहीं बिताता है वह मनुष्य संज्ञा से हीन हो गया, वह प्राणी संज्ञा में आ गया | (प्रवचन61, page -216, cassette no.30A)

जो सुख दूसरों को दुःख देकर प्राप्त होता है वह सर्वनाश करता है | (प्रवचन61, page -218, cassette no.30A)

सबके प्रति अपनेपन का भाव – भौतिकवाद का मूल मन्त्र है | दूसरों को दुःखी देखते हुए स्वयं अकेले सुख भोगना भौतिकवाद नहीं है, भोगवाद है | दूसरोंको सुखी देखकर उसे छीन झपटकर विध्वंस कर देना, नाश कर देना–भौतिकवाद नहीं है, बदतमीजी वाद है | (प्रवचन61, page -220, cassette no.30A)

62) भूतकाल के बीते हुये दिनों की याद आई, तो यह भी व्यर्थ चिन्तन है, और भविष्य की कल्पना में आप डूबे हैं. तो यह भी व्यर्थ चिन्तन है | कल्पना तो कल्पना ही है | (प्रवचन62, page -233, cassette no.30B)

प्रसंग

बाबूजी यह आपका चित्र है ? "हाँ बेटा, यह मेरा चित्र है | तब मैं इतनी घुड़सवारी करता था, इतना दूध पीता था, इतना दंड-बैठक करता था, इतना काम कर सकता था |".....तब उन्होंने सब पुरानी कथा सुनाई | तो मेरे भीतर ही भीतर बड़ी करुणा उपजी | मैंने सोचा, देखो, वर्तमान में वह सब बातें नहीं हैं | लेकिन वर्तमान की नीरसता इनको सता रही है | शान-शौकत चली गई, रूप चला गया, नौकर-चाकर चले गये, बाहर से सुख देने वाली सब सामग्री अब खत्म हो गई है | अब वृद्धावस्था की असमर्थता को भुगत रहे हैं तो इस वर्तमान दयनीय दशा की पीड़ा को ढकने के लिये पुरानी बातों को दुहरा रहे हैं | हे प्रभु ! दया करो इस वृद्ध पुरुष पर | अभी भी इसका ध्यान आपकी ओर चला जाये तो अपना गौरव कितना बढ़ जाये | (प्रवचन62, page -235, cassette no.30B)

अगर असत्य की अस्वीकृति एवं सत्य की स्वीकृति – इस रूप में आप सत्संग नहीं करते हैं, तो शरीर को लेकर के कहीं भी चले जाइये | Challenge है कि संसार का चिन्तन छूट जाये | नहीं छूटेगा | (प्रवचन62, page -238, cassette no.30B)

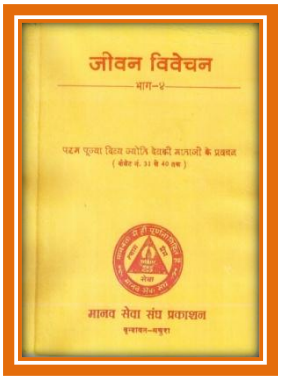


|| हरि: शरणम ||

# स्वामी शरणानन्दजी महाराज की अमरवाणी पर आधारित जीवन विवेचन के प्रवचनों तथा पुस्तकें मानवमात्र के लिए संजीवनी बूटी के समान है!

## जीवन विवेचन भाग – 4, कैसेट नं. 31 से 40 के कुछ अमृत बिन्दु —

63) हे कृपालु ! अब आप अपनी कृपा से ही अपना विश्वास मुझे दे दें | वे दे देंगे | आपको पता ही नहीं चलेगा कि कैसे-कैसे उन्होंने विवेक-विरोधी विश्वासों को तोड़ दिया | कैसे-कैसे सजाया हुआ खेल सब बिगाड़ दिया | और कैसे-कैसे उन्होंने अपना विश्वास दिलाकर, आपको निश्चिन्त और निर्भय कर दिया | (प्रवचन63, page -16, cassette no.31A)

वैधानिक प्रार्थना उसको कहते हैं कि जो अवश्य पूरी होती है | जीवन की माँग, सत्य की जिज्ञासा, प्रेम की अभिलाषा पूरी होती है | तो इनकी जो आवश्यकता अनुभव करता है, उसका नाम है वैधानिक प्रार्थना और सांसारिक बातों के लिए जो प्रार्थना की जाती है, उसका नाम है अवैधानिक प्रार्थना | अवैधानिक प्रार्थना पूरी हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है, और पूरी हो भी जाये तो फिर सब कुछ मिट सकता है | इसलिए मानव के जीवन में अवैधानिक प्रार्थना का स्थान नहीं हैं | (प्रवचन63, page -17, cassette no.31A)

64) जब तक हम लोग अपने को शारीरिक और मानसिक भूख मिटाने की सीमा में सीमित रखते हैं, तब तक क्या होता है ? कि सेवा, त्याग, प्रेम, उदारता, करुणा – जितनी अच्छी बातें है, मानव जीवन के जो ऊँचे मूल्य हैं, उन पर हमारा ध्यान नहीं जाता | (प्रवचन64, page -20, cassette no.31B)

अपने संकल्प की पूर्ति के लिए दूसरों की ख़ुशी की परवाह न करना अपने मन को खुश करने के लिए, जो नहीं करना चाहिए सो करना, सच्चाई को छोड़ देना, ईमानदारी को छोड़ देना असाधन है | (प्रवचन64, page -25, cassette no.31B)

जिन महानुभावों ने परमात्मा के प्रेम को बनाए रखने के लिए जगत का सहारा छोड़ा तो परमात्मा इतने समर्थ, इतने उदार और इतने प्रेमी स्वभाव के हैं कि उस व्यक्ति को अपने गले लगा लेते हैं और जहाँ-जहाँ उसने जो कुछ त्याग किया था, वह सारा उसका वैसे ही भरा-पूरा कर देते हैं | उससे भी अधिक कर देते हैं | उनकी उदारता की सीमा ही नहीं होती है | (प्रवचन64, page -27, cassette no.31B)

प्रसंग

मनुष्य के जीवन में सत्य का मूल्य है, परमात्मा का मूल्य है, उदारता का मूल्य है, सेवा का मूल्य है | एक परिवार में दो भाई थे | साथ-साथ कारोबार करने वाले | एक का देहांत हो गया | उसका छोटा लड़का रह गया | बच्चा छोटा ही था | चाचा ने उसको पालकर सयाना कर दिया | पढ़ा-लिखा दिया, ब्याह कर दिया | सम्पत्ति काफी थी | लेकिन चाचा ने एक मकान और दस हजार रुपये देकर उसको अलग कर दिया कि तेरा काम हो गया, अब तू अपना कमा खा | उसने कहा कि चाचा जी ! सम्पत्ति तो काफी है, हिस्सा करके मुझे दीजिए | चाचा ने कहा – हिस्सा कैसा ? तेरे को पालने में, पढ़ाने में, ब्याह करने में काफी खर्च मैंने कर दिया, अब इससे ज्यादा नहीं दूँगा | उस लड़के ने सोचा ठीक बात है, बाप की अनुपस्थिति में चाचा ने सब काम किया है | मुझे इनके प्रेम को सुरक्षित रखना है | पैसे के लिए इनसे लड़ूँगा नहीं | धन-सम्पत्ति को उसने कम महत्व दिया और प्रेम को अधिक महत्व दिया | वो ही आदमी स्वामीजी महाराज को बता रहा था खुद ही, कि महाराज जी ! बहुत

समय नहीं लगा | थोडा ही पैसा लेके मैंने कारोबार किया और दो तीन वर्षों के भीतर ठीक उतनी ही सम्पत्ति मेरे पास हो गई, जितनी मेरे हिस्से में आ सकती थी | होता है ऐसा | हम लोगों के लिए बहुत आवश्यक बात है कि ऐसी घड़ी आ जाए अपने सामने, तो ईश्वर विश्वास के लिए उत्तम घड़ी आई है – ऐसा मानकर आनन्द लेना चाहिए | सत्य का सहारा पकड़ो |

(प्रवचन64, page -30, cassette no.31B)

65) जो अपना है वह अपने को प्रिय लगेगा, जो अपने में है उससे मिलने के लिए हमें कुछ करना नहीं पड़ेगा और जो अभी मौजूद है उससे मिलने के लिए भविष्य की आशा नहीं करनी पड़ेगी | तो अपना है, अपने में है, अभी है – ये तीन बातें परमात्मा के सम्बन्ध में सर्व मान्य है | (प्रवचन65, page -35, cassette no.32A)

परम-व्याकुलता ही परम प्रेमास्पद से अभिन्न कराने में अचूक साधना है | जब और कुछ भी अच्छा नहीं लगता है – साधक का सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही मिलन की व्याकुलता में बदल जाता है तो तत्काल उसी क्षण में प्रेमी और प्रेमास्पद का मिलन होता है |

(प्रवचन65, page -42, cassette no.32A)

66) हम सभी को अपना मानें | यह जीवन का सत्य है जो भौतिक दर्शन से सिद्ध होता है | हम किसी को भी अपना न मानें यह अध्यात्म दर्शन का सत्य है | और हम प्रभु को अपना मानें, केवल प्रभु को अपना मानें, यह आस्तिक दर्शन का सत्य है |

(प्रवचन66, page -42, cassette no.32B)

अपने चित्त की शुद्धि अभीष्ट है आपको, तो सबको अपना मानो और हृदय में से बुराई का नाश कर दो | इस व्यापक साधना को अपनाए बिना कोई व्यक्तिगत जीवन को लेकर कोठरी में बन्द हो करके कुछ को अपना, कुछ को पराया मानते हुए अगर किसी मन्त्र के जाप से अपने को शान्त करना चाहे तो वैज्ञानिक सिद्धान्त के विपरीत पड़ेगा | कभी शान्ति नहीं मिलेगी |

(प्रवचन66, page -50, cassette no.32B)

67) दो बातों पर स्वामीजी महाराज विशेष रूप से हमारा ध्यान दिलाते हैं | एक यह कि सचमुच इस जगत में मेरा व्यक्तिगत कुछ नहीं है और दूसरी बात यह, की वस्तुतः मुझे अपने लिए कुछ चाहिए नहीं | (प्रवचन67, page -54, cassette no.33A)

वस्तुओं का उपार्जन करना, उनका सदुपयोग करना और उनकी सुरक्षा करना मना नहीं है | उपार्जन भी करो, वितरण भी करो, सदुपयोग भी करो, और सुरक्षित भी रखो | यह सब ठीक है | केवल अपनी व्यक्तिगत मानोगे तो फँस जाओगे |

(प्रवचन67, page -58, cassette no.33A)

अमर जीवन के अभिलाषी को जगत से कुछ नहीं चाहिये ; प्रभु-प्रेम के अभिलाषी को जड़-जगत से कुछ नहीं | जगत अगर हमको प्रभु-प्रेम दे सकता तो अब तक मिल ही गया होता | जब से जन्में हैं तब से जगत के ही संग में हैं, अगर इसने दिया होता तो अपना काम पूरा हो गया होता | (प्रवचन67, page -61, cassette no.33A)

68)सन्त के कहने से, भक्त के कहने से, तुम मान लो कि परमात्मा से ही मेरा नित्य सम्बन्ध है | वही मेरा अपना है अथवा मैं केवल उन्हीं का हूँ | अपनी ओर से मान लो | (प्रवचन68, page -65, cassette no.33B)

अपना संकल्प लेकर जाओ, अपनी कामनाएँ लेकर जाओ तो भगवान भी संसार है | और कामनाओं से रहित होकर जाओ तो संसार भी भगवान है | जो कुछ चाहता है भगवान उसके पीछे खड़े रहते हैं और जो कुछ नहीं चाहता है उसके वे सामने आ जाते हैं | (प्रवचन68, page -66, cassette no.33B)

69) योग परमात्मा की सामर्थ्य है, ज्ञान उनका स्वरुप है और प्रेम उनका स्वभाव है | तो स्वभाव, स्वरुप और सामर्थ्य – ये सब उनकी विभूतियाँ हैं और इश्वर की विभूतियाँ इश्वर के समान ही अनन्त हैं | (प्रवचन69, page -76, cassette no.34A)

मनचाही बातों के न होने पर जो शान्त रह सकता है, उसमें योगवित होने की सामर्थ्य आ जाती है | बाहर की उथल पुथल से जो व्यक्ति अपनी सहज स्थिती से डोलता नहीं, उसमें शान्त, स्थिर स्थित रह सकता है, उसमें शरीरों से तादात्म्य तोड़ने की सामर्थ्य आ सकती है | (प्रवचन69, page -82, cassette no.34A)

70) एक बार का किया हुआ सत्संग सदा के लिए हो जाता है, बार-बार सत्संग की जरुरत नहीं पड़ती | एक बार यदि सत्य का किसी रूप में हमने स्वीकार कर लिया तो वह सदा के लिए हो जाता है | (प्रवचन70, page -87, cassette no.34A)

प्रसंग

मैंने शबरीजी की कथा सुनी है, उनके गुरु मतंग ऋषि ने कह दिया था कि शबरीजी ! मेरा तो अब शरीर छोड़ने का समय आ गया है, आप इसी आश्रम में रहियेगा, भगवान यही मिलेंगे आपको | **तो बातचीत ही है न | ऐसी बातचीत कितनी बार हम लोगो ने की है |गुरु ने ऐसे कह दिया और उन्होंने पकड़ लिया,**तो सारी जिन्दगी हम लोगों की तरह appointed hour नहीं पूछा कि कौन तिथि को, कौन घड़ी में कितने बजकर कितने मिनट पर आयेंगे सो नहीं पूछा | केवल सुन लिया कि गुरु ने कहा है कि आप यही रहियेगा | इसी आश्रम में भगवान यहीं मिलेंगे आपको | तो प्रभु आ रहे है, प्रभु आ रहे है, ऐसी अखण्ड प्रतीक्षा कि सन्ध्या समय दीपक जला के कुटिया के दरवाजे पर बैठ रही है चटाई बिछा के कलशा में जल रखकर फल दोने में भर के | तो प्रभु आ रहे हैं, अब आ रहे हैं, अब आ रहे हैं करते-करते सन्ध्या का सबेरा हो जाता है उनको पता ही नहीं चलता कि कब रात बीत गई | तो उस श्रद्धा ने गुरु के वाक्य की स्वीकृति ने उनको भगवान से मिला करके ही छोड़ा |

(प्रवचन70, page -87, cassette no.34A)

खुद ही अचाह हुए बिना, जीते जी मर जाने का संकल्प लिये बिना, अपने अस्तित्व को, सीमित अस्तित्व को बनाए रखने का मोह छोड़कर अनन्त से अभिन्न होने के लिए व्याकुल हुए बिना, वह सत्य उद्घाटित होता ही नहीं है |

(प्रवचन70, page -93, cassette no.34B)

71) भूतकाल में मैंने जो कुछ भी किया होगा, जो भी उसका दुष्परिणाम बना होगा, सबके सहित उस परम-पवित्र के हवाले अपने को कर दो तो हमारे जन्म-जन्मान्तर के सब अपराधों को मिटा करके, सब अपवित्रता का नाश करके, वे परम-पवित्र बना लेंगे और फिर प्रेम के आदान-प्रदान से हमें मस्त कर देंगे | (प्रवचन71, page -115, cassette no.35A)

प्रेमियों ने प्रेम की बड़ी ऊँची कसौटी सुना दी | सन्त कबीर ने कहा, **"यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाँहि | शीश उतारै भुईं धरै, सो पैठे घर माँहि ||"** अरे बाबा ! शीश उतरने की हिम्मत न हो तो उस घर के दरवाजे पर कैसे जाएँ ? और त्याग करना और त्याग के अभिमान का भी त्याग करना – इतनी हिम्मत न हो तो कैसे उनके प्रेमी कहलाएँ ?

(प्रवचन71, page -116, cassette no.35A)

72) इस व्यक्तित्व में जो भौतिक तत्व है, उसे अपना मत मानो, अपने लिये मत मानो, उसे संसार की सेवा में लगा दो तो फिर शरीर की सुरक्षा, शरीर की जरूरतों को पूरा करने की चिन्ता – यह सब अपने को नहीं करना पड़ेगा |

(प्रवचन72, page -117, cassette no.35B)

किसी वस्तु पर जो अपना अधिकार नहीं मानता – वह अकिंचन है | अचाह कौन है ? जो किसी से कुछ नहीं चाहता | न संसार से, न संसार के मालिक से | यह नहीं कि संसार से कुछ नहीं चाहते हैं, लेकिन भगवान से चाहते हैं, सो नहीं | जो

किसी से कुछ नहीं चाहता, वह अचाह होता है | और अप्रयत्न कौन होता है ? जो प्राप्त सामर्थ्य को संसार की सेवा में लगाकर, स्वयं कर्म और कर्तापन के अभिमान – दोनों से ही मुक्त रहता है | वह अप्रयत्न होता है |

(प्रवचन72, page -118, cassette no.35B)

**"भगतबछल हरि नाम सुन, दियो कबीरा रोय | अधम उधारण नाम सुन, गयो कबीरा सोय|"** सन्त कबीर ने सुना कि प्रभु भक्तवत्सल हैं, उनको रोना आ गया | रोने लग गये कि मैं भक्त होऊँ तब तो उनकी भक्तवत्सलता मेरे काम आवे | बड़ी कठिन शर्त हो गयी | उन्होंने फिर सुना कि नहीं-नहीं भगवान केवल भक्तवत्सल नहीं हैं, भगवान अधम-उद्धारन भी है, तब कबीर तान करके सो गये | अब बात बन गई | दुसरे भक्त ने कहा, **"माला जपूँ न कर जपूँ, मुख से कहूँ न राम, हरि मेरा सुमिरन करैं, मैं पायो विश्राम |"** (प्रवचन72, page -121, cassette no.35B)

सारे संसार की सुखद संपत्ति से कहीं उपर इश्वर का विश्वास है और इश्वर-विश्वास का ऊँचा से ऊँचा फल, इश्वर के प्रति प्रेम है | (प्रवचन72, page -125, cassette no.35B)

73) संसार पर द्रष्टि जाए और किसीके लिए कोई भी सेवा करते न बने तो कम से कम इतनी सेवा अवश्य करना कि तुम्हारे भीतर से, ह्रदय से, संसार के प्रति कल्याण की भावना उपजती रहे बारम्बार | हे प्रभु ! संसार का कल्याण करो | सभी उन्नतिशील हो जाएँ ; सभी प्रसन्न रहें – ऐसी सद्भावना रखो | (प्रवचन73, page -133, cassette no.36A)

संसार का चिन्तन कब छूटता है ? जब आप उसको अपने लिए आवश्यक नहीं मानते तो छूट जाता है |

(प्रवचन73, page -139, cassette no.36A)

74) विवेक के प्रकाश में देखकर इस बात को अपने द्वारा स्वीकार करो कि इस जगत में मेरा व्यक्तिगत कुछ नहीं है | जब हम इस बात को स्वीकार कर लेंगे कि मेरा व्यक्तिगत कुछ नहीं है, तो फिर इस जगत से कुछ पाने की कामना भी खत्म हो जायेगी |

(प्रवचन74, page -141, cassette no.36B)

**"जब तेरी रहमत ने दिया, हम गुनाहगारों का साथ | चीख उठे बेगुनाह ; हम गुनाहगारों में हैं |"** तेरी रहमत, तेरी कृपा ने, जब दुर्बल, निर्बल, पतित साधकों का साथ दिया अर्थात इनका उद्धार तुमने अपनी कृपा से किया तो निर्दोष जो थे वो भी चिल्लाने लगे कि हम भी दोषी हैं, हम भी दोषी हैं | हमारा भी कल्याण करो | (प्रवचन74, page -145, cassette no.36B)

मेरे पास जो कुछ है मेरा नहीं है, उसीका दिया हुआ है – अगर ऐसा मान लिया, तो केवल इस सत्य को स्वीकार करने मात्र से चित्त में से राग मिट जाएगा | (प्रवचन74, page -149, cassette no.36B)

साधक के जीवन में राग को मिटाये बिना सत्य की अभिव्यक्ति नहीं होगी | राग की उत्पत्ति होती है, सुख के भोग से, सुख के लालच से | सुख लेना छोड़कर सेवा करना आरम्भ करो, नया राग बनेगा नहीं, पुराना राग मिट जायेगा |

(प्रवचन74, page -150, cassette no.36B)

75) आलसी नहीं रहोगे, अकर्मण्य नहीं रहोगे, विवेकी और प्रेमी बनोगे, तो व्यर्थ चिन्तन का नाश होगा | व्यर्थ चिन्तन का नाश होता है तो सार्थक चिन्तन उदित होता है | (प्रवचन75, page -153, cassette no.37B)

साधक की ओर से सबसे बड़ा पुरुषार्थ इस बात में है कि वह व्यर्थ-चिन्तन के नाश का उपाय करे | व्यर्थ-चिन्तन का नाश हो गया तो अब फिर सार्थक चिन्तनके लिए कोई नया प्रयास नहीं करना पड़ेगा, इतना स्वाभाविक है यह | अपने आप से होगा |

(प्रवचन75, page -155, cassette no.37B)

सत्य की जिज्ञासा और प्रिय मिलन की लालसा इतनी जोरदार होती है, इतनी तीव्र होती है कि प्यास लगी हो, हाथ में ठण्डा-मीठा जल गिलास में भरा हुआ पकड़ा हो आदमी ने, और जल पिया नहीं जाता है | क्या लगता है ? – कि किसी प्रकार से प्रभु मिलें पहले और जल पियें पीछे | (प्रवचन75, page -157, cassette no.37B)

76) जब मालूम हो गया कि शरीर तो नाशवान है ही, उसका तो नाश होगा ही, इसलिए जब तक यह काम के लायक है तब तक साधन-सामग्री के रुप में इससे काम ले लो | (प्रवचन76, page -166, cassette no.37A)

जीवन की घटनाओं के प्रकाश में असत के महत्व को इन्कार कर देना और सत्य के महत्व को स्वीकार कर लेना – यही तो हमारा पुरुषार्थ है | (प्रवचन76, page -168, cassette no.37A)

कुछ-न-कुछ करने की बात रहेगी, तो शरीरों से लगाव रहेगा | इधर की ओर लगाव रहेगा, तो उधर की अनुभूति नहीं होगी | इसलिए सब-कुछ करने के बाद, कुछ न करने वाली साधना हर प्रकार के साधकों के लिए अनिवार्य है | (प्रवचन76, page -172, cassette no.37A)

मरने-जीने वाले सम्बन्धियों से अपना सम्बन्ध मान लेते हैं तो उनका संयोग-वियोग तुम्हारे सिर पर चढ़ जाता है, और कभी न बिछुड़ने वाले को अपना मानोगे तो उसका अनन्त, अखण्ड आनन्द तुम्हारे पास नहीं आएगा ? अवश्य आएगा | इसलिए मीराजी ने कहा – **"ऐसे वर को क्या वरूँ रे, जो जन्मे अरु मरि जाए, वर वरिये इक साँवरियो रे, चूडलो अमर होई जाए |"**

(प्रवचन76, page -173, cassette no.37A)

77) मनुष्य को जो शरीर मिला है, जब तक वो है तब तक उसका उपयोग करना चाहिए और उसके रहते-रहते अपने अविनाशी अस्तित्व में इतना आनन्दित हो जाना चाहिए कि शरीर का कब नाश हुआ इसका अपने को पता भी न चले | (प्रवचन77, page -181, cassette no.38A)

शरीर त्रिकाल में भी तुम्हारा होकर रह नहीं सकता | भौतिक तत्वों से बना है, भौतिक विधान से बना है, उसी पर यह चल रहा है और उसी के अनुसार यह मिटेगा | इसीलिए इस शरीर के द्वारा अगर तुमको कुछ करना ही है, तो संसार के हित को द्रष्टि में रखकर करो | (प्रवचन77, page -184, cassette no.38A)

असत की निवृत्ति के बिना शान्ति मिलेगी नहीं और असत की निवृत्ति तुम्हारे जीवन में से हो जाएगी तो सत्य के रूप में वही रह जाएगा जिसको मैंने परमात्मा कहा है | (प्रवचन77, page -186, cassette no.38A)

परमात्मा ने मनुष्य की रचना ही इसलिए की कि उनको प्रेम के आदान-प्रदान के लायक दूसरा कोई प्राणी मिला नहीं संसार में | (प्रवचन77, page -189, cassette no.38B)

78) करने वाला भजन तो अखण्ड नहीं होगा, अगर साधक के जीवन में सत्संग के फलस्वरुप भजन अपने आप से होने लगे तो वह अखण्ड भजन होगा | (प्रवचन78, page -193, cassette no.38B)

आपका, मेरा जो यह अहं रुपी अणु है, यह ऐसी विचित्र चीज भगवान ने बनाई है कि इसको संसार के साथ मिला दो तो मिलकर मिटटी हो जाए, और कितने ही दिनों का किया हुआ अपराध-दोष क्यों न हो, वर्तमान में भगवान की शरणागति ले लो, तो तत्काल वे साधु के समान बना देते हैं | (प्रवचन78, page -200, cassette no.38B)

79) अनित्य जीवन में आकृति से भाव की उत्पत्ति होती है और दिव्य-जीवन में भाव से आकृति की उत्पत्ति होती है | (प्रवचन79, page -202, cassette no.39A)

वस्तुओं की नश्वरता, वस्तुओं में परिवर्तनशीलता बहुतों को, बहुत से साधकों को अनन्त की ओर आगे बढ़ा देती है ; क्योंकि इनसे हम लोगों को सन्देशा मिलता है | नाशवान की नश्वरता को देखकर के अविनाशी की ओर उन्मुख होने का सन्देशा मिलता है | (प्रवचन79, page -212, cassette no.39A)

संसार की नश्वरता भी मनुष्य को आगे बढ़ने का संदेशा देती है, और संसार की सुन्दरता भी उस परम सुन्दर की ओर हमें आकर्षित होने की प्रेरणा देती है | (प्रवचन79, page -215, cassette no.39A)

भक्त शिरोमणि तुलसीदासजी की पंक्तियाँ – "**अब लौं नसानी, अब न नसैहौं, राम-कृपा भव-निशा सिरानी, जागे पुनि न डसैहौं |**" अब हम लोग नहीं चुकेंगे | जीवन की हर घटना में अपने परम प्रेमास्पद का सन्देशा पाकर सतत जाग्रत रहेंगे, दिव्य-चिन्मय प्रेमरस पाएँगे | (प्रवचन79, page -216, cassette no.39A)

80) बुराई रहित होना – स्थूल शरीर को शुद्ध करना है, अचाह होना – सूक्ष्म शरीर को शुद्ध करना है और अप्रयत्न होना – कारण शरीर को शुद्ध करना है | (प्रवचन80, page -216, cassette no.39B)

इच्छाएँ ही व्यक्ति को चंचल बनाती है ; उसी से व्यर्थ चिन्तन उत्पन्न होता है | व्यर्थ चिन्तन का नाश करना हो तो सूक्ष्म शरीर को शुद्ध करना पड़ेगा | सूक्ष्म शरीर की शुद्धि अचाह होने से होती है | (प्रवचन80, page -217, cassette no.39B)

अपने लिए सुख लेना छोड़ दिया तो स्थूल शरीर की जरुरत ही खत्म हो गई | अपने जीवन में से कामनाओं का अन्त कर दिया तो सूक्ष्म शरीर की जरुरत पूरी हो गई और अपने द्वारा अप्रयत्न हो गए तो कारण शरीर की जरुरत खत्म हो गई | (प्रवचन80, page -221, cassette no.39B)

81) साधना का अर्थ है कि तुमको अशान्ति से शान्ति की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर, अभाव से अनुराग की ओर बढ़ने में मदद मिले | (प्रवचन81, page -230, cassette no.40A)

संसार के सम्पर्क में, सुखों के भोग में जीवनी शक्ति को गँवा देने पर क्या होता है कि शान्ति, मुक्ति और भक्ति जो अमरत्व की ओर ले जाने वाली बातें हैं जो नित्य तत्व है, जिससे अभिन्न होकर जीवन पूर्ण होता है, वह प्रोग्राम अपना शेष रह जाता है और उसके पूरा होने से पहले प्राण-शक्ति खत्म हो जाती है | (प्रवचन81, page -231, cassette no.40A)

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य क्या है ? कि शरीरों के नाश होने से पहले अपने को अमरत्व का आनन्द आ जाना चाहिए, शरीरों के नाश होने से पहले अनन्त परमात्मा के लिए प्रेम में डूब जाना चाहिए | सन्त कबीर ने कहा है – **"तन थिर, मन थिर, वचन थिर, सुरति निरति थिर होय, कहे कबीर वा क्षणक को कल्प न पावे कोय |"** (प्रवचन81, page -232, cassette no.40A)

82) जो कुछ हो रहा है, उससे परे कुछ ऐसा भी है कि जिसके प्रकट हो जाने के बाद अपने को और कुछ करना शेष नहीं रहेगा और कुछ पाना शेष नहीं रहेगा | (प्रवचन82, page -245, cassette no.40B)

असत में जीवन बुद्धि स्वीकार करो, तो दिखता है – कि सुख है, दुःख है, द्रश्य है, यह है, वो है ; और सत्संग के प्रभाव से उस भूल को अपने द्वारा अस्वीकार कर दो तो बिल्कुल ऐसे पलक मारते जीवन बदलता है कि जिसमें प्रकाश ही प्रकाश है, रस ही रस है, दुःख का नाम नहीं है, मृत्यु का स्पर्श नहीं है | वो ही तो है – 'है' कहकर जिसको सम्बोधित कर सकते हैं |

(प्रवचन82, page -250, cassette no.40B)

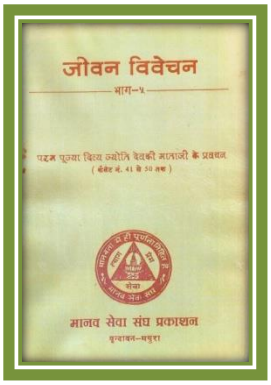


|| हरिः शरणम ||

# स्वामी शरणानन्दजी महाराज की अमरवाणी पर आधारित जीवन विवेचन के प्रवचनों तथा पुस्तकें मानवमात्र के लिए संजीवनी बूटी के समान है |

## कृपया एक बार पढ़कर देखें तो सही !

## जीवन विवेचन भाग – 5, कैसेट नं. 41 से 50 के कुछ अमृत बिन्दु —

41) जो व्यक्ति अपने से भिन्न, पराश्रय के द्वारा अपने को पूर्ण बनाना चाहेगा, वह कभी भी निश्चिन्त और निर्भय नहीं हो सकेगा | 'स्व' से भिन्न 'पर' का आश्रय लेना, इस जीवन का बहुत बड़ा अनादर है | (प्रवचन 83, page -6, cassette no.41)

जितना ही अधिक भोगे हुए सुख और अतृप्त वासनाओं का प्रभाव होता है मस्तिष्क में, उतना ही व्यक्ति अपनेको असमर्थ पाता है; अभाव और नीरसता से पीड़ित पाता है | (प्रवचन 83, page -10, cassette no.41)

कभी न मिलने वाले संसार के पीछे दौड़-दौड़ कर मृत्यु के मुख में हम लोग समाने को तैयार हैं, और कभी न साथ छोड़ने वाले नित्य साथी परमात्मा के बारे में सोचने के लिए फुर्सत ही नहीं है | अजीब बात है |
(प्रवचन 83, page -18, cassette no.41)

कामनाओं की उत्पत्ति मात्र से अशान्ति की पीड़ा होती है | कामनाओं का उत्पन्न होना, फिर उनकी पूर्ति के लिए प्रयास करना, उस प्रयास में कभी सफलता कभी विफलता ऐसा तो होता ही है | उत्पत्ति, पूर्ति, अपूर्ति – ये तीनों ही घटनाएँ मानव-जीवन में दुःख पैदा करने वाली होती हैं | (प्रवचन 84, page -20, cassette no.41)

एक क्षण की शान्ति का आनन्द इतना गहरा होता है, उसमें भौतिक और अलौकिक दोनों प्रकार की शक्तियों का ऐसा विकास होता है कि उस जैसा अलौकिक जीवन का आनन्द संसार की किसी प्रवृत्ति में कभी भी सम्भव नहीं है |
(प्रवचन 84, page -31, cassette no.41)

42) जो अपने में अभाव अनुभव करता है, जो किसी भी परिस्थिति में अपने को असमर्थ अनुभव करता है, वह एक सामर्थ्यवान और सब प्रकार से पूर्ण की कल्पना किए बिना; उसका चिन्तन किए बिना; उस धारणा को जीवन में धारण किए बिना रह ही नहीं सकता | (प्रवचन 85, page -34, cassette no.42)

मनुष्य की इतनी बहादुरी है कि वह बिल्कुल निर्द्वन्द्व होकर, निश्चिन्त होकर और बड़े अधिकार के साथ परमात्मा को अपना सगा सम्बन्धी बना लेता है | (प्रवचन 85, page -39, cassette no.42)

जिन वस्तुओं को आप लेना चाहते हैं, वे नहीं मिलती हैं तो अभाव सताता है, गरीबी मालूम होती है और जिन वस्तुओं को आप लेना चाहते हैं, प्रकृति के विधान से वे वस्तुएँ मिल जाती हैं तो मिली वस्तुओं को खो जाने का भय सताता रहता है | कभी भय में फँसे रहो, कभी चिंता में फँसे रहो, कभी अभाव में फँसे रहो, कभी नीरसता से व्याकुल रहो | यह कोई जिंदगी नहीं है | (प्रवचन 86, page -49, cassette no.42)

जो इश्वर विश्वासी हर वस्तु को अपने प्यारे प्रभु की मान लेता है, उसकी द्रष्टि जिस-जिस वस्तु पर पड़ती है ; उस-उस वस्तु के द्वारा उसे अपने प्यारे की याद आती है और याद आने मात्र से उसके ह्रदय में प्रेम उमड़ता है |

(प्रवचन 86, page -52, cassette no.42)

जिस व्यक्ति ने ममता का त्याग किया, कि सचमुच मेरा कुछ नहीं है और यह कहा कि हे मेरे प्यारे, यह सारी सृष्टि आप ही की है, ये सारी वस्तुएँ आप ही की हैं, तो बस वह ममता से मुक्त हो गया | और सृष्टि के मालिक जो हैं, वे वस्तुओं को उपयोग में लाने से कभी मना नहीं करते हैं | देने में कभी कमी नहीं करते हैं | (प्रवचन 86, page -55, cassette no.42)

43) मनुष्य सचेत होकर सोचने लग जाता है कि जिसको मैंने पसन्द किया, जिसको मैंने अपना माना, जिसके आश्रय से मैंने संसार में सुख लेना पसन्द किया, वह मेरे नियन्त्रण में रहा नहीं | मेरी इच्छा के अनुसार उसने काम किया नहीं | विवेकशील मनुष्य जो है, वह द्रश्य-जगत के पार और क्या है – यह सोचने लग जाता है ; समझने लग जाता है और वहाँ से मुक्ति की साधना आरम्भ होती है | (प्रवचन 87, page -58, cassette no.43)

शरीर की जरुरत मैं महसूस करूँ और प्राण-शक्ति खत्म हो जाए, तो इसका नाम है मृत्यु | और शरीरों के रहते-रहते, शरीरों से परे अपने अविनाशी अस्तित्व का अनुभव कर लें और शरीर की आवश्यकता खत्म हो जाए तो इसका नाम है जीवन-मुक्ति | (प्रवचन 87, page -59, cassette no.43)

आप अपने जीवन का सही मूल्यांकन करना आरम्भ कर दें तो सत्संग की योजना सफल मानी जाएगी | अपना मूल्य, संसार की दी हुई वस्तुओं के आधार पर करना, अपना मूल्य प्राकृतिक विधान से बनी हुई परिस्थितियों के आधार पर करना, मानव-जीवन का घोर अपमान है | (प्रवचन 87, page -63, cassette no.43)

मनुष्य परमात्मा के सम्बन्ध में भी सोचता है कि दिखाई दे, तो देखें वह कैसा है ? मेरे काम आने के लायक हो, तो कुछ बात-चीत की जाए, और जब-जब ईश्वरीय प्रेम की अभिव्यक्ति की बात सामने आयी, तब-तब मैंने सुना – **"यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं | सीस उतारे भूँहि धरे, सो पैठे घर माहिं |"** (प्रवचन 87, page -72, cassette no.43)

अगर बिना देखे, बिना जाने, प्रेम स्वरुप परमात्मा से (direct) सीधा विश्वास करके सम्बन्ध आप न मान सकें, तो किसी भगवद-भक्त, अनुरागी संत के कहने से मान लेना चाहिए | (प्रवचन 88, page -81, cassette no.43)

अनमोल अवसर है, हम लोग चूकें नहीं | जिन्होंने अपने प्रेम के विस्तार के लिए ही हमें रचा है, वे तत्पर हैं हमें अपनाने में | मानव ह्रदय ही तो वह माध्यम है, जिससे प्रेम-स्वरुप की मधुरता विश्व में प्रकट होती है |

(प्रवचन 88, page -83, cassette no.43)

44) जहाँ संसार से काम चल गया वहाँ उससे काम चला लिया | जहाँ इधर से काम नहीं चला तो भगवान को याद कर लिया | इस दुविधा में जीवन का बहुत बड़ा भाग निकल गया | अब इस दशा को मिटाना हैं हमें |

(प्रवचन 89, page -86, cassette no.44)

निज विवेक का अनादर करके, अपने जाने हुए असत्य के संग का त्याग करने में भी हम थोड़ी देर लगाते हैं | आज अच्छा संयोग बना है, सुखद परिस्थिति दिखाई दे रही है तो आज तो उसका सुख ले लो, फिर नश्वरता के बारे में सोच लेंगे – ऐसा करके पता नहीं कितनी अनमोल घड़ियाँ हम खो चुके हैं | (प्रवचन 89, page -87, cassette no.44)

अपनी दुर्दशा से हमें जितना दुःख है, उससे सहस्त्र गुणा, असंख्य गुणा अधिक करुणा, उस करुणा-सागर में उमड़ रही है | हाय ! मेरा बच्चा, परम प्रेम का अधिकारी, अविनाशी जीवन का अधिकारी, कहाँ भटक रहा है ? उसमें बहुत करुणा है और हमारे सुधार के लिए, उधर बहुत तत्परता है, इसलिए डरने की कोई बात नहीं है |

(प्रवचन 89, page -94, cassette no.44)

एक ओर अहं का अभिमान है और दूसरी ओर जीवन की माँग है | जहाँ अभिमान है वहाँ सीमा है और जहाँ वह सीमा टूट जाती है वहाँ वास्तविक जीवन का अनन्त आनन्द है, अनन्त रस है और वहाँ जन्म-मरण की कोई बाधा नहीं है, कोई प्रतिबन्ध नहीं है | (प्रवचन 90, page -98, cassette no.44)

'उसके' रहते हुए उसका प्रभाव अपने लोगों पर कम है, और जो कभी था नहीं, है नहीं, होगा नहीं, उस माया रचित द्रश्य जगत का प्रभाव अपने पर ज्यादा है | मरणशील शरीर का प्रभाव अपने पर चढ़ जाए और आनन्द स्वरुप, रस स्वरुप अमरत्व जो अपना जीवन है उसका प्रभाव अपने पर से घट जाए, तो यह बड़े दुःख की बात है, और इसी गलत द्रष्टिकोण को बदलने के लिए सत्संग का प्रोग्राम होता है | (प्रवचन 90, page -100, cassette no.44)

तुम विकारों का पहाड़ बना दो, तो करुणा सागर की करुणा की एक बूँद उसको समाप्त करने में समर्थ है |

(प्रवचन 90, page -107, cassette no.44)

45)प्रसंग

स्वामी जी महाराज के साथ श्री जे.कृष्णमूर्ति जी की एक बार बातचीत हो रही थी | महाराज जी ने उनसे कहा कि आप हर बात का निषेध करते जाते हैं कि यह भी नहीं, यह भी नहीं तो अन्त में क्या आप शून्य को स्वीकार करेंगे ? उन्होंने कहा की ऐसी बात नहीं है, लाइफ है | महाराज बहुत प्रसन्न हो गए | कहने लगे कि भैया ! जिसको आप लाइफ कहते हैं, उसे मैं अगर भगवान कहता हूँ तो आपको एतराज नहीं होना चाहिए | तो अन्तिम बात यह है कि जब आखिरी दिनों में जे.कृष्णमूर्ति जी की जो किताब निकली है , उसमें लिखा है उन्होंने कि प्रेम की अभिव्यक्ति ही मानव जीवन का सर्वोच्च विकास है | (प्रवचन 91, page -108, cassette no.45)

मनुष्य के व्यक्तित्व की रचना ऐसे अलौकिक और ऊँचे तत्व से हुई है कि तुम संकल्प-पूर्ति के फेर में पड़कर, कितनी भी सम्पत्ति इकट्ठी कर लो, कितना भी यश कमा लो, कितने भी मित्र बना लो, जब तक तुम्हारे ह्रदय को वह अनमोल तत्व मिलेगा नहीं, तब तक वह किसी भी प्रकार से भरपूर नहीं होगा | (प्रवचन 91, page -111, cassette no.45)

बड़ा भारी पुरुषार्थ है मानव जीवन का, कि देखे हुए संसार को इन्कार कर देना और बिना देखे हुए परमात्मा को सदा के लिए अपना मान लेना | (प्रवचन 91, page -114, cassette no.45)

सुख लेने के लिए विधान ने आपको allow किया है या नहीं, यह तो विधान जाने, लेकिन अगर आपने पसंद किया कि यह तो बड़ी बढ़िया चीज है, केवल इस पसन्दगी के आधार पर आपमें उसका राग अंकित हो जायेगा |

(प्रवचन 92, page -127, cassette no.45)

भीतर के जो विकार है, उनको नाश करने के लिए किसी क्रिया का सहारा मत लो| क्रिया का सहारा लेने का मतलब है शरीर का सहारा लेना | तुम चाहते हो परम स्वाधीन परमानन्द और उसकी साधना करते हो शरीरों के अधीन हो कर | अतः सफलता नहीं मिलती | (प्रवचन 92, page -128, cassette no.45)

जीवन में से शरीर का महत्व निकाल दो, वस्तुओं का महत्व निकाल दो अपने दोषों को मिटाने के लिए, शरीर और संसार की वस्तुओं को सेवा में सदुपयोग करने का दायित्व अपने पर आ गया है | संग्रह की हुई सम्पत्ति को निर्बलों की सेवा में लगाना जरूरी हो गया | (प्रवचन 92, page -132, cassette no.45)

जल्दी जल्दी बहती गंगा में हाथ धो कर शुद्ध हो जाओ | धन-सम्पत्ति, चीज, सामान जो परमात्मा ने पैदा की है, वह बुरी चीज नहीं है | आए तो आदर कर के ले लो | लेकिन अपने लिए रखने की मत सोचना, नहीं तो फँस जाओगे | जिसके लिए हैं, उसको देते जाओ | खुले हाथ से देते जाओ | बीमारी का इलाज हो जाएगा | (प्रवचन 92, page -132, cassette no.45)

46) सचमुच किसी का दुःख यदि आपके दिल में ऐसा भर जाय कि उसको आप अपना दुःख करके मानने लगें तो उससे करुणा का रस उपजेगा | उस करुणा में इतनी शक्ति है कि वह किसी सामर्थ्यवान को पकड़ लाएगी | इतना बड़ा रहस्य है पर-पीड़ा से पीड़ित होने का | (प्रवचन 93, page -137, cassette no.46)

जिस साधक के जीवन में करुणा का रस उद्वेलित होता है, उस साधक के व्यक्तित्व में से, जन्म जन्मान्तर से जमी हुई सुख-भोग की वासना का नाश होता है | कितना व्रत करेंगे हम लोग, कितना उपवास करेंगे, कितना इन्द्रियों का दमन करेंगे, कितना जबरदस्ती भजन-पूजन करके उसको जबरदस्ती दबाने की चेष्टा करेंगे | उससे वह काम नहीं बनता, जो काम पर-पीड़ा से पीड़ित होने के कारण, हृदय में जब करुणा उपजती है, तब हो जाता है |
(प्रवचन 93, page -139, cassette no.46)

बल का अभिमानी और धन का अभिमानी किसी को कुछ देता है, मदद करता है अभिमान के साथ, तो उसके अभिमान के कारण उसकी वस्तु को लेने में दूसरों में दीनता उत्पन्न होती हैं ; अपनापन उत्पन्न नहीं होता | स्वामी जी महाराज ने इस सेवा को बहुत बड़ी कुसेवा बताया | (प्रवचन 93, page -140, cassette no.46)

सेवा करने वाले में राग की निवृत्ति हो जाए और जिसकी सेवा की जाए, उसमें सेवा भाव जग जाए, तब तो समझना चाहिए कि मैंने ठीक सेवा की और सेव्य में यदि लालच पैदा हो गया, तो इसका मतलब है कि मैंने ठीक सेवा नहीं की |
(प्रवचन 93, page -142, cassette no.46)

किसी दुःखी की मदद करने का जी में आए, तो पहले उस वस्तु की ममता तोड़ो, जिस वस्तु से सेव्य की सेवा करनी है | उसी की मानो, चाहे परमात्मा की मानो | अपनी मानकर किसी को कुछ मत देना | न देने से उतनी हानि नहीं होगी, पर ममता की हुई वस्तु देने से दूसरे की ज्यादा हानि होगी | (प्रवचन 93, page -143, cassette no.46)

परमात्मा का उपासक जो है, उसे सत्य का उपासक होना ही पड़ेगा और किसी भी अंश में, वचन में, व्यवहार में, भाव में, चिन्तन में, कहीं भी छल प्रपंच रखते हो, छिपाव दुराव रखते हो, कहीं भी मिथ्या को आश्रय दिया है, तो भगवान की भक्ति कैसे आ जाए | (प्रवचन 94, page -156, cassette no.46)

परमात्मा का नाम लिए बिना मनुष्यता की स्थापना कर देना, किसी धर्म विशेष का नाम लिए बिना मनुष्य के जीवन में धर्म की प्रतिष्ठा कर देना मानव-सेवा-संघ की अपनी विशिष्टता है | मानव सेवा संघ के साहित्य में किसी भी मजहब का आग्रह और विरोध नहीं पाएँगे | मजहब के घेरे की सीमा को तोड़ कर के महाराज जी ने साहित्य लिखवाया | ऐसा है यह मानव-सेवा-संघ | (प्रवचन 94, page -161, cassette no.46)

47)"मैं" की उत्पत्ति अनन्त तत्व से हुई है, शरीर की उत्पत्ति भौतिक तत्व से हुई हैं तो मेरे में और शरीर में सजातीयता है ही नहीं, मूल से ही नहीं है | (प्रवचन 95, page -164, cassette no.47)

नया सुख नहीं लेंगे तो नया राग नहीं बनेगा | सुख व भोग छोड़ कर सेवा आरम्भ करेंगे तो पुराने जमे हुए राग मिट जाते हैं, धुल जाते हैं | वासनाओं से विमुख होने का यह उपाय है | (प्रवचन 95, page -166, cassette no.47)

मनुष्य के जीवन में सुख-भोग का कोई स्थान नहीं है | मनुष्य तो पैदा ही हुआ है सत्य की खोज के लिये, भगवत भक्ति के लिये, अमर जीवन पाने के लिये | मानव जीवन का अर्थ सुख का भोग नहीं है | मानव जीवन का अर्थ है सेवा-त्याग-प्रेम | (प्रवचन 95, page -167, cassette no.47)

यह अपना भ्रम ही है कि सुख के बिना हम रह ही नहीं सकते, सामान के बिना हम रह ही नहीं सकते और साथी के बिना हम रह ही नहीं सकते | यह कोरा भ्रम है | जो तुम्हारे बिना रह सकता है, उसके बिना तुम स्वेच्छा से रहना पसन्द कर लो | (प्रवचन 95, page -170, cassette no.47)

'सुख से दुःख दब जाता है सुख से दुःखों का नाश नहीं होता |' (प्रवचन 96, page -176, cassette no.47)

प्रकृति तथा परमात्मा की ओर से ऐसा इन्तजाम है इस संसार में, कि प्रत्येक परिस्थिति का व्यक्ति आयी हुई अनुकूलता से काम ले सकता है, उसको साधन सामग्री के रुप में रख सकता है और उसका सदुपयोग कर के अपने को सुख की वासनाओं से मुक्त कर सकता है | (प्रवचन 96, page -179, cassette no.47)

48) स्वामी जी महाराज ने तीन व्रतों का उल्लेख किया है | (1) सेवा करने के लिए सभी को अपना मानो ; (2) अपने सुख के लिए किसी को अपना मत मानो | और (3) प्रेमी होने के लिए केवल प्रभु को अपना मानो | (प्रवचन 97, page -187, cassette no.48)

जहाँ निर्माण और विनाश का अनवरत क्रम चल रहा है, उसमें परम शान्ति चाहने वाले को संतोष मिलेगा ही नहीं | आज तक मिला नहीं यह हमारा आपका अपना जाना हुआ तथ्य है | और कभी मिलेगा नहीं | (प्रवचन 97, page -194, cassette no.48)

यह जो जगत है, वह अपनी नश्वरता का परिचय देकर हम लोगों को सलाह देता है कि भैया ! हमारे में कुछ नहीं है, उधर ही जाओ | लेकिन वाह रे मनुष्य ! उस मंगलमय की मंगलकारिता पर दृष्टि नहीं जाती तो उसको गाली देना शुरू करते हैं | तुमने हमारा बिगाड़ दिया | और बिगाड़ा किसने ? हमने खुद ने | (प्रवचन 97, page -195, cassette no.48)

जो संसार की कामना लेकर परमात्मा के पास जाता है, उसके लिए परमात्मा भी संसार ही है | और जो निष्काम होकर संसार के पास जाता हैं उसके लिए संसार भी परमात्मा है | (प्रवचन 97, page -196, cassette no.48)

प्रसंग

परमात्मा को अपना माने – शाहबाद जिले के एक गाँव में परमात्मा के प्रेमी गृहस्थ पुजारी रहते थे | पूजा करते-करते उनकी वृद्धावस्था आ गई | मन्दिर में भगवान राम, माता जानकी जी और भैया लखन लाल की खड़ी मूर्तियों की वे बाबा पूजा किया करते थे, उन्हें वे अपना बालक मानते थे | उनकी जिन्दगी, उन मूर्तियों की पूजा में ही व्यतीत हुई | अब वे बूढ़े हो गए, कमर में दर्द रहने लगा, रीढ़ की हड्डी झुक गई | एक दिन स्वप्न में उनसे लाला ने कहा कि 'बाबा ! तेरे को सेवा करने में कष्ट होने लगा है ; अब तू पूजा छोड़ दे |' भक्त की जब प्रियता बढ़ जाती है, मेल जोल जब बढ़ जाता है तब शिष्टाचार की बातचीत खत्म हो जाती है | एकता हो जाती है | तो बूढ़ा कड़ककर बोला 'शरीर के रहते-रहते मैं तेरी सेवा कैसे छोड़ दूँगा |' तो लाला ने कहा कि 'अच्छा बाबा ! तू नहीं छोड़ेगा, तो बैठकर किया कर |' वे बोले, 'तू खड़ा रहेगा और मैं बैठ जाऊँगा, यह नहीं होगा |' अच्छी बात ! स्वप्न तो खत्म हो गया | दूसरे दिन सबेरे, जब बूढ़ा बाबा सामान

लेकर मन्दिर में पूजा करने आया तो उसके परम प्रेमी लाला, दोनों मूर्तियों सहित पालथी मारकर बैठे हुए मिले | बाबा कष्ट पाए और लाला सेवा ले, यह संभव नहीं है | (प्रवचन 97, page -199, cassette no.48)

भौतिकवाद की द्रष्टि से, शरीर संसार का है, इसलिए इसे संसार की सेवा में लगा दो तो साधन हो गया | ईश्वरवाद की द्रष्टि से यदि शरीर प्रभु का है, तो उन्हीं की पूजा के रुप में, उनकी सृष्टि की सेवा में लगा दो, तो यह साधन हो गया | (प्रवचन 98, page -203, cassette no.48)

शरीरों के माध्यम से प्राप्त की हुई उपलब्धि स्थूल, सूक्ष्म, कारण, भौतिक जगत की सीमा के भीतर ही काम आती है | उसके बाहर नहीं जाती है | (प्रवचन 98, page -206, cassette no.48)

शरीर हम लोगों का है नहीं, और अपना नहीं मानोगे तो इसके द्वारा किया हुआ कर्म, तुम्हारे लिए बन्धन भी नहीं बनेगा | शरीर संसार का है, इस सत्य को जान लो और शरीर के द्वारा जो कुछ भी करो, उसका फल संसार को दे दो | इसका परिणाम यह होगा कि कर्म-फल नहीं बनेगा | आवागमन का चक्र कट जाएगा | (प्रवचन 98, page -212, cassette no.48)

49) बड़ी भारी समस्या है | जो देखने में आता है, वह पकड़ में नहीं आता और जिसको सत्य-नित्य बताया जाता है, वह देखने में नहीं आता | तो जो देखने में आए और मिले नहीं और जो सदा-सदा से साथ है, मिला हुआ है वह दिखाई दे नहीं, तो आदमी करे क्या ? बड़ा भारी असमन्जस हो जाता है | (प्रवचन 99, page -212, cassette no.49)

संतजन कहते हैं कि जो कुछ भी चाहता है, वह प्रभु का प्रेमी नहीं हो सकता | पहले अपने को अचाह करो ; पहले संसार की वासना को छोड़ो | जब तुम्हारे जीवन में उन परम सुन्दर को, उन परम मधुर को रस देने के सिवाय और कोई भी बात नहीं रह जाएगी तो तुम्हारे उस प्रेम भरे व्यक्तित्व के प्रेमी, स्वयं भगवान हो जाएँगे | (प्रवचन 99, page -217, cassette no.49)

विवेक के प्रकाश में धर्मपरायणता को अपना लिया और अधिकार लालसा को छोड़ दिया तो इतने ही से जीवन मुक्ति मिल सकती है | (प्रवचन 100, page -224, cassette no.49)

प्रवृत्ति के बाद सहज निवृत्ति आती ही है, और सचमुच जो किये हुये कर्म के बदले में कुछ नहीं चाहता और कर्तापन का अभिमान नहीं रखता हो, ऐसा जो निस्पृह, कर्तव्य-परायण साधक है उसीमें फिर प्रभु की भक्ति की सामर्थ्य भी आती है | (प्रवचन 100, page -225, cassette no.-)

मानव मात्र का यह सत्य है कि हम रोते-रोते जन्में हैं और यदि आपने व्यक्तित्व के मोह का नाश नहीं किया, अभिमान का त्याग नहीं किया, प्राप्त सामर्थ्य से समाज की, माता-पिता की सेवा नहीं की, विवेक के प्रकाश में शरीर और संसार से असंग नहीं हुए ; ह्रदय की भावना के आधार पर प्रभु के प्रेमी नहीं हुए ; तो मरने के समय रोना पड़ेगा | (प्रवचन 101, page -232, cassette no.-)

मूल रुप से देखो, तो विदित होगा कि मानव मात्र की समस्या एक ही है और उसका समाधान भी एक ही है कि ममता और कामना छोड़ दोगे तो शान्ति अवश्य मिल जाएगी | इस मौलिक सत्य को स्वीकार करो | (प्रवचन 101, page -233, cassette no.-)

यदि आपने प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ लिया तो आप ही का दिया हुआ प्रेम उस प्रेमास्पद की ओर से अनन्त गुणा अधिक होकर, आपके रोम रोम को शान्त, स्निग्ध और सरस बना देगा | जब यह हो जाएगा, तब उसके बाद सारी सृष्टि में आपके प्रेमास्पद की मधुर लीला को छोड़ कर और कुछ नहीं रहता है | (प्रवचन 101, page -234, cassette no.-)

50) संसार से हमारा नित्य सम्बन्ध नहीं है | फिर भी हम संसार से ही सम्बन्ध मानते है | और उसको ही सत्य भी मानते है | हमारा ऐसा मानना भूल है | संसार के माने हुए सम्बन्ध को सत्य नहीं मानना चाहिए | इसमें विश्वास नहीं करना चाहिए और उसका सहारा भी नहीं लेना चाहिए | (प्रवचन 102, page -236, cassette no.50)

दिखाई देने वाले संसार से अपने माने हुए सम्बन्ध को हटाकर उसकी सेवा करें और बिना देखे, बिना जाने परमात्मा से अपने आत्मीय सम्बन्ध को स्वीकार करके उनके आश्रित होकर रहें – इसीका नाम सत्संग है |

(प्रवचन 102, page -239, cassette no.50)

सदा सदा के लिए निश्चिन्त और निर्भय होना चाहते हो तो एक बार अपने सहित अपने पास जो कुछ तुमको दिखाई देता है, सब उनके समर्पित करके शरणागत हो जाओ | प्रभु के आश्रित हो जाओ, फिर तुमको कुछ करना नहीं पड़ेगा |

(प्रवचन 102, page -240, cassette no.50)

प्रसंग

एक सज्जन स्वामी जी महाराज के पास आये और कहने लगे कि बाबा जी ! आपकी बातें तो बहुत अच्छी लगती है कुछ हमें भी बताइए | स्वामी जी ने कहा कि मैं क्या बताऊँ भाई ! तुम तो मास्टर डिग्री वाले हो | बीस वर्ष मुझको पढाओगे | मैं क्या बताऊँ तुमको | वे बोले कि बाबा जी ! आपकी बातें बहुत अच्छी है | मुझको कुछ तो बताइये | स्वामी जी ने पूछा कि भैया ! तुम एक बात पहले मुझे बताओ कि तुमको कुछ अच्छी बातें मालूम हैं कि नहीं ? उसने कहा मालूम तो है स्वामी ! मैं कुछ कुछ अच्छी बातें तो जानता हूँ | महाराज जी ने पूछा कि जो अच्छी बातें जानते हो उनको तुमने मान लिया क्या ? पढ़ा लिखा शिक्षित व्यक्ति था ; सच्चा आदमी था | उसने कहा नहीं महाराज ! माना तो नहीं | महाराज जी ने कहा कि यार ! मैं अपनी अच्छी बात क्यों सुनाऊँ ? जब तुम अच्छी बात जानते हो पर उसको ही नहीं मानते हो तो मैं अपनी अच्छी बात का निरादर तुम्हारे द्वारा क्यों करवाऊँ ? मैं नहीं बताऊँगा | यह विनोद का विनोद है और बड़ा ठोस सत्य है | (प्रवचन 103, page -249, cassette no.50)

समाज के साथ सम्पर्क पड़े तो जहाँ तक हो सके वहाँ तक हृदय की मधुरता और प्रियता को, सदव्यवहार को, मीठे वचनों को बढ़ाते रहिए, बढ़ाते रहिए | हृदय शीलता की वृद्धि से विश्वास पन्थ में प्रभु विश्वास तथा समर्पण भाव में बड़ी सजीवता आती है और इसीसे साधक के जीवन में सफलता मिलती है, बहुत ही सही बात है |

(प्रवचन 103, page -255, cassette no.50)

swamisharnanandji.org shrisharnanandji.blogspot.com
facebook.com/swamisharnanandji

स्वामी जी महाराज के अतिगहन दार्शनिक रहस्यों की सरल व्याख्या देवकी माँ ने की है | जीवन की गुत्थियों को सुलझाने में बड़ी मदद मिलती है | देवकी माँ ने साधक होकर साधना-पथ की विविध कठिनाइयों से गुजरने का अनुभव किया है, जिनकी व्याख्या वे बड़े ही स्पष्ट शब्दों में करती हैं जो साधकों के लिए बड़े ही हृदयग्राही है | मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों के द्वारा व्यक्तित्व के *Complexes* (जटिलता) को समझने तथा दूर करने के लिए साधकों को अपने में अन्तर्दृष्टि अर्थात् *Insight into Self* प्राप्त होती है, प्रगतिशील साधक बहुत ही लाभान्वित होते हैं तथा अपनी आँखों देखने व अपने पैरों चलने में समर्थ हो जाते हैं | ये प्रवचन साधक-समाज के पथ-प्रदीप हैं, जिनसे सभी का जीवन प्रकाशमय हो सकता है | संघ की पुस्तकों में देवकी जी द्वारा लिखी रसमय प्रस्तावना पढने से पुस्तक के विषय में प्रवेश करना सुगम हो जाता है ऐसा साधकों का अनुभव है |

क्रान्तिकारी साहित्य तथा सन्तवाणी cassettes उपलब्ध कराके देवकीजी ने मानव जाति का उपकार किया है

|| हरि: शरणम ||

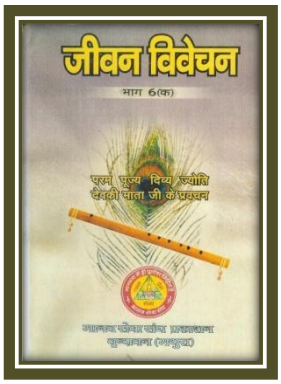


# स्वामी शरणानन्दजी महाराज की अमरवाणी पर आधारित जीवन विवेचन के प्रवचनों तथा पुस्तकें मानवमात्र के लिए संजीवनी बूटी के समान है |

## कृपया एक बार पढ़कर देखें तो सही !

## जीवन विवेचन भाग – 6A, कैसेट नं. 51 से 55 के कुछ अमृत बिन्दु —

51) बड़ी भारी भूल हो जाती है मनुष्य से कि वह सारी शक्ति, सब समय रुचि-पूर्ति पर लगा देता है | शरीर को सब प्रकार से सुख आराम देने के लायक स्थिती बन जाए, इसी पर आदमी का ध्यान चला जाता है | यह ऐसा जाल है कि जितना जितना इस दिशा में प्रयास करते चले जाओ नित नयी समस्याएँ उठती जाती हैं, उठती जाती है | सारी जिंदगी खप जाती है |

(प्रवचन 1, page -8, cassette no. 51*)

रुचि उसको कहते हैं, जो सदैव पराश्रित और पराधीन बना दे और माँग उसको कहते हैं कि जिसकी पूर्ति में व्यक्ति परम स्वाधीन हो जाए, दुःख से मुक्त हो जाए, जन्म-मरण के बन्धन से छूट जाए, परम प्रेम से भरपूर हो जाए | जो सदा-सदा के लिए रहने वाले तत्व हैं, उनकी माँग होती है और जो बनने बिगड़ने वाला जगत है उसके प्रति रुचि होती है |

(प्रवचन 1, page -10, cassette no. 51*)

प्रसंग

एक युवावस्था के संन्यासी आये मिलने के लिए | कहने लगे कि मैं तीन वर्ष तक उत्तराखण्ड में बद्रीनारायणजी के रास्ते में कहीं पर ऐसा एक अनुष्ठान करके आया हूँ | इस वर्ष यह अनुष्ठान पूरा हो गया तो मैं यहाँ आ गया | अब मुझे वैसा ही एक अनुष्ठान दूसरे तीर्थ जाकर करना है | तीन वर्ष का वैसा ही एक अनुष्ठान मैं और करना चाहता हूँ | यह साधक एक संकल्प तीन वर्ष का पूरा करके आया और उससे इसके भीतर अपने आप में सन्तुष्ट होने वाली बात नहीं आयी | अगर आ गयी होती तो फिर नये अनुष्ठान का संकल्प नहीं उठता | यह समझदार व्यक्ति क्यों नहीं सोचते हैं कि एक बार इस अनुष्ठान को पूरा करने से भीतर में सत्य की अभिव्यक्ति नहीं हुई तो अनुष्ठान के संकल्प को छोड़ देना चाहिये |

(प्रवचन 1, page -12, cassette no. 51*)

सत्य की स्वीकृति में अपने सैल्फ के प्रति, अहम् के प्रति, अपने मैं के प्रति सही द्रष्टिकोण को अपनाने में और गलत द्रष्टिकोण का त्याग करने में किसी प्रकार की बाहरी तैयारी की जरुरत नहीं है | (प्रवचन 1, page -19, cassette no. 51*)

जिस भूल को मिटा सकने में आप अपने को असमर्थ पाते है, उसको न मिटा सकने की पीड़ा हो जाए, उसके लिए ह्रदय में अगर गहरी व्यथा हो जाए, तो आपको पता ही नहीं चलेगा कि किस समय उस बुराई की जड़ कट गई और वह आप में से निकल गयी |

(प्रवचन 2, page -25, cassette no. 51*)

कोई एक है जिसने हमें बनाया | वह असमर्थों का सहारा है | वह हमारी दुर्बलता में हमारी मदद करने वाला है | केवल इस आस्था से ही, केवल इस विश्वास से ही भीतर-बाहर बिल्कुल शांति छा जाती है | प्रवचन 2, page -31, cassette no. 51*)

जो नित्य नहीं है, जो स्व नहीं है जो पर है, जो परिश्रम और पराश्रय से मिलता है, वह नहीं चाहिये, नहीं चाहिये, नहीं चाहिये |

(प्रवचन 2, page -34, cassette no. 51*)

52) बुराई को रोकने की चेष्टा करो, लेकिन बुराई करने वालों को बुरा समझना दिल में, बुराई को रोकने में कुछ सक्रीय भाग न लेना और उस पर पूरा विचार न करना, और थोड़ी सी बात से किसी में बुराई का ख्याल बना लेना और उसको दिल में बसाये रखना, यह अपना सर्वनाश है | (प्रवचन 3, page -40, cassette no. 52)

अकेले-अकेले बैठे रहो और देखते रहो, सोचते रहो | ऐसा करने से क्या हुआ ? तो जिस समय आपको पता चलेगा कि सचमुच यहाँ पर कोई चीज ऐसी नहीं है जो मेरे भीतर की माँग को पूरा कर सके, तो फिर बाहर का मूल्य घट जाएगा | (प्रवचन 3, page -47, cassette no. 52)

जीवन का सबसे बड़ा त्याग यह है कि अपने को त्याग का भास न हो कि मैंने त्याग किया है | (प्रवचन 3, page -48, cassette no.-)

जहाँ से दुःख आता है, उसको सहने की शक्ति भी वहीं से आती है | किसी प्रकार की प्रतिकूलता आ गयी तो प्रभु की कृपा मानो, उनके मंगलमय विधान का काम मानो | तो हर्ष पूर्वक उसका स्वागत करो | जिसको दुःख का हर्ष पूर्वक स्वागत करने आ गया, उसमें सुख की वासना रहेगी नहीं | (प्रवचन 3, page -49, cassette no.52)

दुःख का आना उतना खतरनाक नहीं है, जितना सुख का आना | इसलिए साधकों को आये हुए सुख के प्रति अधिक सावधान रहना चाहिए | (प्रवचन 3, page -51, cassette no. 52)

सबका भला हो, कोई दुःखी न रहे, किसी का अकल्याण न हो, सबको सद्बुद्धि मिले, सबका कल्याण हो, इस प्रकार की सद्भावना जिसके जीवन में रहती है, वह सबके प्रति सहयोग देने को भी तैयार रहता है | (प्रवचन 4, page -53, cassette no.52)

सचमुच अगर किसी भी मनुष्य के भीतर दूसरों के प्रति दुर्भावना और नुकसान पहुँचाने की बात न रहे तो समाज में से बुराई का अन्त हो जाए, खत्म ही हो जाए | क्योंकि बुरे संकल्प पहले हमारे भीतर उपजते है तब वे बाहर में जाकर के कहीं पर किसी को नुकसान पहुँचाते हैं | मनुष्य अपने धर्म से पहले च्युत हो जाता है, तब समाज में दुःख का सृजन होता है | (प्रवचन 4, page -54, cassette no.52)

जो दूसरों के प्रति नुकसान पहुँचाने के लायक व्यवहार कर देता है तो वह बल का अभिमानी अपना जितना नुकसान करता है, उतना दूसरें का नहीं कर सकता है | (प्रवचन 4, page -56, cassette no.52)

सेवा का श्रोत तो करुणा में है, जिस ह्रदय में परपीड़ा से करुणा उमड़ती है उसी के द्वारा सेवा बनती है | तो यह करुणा जो है वह प्रभु प्रेम के समान ही अलौकिक तत्व है, जिसका कि नाश नहीं होता | (प्रवचन 4, page -64, cassette no.52)

53)प्रसंग

राजकुमार सिद्धार्थ ने एक मृतक को देखा तो यह जान लिया कि जैसे एक शरीर मृत्यु का ग्रास बन गया है, वैसे सभी शरीर मृत्यु के ग्रास बनेंगे | एक ही वृद्ध शरीर को उसने देखा तो उसने अपनी युवावस्था में वृद्धावस्था का दर्शन कर लिया | एक मृतक को देखा, एक वृद्ध को देखा, एक रोगी को देखा और एक ही एक घटना का प्रभाव उस पर इतना जोरदार हुआ कि उस वीर पुरुष ने 'हे क्षणभंगुर भाव राम-राम' कहकर संसार से विदा लिया फिर उलटकर उस संसार की ओर देखा नहीं | (प्रवचन 5, page -76, cassette no.53)

यह जिसकी चीज है, उसके लिए रहने दो | तुम तो अपने पर इतना ही उपकार करो कि परे चीज को अपनी मत मान लेना | इतने ही उपकार से तुम्हारा कल्याण हो जाएगा | (प्रवचन 5, page -78, cassette no.53)

निज विवेक के प्रकाश में नाशवान को नाशवान जानकार उससे अपना सम्बन्ध तोड़ना ही पड़ेगा | उस पर से अपना अधिकार उठाना ही पड़ेगा | उसकी ममता का त्याग करना ही पड़ेगा और उसका सहारा छोड़ना ही पड़ेगा | तो जो नाशवान का सहारा छोड़ देता है, उसमें अविनाशी तत्व अभिव्यक्त हो जाता है | (प्रवचन 5, page -78, cassette no.53)

अगर तुम शरीरों से और समाज से, संसार से, सब द्रष्टियों से, अन्तः - बाह्य सब कार्यों से, सबसे सम्बन्ध तोड़कर, सबकी आसक्ति छोड़कर, सबका सहारा छोड़कर, अकेले हो जाओ तो तुमको उस सत्य का दर्शन मिले | जीवन का ऐसा ठोस सत्य है कि एक बार उसका अनुभव हो जाये तो फिर कभी भ्रम पैदा नहीं होता है |

(प्रवचन 5, page -83, cassette no.53)

उनके नित्य सम्बन्ध को ,आत्मीय सम्बन्ध को अपने द्वारा स्वीकार करना और सदा के लिए स्वीकार करना और सदा के लिए अन्य सब सम्बन्धों को उस एक सम्बन्ध में विलीन करना | यह जो मौलिक सत्य है, इसको नहीं मानने पर कोई विधि-विधान सफल नहीं होता है | (प्रवचन 6 , page -89, cassette no.53)

शरीर से सम्बन्ध रखेंगे और भगवान का भजन करना चाहेंगे, तो भजन जबरदस्ती शरीर का होने लगता है | तो जिसने शरीर को अपना माना उसके भीतर भगवत-भजन के काल में शरीर का चिन्तन जबरदस्ती घुस जाता है |

(प्रवचन 6 , page -90, cassette no.53)

माने हुए सम्बन्ध का प्रभाव अपने पर होता है | अपने विश्वास का प्रभाव अपने पर होता है | उपासना का मूल मन्त्र है प्रभु के साथ अपने नित्य सम्बन्ध को स्वीकार करना | (प्रवचन 6 , page -91, cassette no.53)

किसी पर अपने अधिकार का दोष मत लगाओ | तुम हो गये अधिकार-शून्य और यह सब कुछ हो गया तुम्हारी ओर से उनके समर्पित | तब देखो क्या आनन्द आता है ? (प्रवचन 6 , page -97, cassette no.53)

जिन्होंने परमात्मा को अपना आत्मीय करके स्वीकार कर लिया, उस आत्मीयता के रस में वे ऐसे मस्त हो जाते हैं कि वे शरीर और संसार को भूल जाते हैं | (प्रवचन 6 , page -98, cassette no.53)

54) जो आपको शरीर और संसार के साथ जुटा दे, उसको संकल्प कहते हैं | अप्राप्त वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति की आवश्यकता में संकल्पों की उत्पत्ति होती है | मैं शरीर हूँ और शरीर मेरा है, ऐसी भूल जब तक जीवन में रखते हैं तब तक संकल्पों की उत्पत्ति होती है | (प्रवचन 7 , page -101, cassette no.54)

सत्य जिनके जीवन में अभिव्यक्त हो गया ऐसे अनुभवी संत के पास बैठो तो पता नहीं कब कैसे या तो अपने भीतर अपनी असमर्थता की ग्लानि में अहम् का अभिमान गल जाता है या उनके जीवन का जो सत्य है वह अपने को प्रभावित कर देता है और उतनी देर के लिए हम उस वास्तविक जीवन का आनन्द लेते हैं | (प्रवचन 7 , page -111, cassette no.54)

जिन्होंने घर गृहस्थी बसा कर देखा है, जीवन का सार मिला उसमें ? फिर उसी के लिए अपने को अटकाना और यह कहना की भाई दुनिया के बाज़ार में चलो तो पता चले | संत कबीर को सूझा तो सबको ललकारने लगे | **"कबीरा खड़ा बजार में, लिए लकुटिया हाथ, जो घर जारै आपना सो चले हमारे साथ |"** (प्रवचन 7 , page -116, cassette no.54)

थोड़े दिनों के लिए जिन व्यक्तियों से सम्बन्ध बन गया है, पता नहीं वह कब बिछुड जाए तो इस बीच में समझदार लोग उस माने हुए सम्बन्ध को साधन-रूप बना कर जल्दी-जल्दी जो आदर, प्यार, सम्मान, सेवा देने की है वह देकर के सम्बन्ध की आसक्ति से मुक्त हो जाते हैं | (प्रवचन 8, page -119, cassette no.54)

बनने-बिगड़ने वाला संसार सत्य मालूम होता है, ठोस मालूम होता है, पकड़ में आने वाला मालूम होता है | यह वर्तमान दशा है और नित्य विद्यमान परमात्मा अत्यन्त रहस्यमय मालूम होता है, छिपा हुआ मालूम होता है, और रह रह के उसके सम्बन्ध में सन्देह भी उठता है | (प्रवचन 8, page -121, cassette no.54)

सेवा करते समय इस भाव से सेवा करो कि अनेक रूपों में मेरे प्यारे ही तो है | इसलिए उनकी सेवा में विद्यमान वर्तमान प्राप्त सामर्थ्य को लगाओ तो उसके अर्थ में इस बात का ध्यान रहे कि मेरी इस छोटी-सी सेवा के बदले में प्रभु को बड़ी से बड़ी प्रसन्नता होगी | (प्रवचन 8, page -128, cassette no.54)

जिस जगत की सेवा करो उससे भी कुछ मत माँगो और जिस प्रभु के प्रेमी बनो, उससे भी कुछ मत माँगो तो त्याग हो गया और प्रभु को अपना मानने के फलस्वरूप हृदय में जो अपनेपन का भाव उपजे, वह उनको अर्पण करते रहो तो यह प्रेम हो

गया | भजन जो है वह तो प्रभु के प्रति अगाध प्रियता का नाम है और उस प्रियता में सेवा तथा त्याग से सहयोग मिलता है |
(प्रवचन 8, page -128, cassette no.54)

भगवत-भजन जो है वह स्वधर्म है और प्रभु को अपना मानने से इसका आरम्भ होता है और प्रभु जब अपनी ओर से अपना रस साधक के जीवन में भर देते हैं तो यह भजन पूरा हो जाता है | (प्रवचन 8, page -131, cassette no.54)

55) इस दृश्य जगत में कुछ भी अपना व्यक्तिगत नहीं है | जो कुछ अपने पास मिला हुआ सा मालूम होता है वह सब किसी का दिया हुआ है, किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए मिला है, प्राप्त नहीं है | जो अपना नहीं है, उसको अपना मान लेने की भूल से बड़ी भारी पराधीनता जीवन में आ गई | (प्रवचन 9, page -132, cassette no.55)

जीवनदाता, जन्मदाता ने मानव बनाकर हम लोगों को संसार में इसीलिए रखा है कि हम ज्ञान और प्रेम जैसे अलौकिक तत्वों के विकास के द्वारा सब प्रकार से जीवन को परिपूर्ण कर लें | (प्रवचन 9, page -134, cassette no.55)

जो शान्ति मुझे पसन्द है वह अपने ही में विद्यमान है, तो जो अपने में है उससे अभिन्न होने के लिए बाहर की सब इच्छाओं को, सब कामनाओं को, सब वासनाओं को छोड़ देना चाहिए | और फिर नई वासना पैदा होगी नहीं |
(प्रवचन 9, page -141, cassette no.55)

कदम उठाना अपना पुरुषार्थ है और हमको पार लगाना प्रभु की प्रतिज्ञा है | वह करेंगे, इसलिए डरने की कोई बात नहीं है | तो जहाँ तक हो सके वस्तुओं की सुखरूपता, सुन्दरता का भास, इस भूल को विचार के आधार पर बिल्कुल निर्मूल कर देना चाहिए | (प्रवचन 9, page -142, cassette no.55)

संसार में कुशलता से रहना है तो भी और संसार के बंधन से मुक्त होकर अविनाशी जीवन से, अविनाशी परमात्मा से अभिन्न होना हो तो भी सत्संग की बड़ी भारी आवश्यकता है | (प्रवचन 10, page -148, cassette no.55)

जिस दिन जीवन आरम्भ किया था उस दिन भी समस्या थी, जिस दिन पढाई-लिखाई, नौकरी-चाकरी, शादी-ब्याह, बाल-बच्चे हो गए उस दिन भी समस्याएँ थीं और सब छूट रहे हैं तब भी समस्या हैं | सारी जिन्दगी अपने लिए समस्याएँ पैदा करते रहो और संसारसे समस्याओं का समाधान पूछते रहो और माँगते रहो और रोते रहो | यह तो मानवका जीवन नहीं है |
(प्रवचन 10, page -150, cassette no.55)

जो साधन-सामग्री मिली है भाई, उसका ठीक उपयोग करके सामग्री के खत्म होने से पहले अपना काम तो पूरा कर लो | शरीरों की आसक्ति से मुक्त हो जाओ, समाज और प्रकृति के ऋण से उऋण हो जाओ, जीवन-मुक्ति के आनन्द से भर जाओ |
(प्रवचन 10, page -151, cassette no.55)

अनुभवी संत यह कहते हैं कि शरीरों को लेकर समाज के काम आने लग जाओ तो प्रकृति, परमात्मा, समाज इतने उदार है कि जितना तुम अपनी तरफ से देना पसंद करते हो उससे कई गुना अधिक वे तुझको दे देते हैं उसी समय, तत्काल, यह तो मैंने देखा है | (प्रवचन 10, page -154, cassette no.55)

जीवन-काल में प्राप्त-सामग्री का सदुपयोग न कर लिया तो मेरे मरने के बाद कौन गारन्टी है, सदुपयोग होगा | मरने के बाद और कुपात्र के हाथ पड़ गई तो दुरूपयोग होगा की नहीं होगा | तो इसलिए प्राप्त सामग्री को सेवा के कार्य में लगाना अनिवार्य है | (प्रवचन 10, page -157, cassette no.55)

जो कुछ मेरे पास है, मेरा व्यक्तिगत कुछ नहीं | सब संसार का ही है | और संसार को देना है वापिस और इस भलाई के बदले में समाज जो मुझे अनुकूलता देगा उसका भी भोगी नहीं बनना है | और फिर कर्तापन के अभिमान से free रहना है |
(प्रवचन 10, page -157, cassette no.55)

|| हरि: शरणम ||

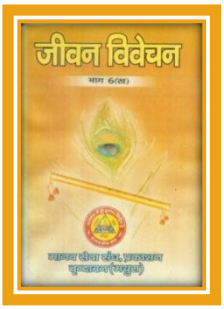


# स्वामी शरणानन्दजी महाराज की अमरवाणी पर आधारित जीवन विवेचन के प्रवचनों तथा पुस्तकें मानवमात्र के लिए संजीवनी बूटी के समान है |

कृपया एक बार पढ़कर देखें तो सही !

## जीवन विवेचन भाग – 6B, कैसेट नं. 56 से 60 के कुछ अमृत बिन्दु —

56) दोष दिखाई दें तो उनको मिटाते जाओ और गुणों का अभिमान बनाना नहीं हैं | गुण दिखाई दे तो स्वामी जी महाराज ने एक बहुत छोटा-सा मंत्र सिखाया और कहा कि देखो भई मिठास कहीं भी है, तो खांड की है ठीक है न |

(प्रवचन 11, page -7, cassette no. 56)

जो असंग होकर रहते हैं या समर्पित होकर रहते है, उनका करना होने में बदल जाता है | तो करना होने में बदले यह तो आखिरी बात हो गई | (प्रवचन 11, page -8, cassette no. 56)

कर्ता जो है वह अगर अपना काम बहुत ही निष्ठा के साथ, सावधानी के साथ पवित्र भाव से भावित होकर, प्यारे प्रभु की प्रसन्नता का लक्ष्य लेकर, राग-निवृत्ति का लक्ष लेकर कर डालता है तो उस कर्ता का काम पूरा हो जाता है | उसका राग खत्म हो जाता है | (प्रवचन 11, page -10, cassette no. 56)

प्रभु की शक्ति से प्रभु का काम हो रहा है इस बात का पूरा, पक्का, विश्वास जिसको है, उसमें कर्तापन का अभिमान नहीं आता है | (प्रवचन 11, page -8, cassette no. 56)

प्रभु की अहैतुकी कृपा से मानव-जीवन मिला और उन्हीं का दिया हुआ अवसर है कि हम सब लोगों को जीवन के सत्य को स्वीकार करने का अवसर मिला | (प्रवचन 12, page -23, cassette no. 56)

अगर साधक ने अपने अहम् को नहीं बदला, अपने लक्ष्य को नहीं बदला, जीवन के अर्थ को नहीं बदला तो किसी विधि-विधान से भगवत-भक्ति उसमे उपजेगी, यह सम्भव नहीं है | (प्रवचन 12, page -25, cassette no. 56)

इच्छाओं की अपूर्ति से मनुष्य के मस्तिष्क की ताकत जैसे घट जाती है, ऐसे ही इच्छाओं की पूर्ति होने से भी मस्तिष्क की ताकत घट जाती है | (प्रवचन 12, page -27, cassette no. 56)

पहले सत्संग करो | सत्संग के आधार पर जब असत् की स्वीकृति निकल जाएगी जब सत्य की स्वीकृति तुम्हारा जीवन बन जाएगी तब उसके बाद कोई कठिनाई नहीं होगी | (प्रवचन 12, page -36, cassette no. 56)

अपनी ओर से तुम बुराई करो मत और की हुई बुराई के परिणाम का नाश करने में अगर असमर्थ हो जाओगे तो डरने की कोई बात नहीं है | एक सामर्थ्यवान तुम्हारा रक्षक है , सहायक है और तुम उसे बुलाओ चाहे मत बुलाओ लकिन जहाँ तुम हारते हुए अनुभव करोगे, वहाँ वह आकर के तुम्हें सँभाल लेगा, और तुम्हें पार लगा देगा | यह भी बहुत बड़ी बात है | (प्रवचन 12, page -37,cassette no. 56)

57) भला काम करने से आदमी भला नहीं होता, लेकिन बुराई को छोड़ने से आदमी भला होता है|

(प्रवचन 13, page -38, cassette no. 57)

जो भी कुछ सामग्री मिली है अपनेको, सामर्थ्य मिली है अपनेको, वह अपनी नहीं है | जब तक चाहे तब तक नहीं रख सकते हैं, जैसा चाहे वैसा नहीं रख सकते | यह सब मिली हुई है, निजी नहीं है और अपने काम आने वाली नहीं है |

(प्रवचन 13, page -41, cassette no. 57)

प्राप्त बल का दुरुपयोग नहीं करेंगे, निज विवेक का अनादर नहीं करेंगे, इश्वर-विश्वास में विकल्प नहीं करेंगे | इन बातों को मान लीजिये तो अहम् की अशुद्धि का नाश हो गया | (प्रवचन 13, page -49, cassette no. 57)

शरण्य की कृपा द्रष्टि जब शरणागत पर पड़ती है और उसको वे अपनी ओर खींचने लगते हैं तो उनका आकर्षण इतना मधुर इतना जोरदार होता है कि शरणागत उससे न हटने के लिए बाध्य हो जाता है | रहा ही नहीं जाता एकदम |

(प्रवचन 13, page -53, cassette no. 57)

बुराई रहित न होने का जो कष्ट होता है उस कष्ट से बुराई रहित होने की शक्ति आ जाती है |

(प्रवचन 14, page -55, cassette no. 57)

अब मेरे किये कुछ होगा नहीं, अब तो स्वयं ही प्रभु अपनाए तो काम बने | तो इतना घना आकर्षण, इतना जोरदार आकर्षण परमात्मा की ओर से उस साधक को अपनी ओर खींचने लगता है | (प्रवचन 14, page -62, cassette no. 57)

काम छोटा बड़ा नहीं होता है साधक की द्रष्टि से | किसी भी काम को इतनी लगन से करो, इतने ज्ञानपूर्वक करो, इतने प्रेमपूर्वक करो कि करने का राग खत्म हो जाए और सत्य से अभिन्न होने की आवश्यकता तीव्र हो जाए |

(प्रवचन 14, page -67, cassette no. 57)

58) मैं और किसीका नहीं हूँ, केवल परमात्मा का हूँ | तो प्रभु की सत्ता स्वीकार करना, उनके साथ मेरा नित्य सम्बन्ध है इस बात को स्वीकार करना और उनकी प्रियता के अतिरिक्त इस जीवन का दूसरा कोई अर्थ नहीं है, इस सत्य को स्वीकार करना ईश्वरवाद कहलाता है | (प्रवचन 15, page -69, cassette no. 58A)

अपना नित्य सम्बन्ध केवल 'उसी' से है | ऐसा जिन इश्वर-विश्वासियों ने माना, उनके जीवन में इश्वर की उपस्थिति का प्रत्यक्ष अनुभव हो गया | (प्रवचन 15, page -73, cassette no. 58A)

प्रभु के नाते निकटवर्ती जन समुदाय की सेवा, एक बात हो गई | और संसार से और निकटवर्ती समुदाय से कुछ न माँगना, त्याग की बात हो गई | जिस प्रभु का प्रेम अपने को अभीष्ट है उससे भी कुछ न माँगना यह त्याग की बात हो गई और सिवाय उनके प्रेम के और कोई दूसरा अर्थ ही नहीं है उनकी प्रसन्नता के लिए उनको प्यार करना यह अन्तिम बात हो गई | (प्रवचन 15, page -77, cassette no. 58A)

वस्तु खिंचती है धरती की ओर और मनुष्य खिंचता है अनन्त की ओर | धरती में जो आकर्षण-शक्ति है उससे सब वस्तुएँ धरती की ओर खिंचती हैं और अनन्त में जो आकर्षण शक्ति है उस आकर्षण शक्ति से हम सब लोग उनकी, अनन्त की ओर खिंचते है | (प्रवचन 16, page -85, cassette no. 58A)

मंगलकारी प्रभु की मंगलकारिता पर विश्वास करो और जीवन के अविनाशी तत्व पर विश्वास करो | अपने पुरुषार्थ के बल पर जीवन पकड़ना चाहते हो और उसमें हारने से तुम निराश होते हो यह बड़ी भारी भूल है |

(प्रवचन 16, page -88, cassette no. 58A)

संत की वाणी में कितना आश्वासन है कितना बल है वे तो कह रहे हैं, तुम क्यों सोच रही हो | तुम अपनी ओर मत देखो, अपनी असमर्थता अपनी दुर्बलता को मत देखो, उस अनन्त की महिमा को देखो | तो बड़ा आनन्द आ गया |

(प्रवचन 16, page -90, cassette no. 58A)

बाहरी आधारों पर जीने की सुविधा मिल गई, शरीर की सेवा की सुविओधा मिल गई है, कुछ अच्छे वचन बोलने वाले साथी मिल गए हैं, इस अनुकूलता के आधार पर उस अनमोल तत्व से कब तक मैं वंचित रहना चाहती हूँ, यह प्रश्न हर भाई-बहन को अकेले में अपने से पूछना चाहिये तो चेतना आएगी | (प्रवचन 16, page -93, cassette no. 58A)

59) मनुष्य के जीवन में शांति, मुक्ति और भक्ति की ओर विकास का जो क्रम है, उसमें सबसे आवश्यक बात मुझे यह मालूम होती है कि हमारे जीवन में उस ओर आगे बढ़ने का उत्साह होना चाहिए और कोई योग्यता अपेक्षित नहीं है |

(प्रवचन 17, page -98, cassette no. 59)

जो मेरा होकर रह न सका उसको मेरा कहना छोड़ दो | जब-जब मृतक प्राणी की याद आती है और उसके वियोग में अपने को सब कुछ निराधार लग रहा है तो उसकी याद आने पर, उसे अपना न मानते हुए भी, उसकी कल्याण-कामना रखो, उसके लिए भगवानसे प्रार्थना करो हे प्रभु मुझे भी मोह-मुक्त कीजिए,उस दिवंगत आत्माको भी मोह-मुक्त कीजिए | इसको अपनी शांतिमय गोद में स्थान दीजिए | (प्रवचन 17, page -100, cassette no. 59)

जो सदा-सदा से अपना है, जिसने कभी मेरा साथ छोड़ा ही नहीं, उसको अपना मानो | इश्वर में विश्वास करने का प्रश्न जब सामने आए तो मत पूछो कि वह कहाँ है और कैसा है और क्या करेगा | भीतर में तर्क और बुद्धि को प्रश्रय देंगे तो कभी भी मान नहीं पाएँगे | इसलिए बुद्धि मत लगाओ | (प्रवचन 17, page -100, cassette no. 59)

कुछ भी करो मोह-जनित पीड़ा जो है, प्रिय वियोग का दुःख जो है वह परमात्मा के प्रेम रस से ही मिटता है और किसी प्रकार से मिट नहीं सकता, जीवन भर नहीं सकता | बुद्धि का जो बल है वहाँ तक पहुँचता नहीं है |

(प्रवचन 17, page -104, cassette no. 59)

प्रसंग

सबसे उच्च शिक्षा में सबसे आखिरी परीक्षा दे करके मैं विश्व विद्यालय के मुख्य द्वार से बाहर निकलने लगी तो मुझे भीतर से यह आवाज आने लगी कि 14 वर्षों का समय अध्ययन में लगा कर देह को धुन डाला मैंने | 14 वर्ष का सारा परिश्रम बेकार गया | क्यों ? क्योंकि बौद्धिक विकास से जीवन का अभाव नहीं मिटता है | पटना University से मैं बाहर निकल रही थी तो मैंने विश्व विद्यालय को प्रणाम किया और कहा कि तुम्हारा कोई दोष नहीं है | तुम तो अपनी जगह ठीक हो भई, आबाद रहो | मुझे जो चाहिए था सो नहीं मिला | बौद्धिक विकास से जीवन का अभाव नहीं मिटता है |

(प्रवचन 17, page -105, cassette no. 59)

परिस्थितियों को सत्य मत मानो | बड़ा धोखा होगा, अवसर निकल जाएगा, परिस्थितियाँ संसार की संसार में रह जाएँगी और जब सब कुछ छूटने लगेगा तो अपने को अकेला और निराधार पा करके बड़ी बुरी दशा हो जाएगी |

(प्रवचन 17, page -106, cassette no. 59)

प्रसंग

रमण महर्षि जी के जीवन की एक घटना मैंने सुनी | वह तो अहम्-शून्य अनन्त तत्व से मिले हुए महात्मा थे | बैठे रहते थे गुमसुम, चुपचाप | बोलते बहुत कम थे | एक पति-पत्नी आये, उनकी 12 वर्ष की लड़की बीमार थी, उसकी हालत बहुत

ख़राब थी | उन्होंने सन्त को प्रणाम किया और कहा कि महाराज ऐसी-ऐसी हालत है | महाराज ने सुन लिया, कोई उत्तर नहीं दिया | आस-पास में बैठे हुए सन्त के जो भक्त होते हैं वह कुछ अपने तीन-पाँच लगाते हैं | तो उनका भक्त आगे बढ़कर कहने लगा महर्षि, इन लोगों का ऐसा-ऐसा हाल है, कुछ उत्तर दीजिए | महर्षि के मस्तिष्क पर इतना जोर डाला गया, तब उनके ध्यान में आया | तब उन्होंने क्या कहा, कि महर्षि कुछ नहीं जानता है | महर्षि कुछ नहीं कर सकता है | तूने सुना दिया सुनने वाले ने सुन लिया | उसको जो करना होगा करेगा | जिन सन्तों का जीवन अहंशून्य हो जाता है उनकी शक्ति परमात्मा की शक्ति से जुट जाती है | (प्रवचन 17, page -107, cassette no. 59)

आज उपदेष्टा गुरु की आवश्यकता नहीं है संसार में | आदमी इतना निर्बल हो गया है, इतना थकित हो गया है कि आज तो वैसा गुरु चाहिए, जिसके सम्पर्क मात्र से श्रोताओं की सब निर्बलता खत्म हो जाए |

(प्रवचन 17, page -110, cassette no. 59)

प्रसंग

दक्षिण भारत में चिनम्मा करके एक बहुत ही विवेकवती महिला, जब शरीरों की असंगता में मस्त हो गई तो न घर-बाहर का ध्यान रहा, न कपड़ों का ध्यान रहा, न शरीर का ध्यान रहा, नंग धड़ंग जंगल में पड़ी रहती थी | दक्षिण के एक संत उनको मिले | तो उनसे कह दिया उन्होंने जाओ-जाओ, उत्तर भारत वर्ष के एक प्रज्ञाचक्षु संत जब तुम्हें मिलेंगे तब तुम्हारा उद्धार होगा | तो वे बेचारे प्रतीक्षा में थे | जब स्वामी जी महाराज मिले तो बड़े आनन्दित हो गए, कहने लगे कि मेरे गुरु ने आपकी शरणागति हमको दी थी | महाराज, अब हमको सँभालिए | मानव सेवा संघ का बहुत काम किया था उन्होंने हैदराबाद में | (प्रवचन 17, page -110, cassette no. 59)

अनन्त परमात्मा की आत्मीयता स्वीकार करने मात्र से अपने ही अहं रूपी अणु में से वे तत्व प्रकट होने लगते है कि जिनके आधार पर आदमी की आँखों में त्रिभुवन का वैभव धूल हो जाता है, सबका महत्व खत्म हो जाता है | अपने लिए न कोई साथी चाहिए न कोई सामान चाहिए, न आँखें खोलकर संसार को देखने की आवश्यकता होती है और न आसन मुद्रा साधने से अभ्यास की आवश्यकता होती है | (प्रवचन 17, page -111, cassette no. 59)

राग से भर के, द्वेष से भर के, और कुछ भोग की तृष्णा से भर के हम निश्चिंतता की साँस ले नहीं सके | निश्चिंतता से मर नहीं सके और जन्म-मरण के बंधन को काट नहीं सके | (प्रवचन 18, page -117, cassette no. 59)

दूसरा असाधन कर रहा है तो हम क्यों न करें, यह सयानेपन की बात नहीं है | दूसरे जो निःस्वार्थ सेवा कर रहे हैं, उनकी निःस्वार्थ सेवा से मैं उत्साह लूँ | दूसरे जो सचेत होकर भजन में, भगवत भक्ति में, शांति में, उदारता में, प्रेम में लगे हुए है तो उनको देखकर के हम इन सब बातों में आगे बढ़े, उन्नति का तो यह रास्ता है |

(प्रवचन 18, page -124, cassette no. 59)

सब साधक है, सब प्रभु के हैं, सब स्वामीजी महाराज के हैं, सबको अपना कल्याण अभीष्ट है | हे प्रभु ! सबका कल्याण करो, हे प्रभु ! सबका कल्याण करो | (प्रवचन 18, page -129, cassette no. 59)

60) घर-गृहस्थी में रहते हुए, समाज में रहते हुए, जन समाज से सम्पर्क रखते हुए यदि हम लोग आई हुई अनुकूलता को दुखी जनों की सेवा में लगा करके, अपने चित्त को शुद्ध और शांत नहीं कर लेंगे, तो योगवित होना, तत्ववित होना, भगवत-भक्त होना तीनों ही उद्देश्य हमारे अपूर्ण रह जाएँगे | (प्रवचन 19, page -133, cassette no. 60)

मनुष्य के जीवन में दो प्रकार की शक्तियाँ हैं | एक जीवनदाता, जन्मदाता का दिया हुआ प्रकाश है जो कि सब में सदा के लिए विद्यमान रहता ही है | दूसरी एक शक्ति और है मनुष्य के भीतर, जिस शक्ति का काम है कि आपको विवेक के

प्रकाश से जैसा दिखाई दे रहा है उस पर आप चल पड़े | तो दो बात हुई, एक से दिख रहा है कि यह सही रास्ता है और एक शक्ति आपको मदद दे रही है कि इस पर चल पड़ो | (प्रवचन 19, page -134, cassette no. 60)

किसीको बुरा मत समझो, किसी के साथ बुराई मत करो,किसी का बुरा मत चाहो, ऐसा अगर करोगे तो तुम्हारा चित्त शुद्ध हो जाएगा | की हुई भलाई के बदले में किसी प्रकार की आशा नहीं करोगे, सब कामनाएँ छोड़ दोगे तो चित्त शांत हो जाएगा | (प्रवचन 19, page -137, cassette no. 60)

जिसने पराश्रय और परिश्रम-जनित सुख को पसंद किया उसके ह्रदय में से यह जीवन रस-स्त्रोत सूखता है, क्षीण होता है | और यही कारण है, कि रास्ता दिखाई दे रहा है और चलने में देर लग रही है | नहीं तो देर लगने की कोई बात नहीं है | (प्रवचन 19, page -142, cassette no. 60)

शरीरों के माध्यम से संसार से सम्पर्क स्थापित करना और उसमें सुखद बातों से चिपक जाना और दुःखद बातों से भागने की चेष्टा करना, इस सीमा के भीतर रहने के लिए हम लोग नहीं बनाए गए है | (प्रवचन 20, page -143, cassette no.-)

प्रसंग

राजकुमार सिद्धार्थ ने एक मृतक शरीर को देखा तो उस महापुरुष के जीवन में सब जीवित शरीरों में मृत्यु का दर्शन हो गया | मृतक को देख करके उन्होंने मृत्यु पर विजय पाना पसंद कर लिया | रोगी को देखा, रुग्ण अवस्था की पीड़ा, वृद्धावस्था का दुःख और मृत्युकी सीमा उन्होंने स्वीकार नहीं किया | इतनी बेबसीमें जीने के लिए मनुष्य नहीं पैदा हुआ | तो बड़ी तीव्र जिज्ञासा उस वीर पुरुष के दिल में जग गई और अमर जीवन की खोज के लिए, दुःख-रहित जीवन की खोज के लिए, उन्होंने सुख-वैभव से भरे हुए राज्य को ठुकरा दिया | वह कह उठा "त्रिविध दुःख निवृत्ति हेतु बाँधू अपना पुरुषार्थ सेतु, सर्वत्र उड़े कल्याण केतु तब हो मेरा सिद्धार्थ नाम हे क्षण भंगुर भाव राम राम | हे क्षण भंगुर संसार आपको राम राम है | (प्रवचन 20, page -145, cassette no.-)

ममता-जनित उदारता पशु-पक्षियों में भी होती ही है | अगर तुमने भी अपने को इसी सीमा में रख लिया, तो मनुष्य होना सार्थक कैसे होगा भाई ? नहीं हो सकता है | इसीलिए ह्रदय की उदारता बढाओ | (प्रवचन 20, page -147, cassette no.-)

अत्यन्त प्रिय कुटुम्बी जनों को आँखों से देखते ही देखते श्मशान की ओर भेजा है | फिर भी इस पाँचभौतिक तत्वों से बने हुए शरीर में से मोह न मिटे, तो यह मनुष्यता का आदर हुआ कि अनादर हुआ ? (प्रवचन 20, page -148, cassette no.-)

अभी-अभी असत्य को अस्वीकार करो तो अभी-अभी सत्य के होने का स्पर्श भी प्राप्त हो जाता है, आनन्द भी आ जाए, प्रकाश भी हो जाए और भ्रम का निवारण भी सदा के लिए हो जाए | (प्रवचन 20, page -153, cassette no.-)

भूतकाल में मैंने क्या किया है, भूल जाओ | सब क्षमा कर दिया जाएगा | बहुत उदार विधान है | और भविष्य की कल्पनाएँ भी छोड़ दो, कल्पना की भी आवश्यकता नहीं है | बस, वर्तमान में मुझे क्या करना है दो बातों के लिए—जाने हुए असत के संग का त्याग और जीवन के सत्य की स्वीकृति | (प्रवचन 20, page -155, cassette no.-)

|| हरिः शरणम ||

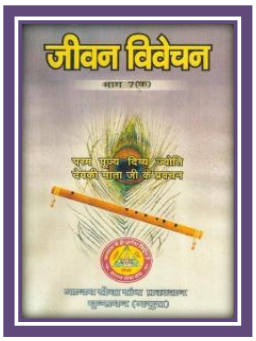


# स्वामी शरणानन्दजी महाराज की अमरवाणी पर आधारित

## जीवन विवेचन के प्रवचनों तथा पुस्तकें मानवमात्र के लिए संजीवनी बूटी के समान है |

कृपया एक बार पढ़कर देखें तो सही !

### जीवन विवेचन भाग – 7A, कैसेट नं. 61 से 65 के कुछ अमृत बिन्दु —

61) जब व्यक्ति इन्द्रियों को विषय-विमुख कर लेता है और मन को निर्विकल्प कर लेता है, अब मुझे कुछ नहीं करना है अब मुझे कुछ नहीं चाहिए, तो इन्द्रियों के विषय-विमुख करने से, मनको निर्विकल्प करने से बुद्धि का काम खत्म हो जाता है | अब उसको कुछ करने की ज़रूरत नहीं है | (प्रवचन 1, page -8, cassette no. 61)

स्थिर बुद्धि प्राप्त करने के लिए पाठशाला है एकांत और पाठ है मौन | और साधना है विषयों से विमुख हो जाना और सब संकल्पों का त्याग कर देना | सब विषय-भोगों का त्याग कर दो तो इन्द्रियाँ विषय-विमुख हो जाएँगी, सब संकल्पों का त्याग कर दो, तो मन निर्विकल्प हो जाएगा | (प्रवचन 1, page -8, cassette no. 61)

सेवा का अन्त अगर त्याग में हो जाए तो समझना चाहिए की मैंने ठीक सेवा की और सेवा के बदले में अगर अधिकार-लोलुपता जग जाए तो समझना चाहिए कि मैंने सेवा नहीं की मजदूरी की | (प्रवचन 1, page -14, cassette no. 61)

व्यक्तियों का समूह समाज है | एक-एक व्यक्ति अगर एक-एक जगह पर सही हो जाए तो उस एक व्यक्ति से वहाँ का वायुमण्डल सही हो सकता है | और एक-एक व्यक्ति अपने कर्तव्य में दृढ़ हो जाए तो कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों का समूह जो बनेगा, तो बहुत सुन्दर समाज बन सकता है | (प्रवचन 2, page -20, cassette no. 61)

62) मजहबी सीमाओं से अलग, मत-भेदों से अलग, वर्ग संप्रदाय इत्यादि की सीमाओं से मुक्त, वैचारिक रूढ़ियों से मुक्त शुद्ध सत्य ही मानव-जीवन के उद्धरा के लिए, कल्याण के लिए, समाज के सामने आ जाए इसी उद्देश्य से महाराज जी ने इस विचार-प्रणाली का गठन किया | (प्रवचन 3, page -31, cassette no. 62)

काम तो भले करो लेकिन काम किस लिए कर रहे हैं हम ? न करने के जीवन में प्रवेश करने के लिए | सेवा प्रवृत्ति में ज़रूर लग जाओ लेकिन सेवा प्रवृत्ति की सफलता कब होगी | जब जीवन में सहज निवृत्ति आ जाए |
(प्रवचन 3, page -41, cassette no. 62)

प्राप्त परिस्थिती का सदुपयोग नहीं करोगे तो परिस्थिति छिन जाएगी | प्राप्त सुविधा का सहारा लेकर के, सेवा त्याग प्रेम में आगे नहीं बढ़ोगे, तो भविष्य में यह सुविधा नहीं रहेगी | नहीं रहती है, किसी की नहीं रहती है |
(प्रवचन 4, page -47, cassette no. 62)

अल्प शक्ति है, अल्प आयु है, कहाँ तक हम लोग असावधानी में बिताएँगे, कहाँ तक हम लोग शिथिलता में बिताएँगे | कितना महँगा दिन जा रहा है, आप स्वयं अपने से विचार कर लीजिए | (प्रवचन 4, page -49, cassette no. 62)

भगवान् कोई सस्ता है की मैं लेकर आपके आगे पेश करता फिरूँ की हमारे भगवान् बड़े अच्छे हैं कि तुम मान लो, तुम मान लो, तुम मान लो हम काहे को कहें भाई | अगर तुम से न रहा जाए, तुम्हारी सौ बार गरज हो तो मानो | मानोगे तो कल्याण हो जाएगा इसमें संदेह नहीं है | (प्रवचन 4, page -51, cassette no. 62)

63) मुझे अब अविनाशी जीवन चाहिए, मुझे अब देहातीत जीवन चाहिए, मैं अब निज स्वरूप में स्थित हुए बिना रह नहीं सकता यह लगन लग जाती है तो निंद्रा, तन्द्रा, जड़ता, आलस्य सब खत्म हो जाती हैं |

(प्रवचन 5, page -53, cassette no. 63)

अभ्यास करते-करते जान बूझकर सचेत होकर करने वाली साधना में अपनी आसक्ति पैदा हो जाती है, उसको किये बिना रहा नहीं जाता है परन्तु उसके द्वारा जीवन की अभिव्यक्ति नहीं होती है | (प्रवचन 5, page -56, cassette no. 63)

अगर देहातीत जीवन की आवश्यकता आप अनुभव करते हैं तो मैं शरीर नहीं हूँ, शरीर मेरा नहीं हैं, इस सत्य को हृदयंगम करो | (प्रवचन 5, page -59, cassette no. 63)

कर्म में भाव की पवित्रता का बड़ा महत्व है | जो भी कुछ कर्म हम करने जा रहे हैं उस कर्म के फल से किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं होना चाहिए, किसी का अहिईत नहीं होना चाहिए | हम अपनी ओर से, मन से, वचन से, भाव से, कर्म से, किसी को क्षति नहीं पहुँचाएँगे इस व्रत को धारण करना भाव को पवित्र बना देता है |

(प्रवचन 6, page -66, cassette no. 63)

अपने सुख की धुन में लगा हुआ व्यक्ति दूसरों की तकलीफ का ध्यान नहीं रखता | अपने स्वार्थ से प्रेरित व्यक्ति दूसरों को क्षति पहुँचा कर, दुःख देकर भी सुख लेना पसंद करता है | जब दूसरा कोई मेरे साथ अहितकर कर्म करता है तो मुझे बुरा लगता है, तो हमको दूसरे के साथ अहितकर कर्म नहीं करना चाहिए | (प्रवचन 6, page -67, cassette no. 63)

सच्ची बात यही है कि उससे ही सदा-सदा का सम्बन्ध है, उससे भिन्न और किसी से सम्बन्ध कभी था नहीं, है नहीं, होगा नहीं और मानते है तो मानना मेरी भूल है और इसी भूल का परिणाम है की हाय-हाय करके तड़प रहे हैं |

(प्रवचन 6, page -71, cassette no. 63)

संत अमर होते हैं, उनका नाश नहीं होता, उनके सत्य का नाश नहीं होता, उनके प्रेम का नाश नहीं होता और जिस साधक को जिस समय जैसी आवश्यकता रहती है वे उसको देते है | (प्रवचन 6, page -73, cassette no. 63)

जानी हुई भूल नहीं करनी है, और की हुई भूल नहीं दोहरानी है | कुटुम्बीजनों के अधिकार की रक्षा करनी है और अपने अधिकार का त्याग करना है | (प्रवचन 7, page -74, cassette no. 63)

64) संसार में आ करके किसी पर अपना अधिकार मानना, यह जड़ है क्रोध की | जब हम दूसरों पर अपना अधिकार मानते हैं और उस अधिकार की पूर्ति नहीं होती तब क्रोध आता है | मूल बुराई है अधिकार मानना और उसे मिटाने का, उसे नापसंद करने का मूल उपाय है अपने अधिकार का त्याग करना | आप अधिकार मत मानिए, तो क्रोध की उत्पत्ति अपने आप खत्म हो जाएगी | (प्रवचन 8, page -77, cassette no. 64*)

दूसरे के अधिकार की रक्षा करने में कर्तव्य का पालन हो जाता है और अपने अधिकारों के त्याग में राग और आसक्ति खत्म हो जाती है | (प्रवचन 8, page -78, cassette no. 64*)

बल मिला है निर्बलों की सहायता के लिए, बल मिला है निर्बलों को सताने के लिए नहीं | अगर बल का सदुपयोग करोगे तो अधिक बलिष्ठ होते जाओगे और बल का दुरूपयोग करोगे तो अत्यन्त बल-हीन हो जाओगे |

(प्रवचन 8, page -80, cassette no. 64*)

अखिल लोक विश्राम, जिसमे सारा विश्व विश्राम लेता है, जिसमे सारे विश्व को आधार मिलता है, जो सभी का अपना है, सदैव अपना है, सर्वत्र विद्यमान है, उसको जीवन का आधार बना लो, उसकी दासता पसंद कर लो तो अपना कल्याण हो जाए | (प्रवचन 8, page -89, cassette no. 64*)

मैं बहुत धनी हूँ कि मैं बहुत विद्वान हूँ कि मैं बहुत तपस्वी हूँ | ऐसा अहम् मत रखो | अगर अहम् को रखना ही है, तो ऐसा अहम् रखो कि मैं भगवत समर्पित हूँ, मैं प्रभु का बालक हूँ, मैं प्रभु का मित्र हूँ, मैं प्रभु का दास हूँ | इस प्रकार का रखो कोई हर्ज नहीं होगा | (प्रवचन 8, page -93, cassette no. 64*)

65) भगवत चिन्तन होने वाली बात है | करने वाली बात यह है कि मेरी जिन-जिन भूलों से जीवन में अनेकों विकार उत्पन्न गए, उन भूलों का त्याग मैं करूँ | (प्रवचन 9, page -98, cassette no. 65)

इश्वर-विश्वासी आप है तो थोड़ी देर के लिए अहम्-शून्य होने का साधन अपनाइए | अनन्त परमात्मा की शरण में अपने को डालकर समर्पण- योग में रहिए | मुझे कुछ नहीं करना है, मेरा कुछ नहीं है, सब कुछ प्रभु का है |
(प्रवचन 9, page -105, cassette no. 65)

हम क्षुद्र मनुष्य उतना अपराध कर ही नहीं पाएंगे, उतनी सामर्थ्य ही नहीं है, जितनी क्षमाशीलता उस क्षमा-सिंधु में है | उनकी करुणा की एक बूँद, हमारे जन्म जन्मांतर की भूलों को मिटाने के लिए पर्याप्त है |
(प्रवचन 9, page -105, cassette no. 65)

जो अपनेपर सबका अधिकार मानता है और अपना अधिकार किसी पर नहीं मानता है, वही स्थाई साधक हो सकता है | वह सेवा को प्रधानता देता है, पद को नहीं | (प्रवचन 10, page -107, cassette no. 65)

अपने जीवन में से बुराइयों का त्याग करो | विचार के आधार पर अधिकार-लोलुपता और पद-लोलुपता का त्याग करो | जिनसे सम्बन्ध मन उनकी सेवा करो और प्रेमी होने के लिए प्रभु में विश्वास करो |
(प्रवचन 10, page -109, cassette no. 65)

अच्छा आदमी कौन है ? जो अपने अधिकार का त्याग करता है, दूसरों के अधिकार की रक्षा करता है | जो पद लेकर के भी सेवा करता है, पद त्याग करके भी सेवा करता है | जिसने अपने चित को निर्विकार बना लिया | जिसने इश्वर में विश्वास करके अपने को उनके समर्पित कर दिया | (प्रवचन 10, page -112, cassette no. 65)

जो अधिकार-लोलुपता से मुक्त नहीं हो सका, जो सेवा करने के लिए सभी को अपना नहीं मान सकता, जो वस्तुओं के प्रति अपनी ममता नहीं तोड़ सका, उसके द्वारा सेवा होती नहीं है | (प्रवचन 10, page -112, cassette no. 65)

प्रभु की कृपालुता और संत की सद्भावना सदैव सभी साधकों के साथ रहती है | और सचमुच जो अपनी दशा से असंतुष्ट होकर अविनाशी जीवन की आशा लेकर आगे बढ़ता है, जीवन का मंगलमय विधान इतना सुन्दर है कि उसके जीवन में पूर्णता अवश्य आती है | (प्रवचन 10, page -116, cassette no. 65)

**प्रसंग :** सत्य लोक के नव ऋषि का प्रसंग Page – 23 से 29 के अंतर्गत "महात्मा और परमात्मा का विधान चलेगा संसार में !!" तथा "अचल हिमाचल बनकर सेवा करने का क्या अर्थ है ?" और "लहराती हुई गंगा होकर सेवा करने का क्या अर्थ है ?" — यह "रहस्यमयी बातें" कृपया जरुर पढ़े !!

|| हरिः शरणम ||

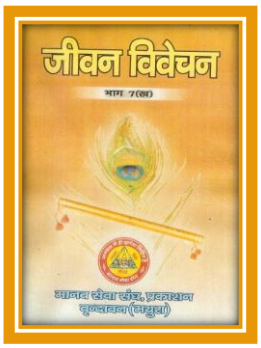


# स्वामी शरणानन्दजी महाराज की अमरवाणी पर आधारित जीवन विवेचन के प्रवचनों तथा पुस्तकें मानवमात्र के लिए संजीवनी बूटी के समान है |

कृपया एक बार पढ़कर देखें तो सही !

## जीवन विवेचन भाग – 7B, कैसेट नं. 66 से 70 के कुछ अमृत बिन्दु —

66) खाने-पीने के लिए, सुख से रहने के लिए सब कठिनाई उठा सकते हैं हम लोग और अविनाशी जीवन के लिए सरल उपाय खोजते हैं ? इस मनोवृत्ति से जो सत्य का मार्ग खोज रहा है, उसको कभी मिलेगा नहीं |

(प्रवचन 11, page -9, cassette no. 66)

तुम्हारे पास सुख आए तो उसके भोगी मत बनो, उदारता पूर्वक उस आए हुए सुख के द्वारा दुखियों की सेवा करो |

(प्रवचन 11, page -10, cassette no. 66)

अनुकूलता की घड़ी में अपने को प्रभु की कृपालुता का दर्शन होता है और जब वे परमहितकारी मेरे हित के लिए, मुझको सचेत बनाने के लिए, मुझको और अधिक कड़ी कसौटी पर कसने के लिए जब प्रतिकूलता के रूप में दर्शन देते हैं, तो आदमी घबरा जाता है | (प्रवचन 11, page -18, cassette no. 66)

जो भी कोई व्यक्ति संयोग-जनित सुख को पसंद करेगा, उसे वियोग-जनित दुःख लेना ही पड़ेगा | कोई उपाय नहीं है कि उससे वह बच सके | (प्रवचन 12, page -26, cassette no. 66)

प्रसंग

खलील जिब्रान एक बड़े दार्शनिक हो गए | उनके साहित्य में पढ़ा मैंने | विदाई की घड़ी में अर्थात शरीर-त्याग करने के समय वे सत्संगी नगर निवासियों से बात कर रहे थे - अगर हमने यहाँ पर, संसार में रहकर, दुनिया में रहकर अपना काम पूरा कर लिया है, तो बहुत अच्छी बात है | बहुत शान्ति में हम रहेंगे और अपना काम हमने पूरा नहीं किया है, तो मेरी इच्छा-शक्ति पुनः मिट्टी-पानी इकट्ठा करेगी और फिर हम यहाँ आ जाएँगे | (प्रवचन 12, page -28, cassette no. 66)

जो अपना नहीं है, उसको अपना मानने से संतुष्टि नहीं होती है | जिसको अपना माना उससे कुछ चाहने से असंतोष रहता है | एक जगह पर महाराज जी ने ऐसा वाक्य लिखा है, कि चाहने वाले को चाहना पशुता है |

(प्रवचन 12, page -34, cassette no. 66)

जो सृष्टि दिखलाई दे रही है, उसकी तो सेवा करो और सेवा के बदले में उससे कुछ चाहो मत और जो परमात्मा है तो सही लेकिन उपस्थित होते हुए भी दीखता नहीं है | तो नहीं दीखता है इसकी चिंता मत करो | अनुभवी जनों की वाणी को स्वीकार करो, गुरु के वाक्य को स्वीकार करो कि वह है और रस स्वरूप वही है और वही रस का स्रोत है, वही जीवन का आधार है | (प्रवचन 12, page -37, cassette no. 66)

67) विधि-पूर्वक काम करना, पवित्र भाव से काम करना, निष्कामता पूर्वक काम करना और लक्ष्य पर दृष्टि रखकर काम करना इन चारों बातों का पालन करते हुए जो लोग अपना कर्तव्य निभाते हैं, उनको कर्तव्य के अन्त में स्वतः अन्दर से शान्ति अनुभव में आती है और उस शान्ति में वे स्थित होकर योगवित हो जाते हैं | (प्रवचन 13, page -41, cassette no. 67)

करने का राग समाप्त होगा, शरीर से तादात्म्य टूट जाएगा | मैंने महापुरुषों को देखा है कि वे अपनी असंगता में आप मस्त रहते हैं | और जब किसी दुखी जन की पीड़ा में शामिल होना होता है, तो शरीर के रूप में इस यन्त्र को पकड़ लेते हैं | कामकर लिया और छोड कर फिर अपनी असंगता में डूब गए | राग-निवृत्ति के बाद अगर प्रवृत्ति होती है तो वह केवल पर-पीड़ा से द्रवित होकर होती है | (प्रवचन 13, page -51, cassette no. 67)

शरीरों में फँसे हुए को सुख-सुविधा सम्मान सब चाहिए | इन तीनों का सम्बन्ध संसार से है | तो संसार से कुछ चाहिए तो वह चाह कहलाता है | संसार ने जो दिया है, उसका सदुपयोग करो तो वह साधन कहलाता है | जो परिस्थिति प्राप्त है,उसका सदुपयोग साधन है और जो प्राप्त नहीं है, उसके बारे में सोचते रहना, कि उसकी आवश्यकता अनुभव करना यह चाह है | (प्रवचन 14, page -54, cassette no. 67)

मानव सेवा संघ की बात जो है, वह केवल सिद्धान्त के आधार पर नहीं है, जीवन का अनुभूत सत्य है | और जिन्होंने अनुभव किया पहले उन्होंने सिद्धान्त बनाया पीछे | पहले यह सत्य उनके अनुभव में आया और पीछे उन्होंने सिद्धान्त बनाकर हम लोगों के लिए रखा | (प्रवचन 14, page -62, cassette no. -)

जब उनकी कृपा से तुम्हारे भीतर भाव बहने लगे, तो उन भावों को अगर तुम क्रिया के रूप में प्रकट कर दोगे तो भीतर से वह निकल कर खर्च हो जाएगा तो शिथिलता आ जाएगी | तो जहाँ तक हो सके छिपाओ उसको भीतर, उसका उपभोग भी मत करो, उसको खुराक भी मत बनाओ और भीतर से उठने वाले भाव को क्रिया में प्रकट भी मत होने दो |
(प्रवचन 14, page -67, cassette no. -)

68) किसी क्षण में भगवान तुम्हारे सामने प्रकट दिख गए, दर्शन मिल गया तो इसको तुम साधन की सफलता मानो तो यह बेकार की बात होगी | क्यों ? क्योंकि इसी पर साधक की द्रष्टि अटक जाएगी | (प्रवचन 15, page -72, cassette no. 68)

साधक अपनी स्वेच्छा से जीवन की आवश्यकता को सामने रखकर परमात्मा की सत्ता को स्वीकार कर लेता है और उनको अपना मान लेता है, तो उसके भीतर अपने में जो कमी महसूस होती थी, अभाव-अभाव हर समय सताता रहता था, वह अभाव तत्काल ही मिट जाता है | (प्रवचन 15, page -72, cassette no. 68)

अपनी बनाई हुई धारणा जो है वह भक्ति की वृद्धि में बहुत बाधा पहुँचाती है | इसलिए धारणा बनाकर मत बैठो, उनके होकर रहना पसंद करो | फिर देखो उनकी क्या मौज होती है, बड़ा आनन्द होगा जब हम लोग अपनी तरफ से अपने को बिल्कुल उनकी प्रसन्नता पर छोड़ देंगे कि महाराज अब इस दीन-हीन, तुच्छ, नगण्य जीवन को आप जैसे चाहें वैसे अपनी विभूतियों से सम्पन्न करें | (प्रवचन 15, page -80, cassette no. 68)

एक तो है अप्राप्त और उसकी याद आयी तो अपने में सूनापन आ गया और एक है नित्य विद्यमान, भीतर-बाहर सब तरफ हर तरह से भरपूर तो उसकी याद आ गयी तो उसकी याद आने मात्र से जीवन भरने लगता है, अभाव मिटने लगता है, सरसता बढ़ने लगती है | (प्रवचन 16, page -83, cassette no. 68)

संसार के साथ रहने पर भगवान की याद आती है | और भगवान के साथ रहने पर संसार को भूल जाता है आदमी |
(प्रवचन 16, page -83, cassette no. 68)

होने वाली क्रिया को किसी करने वाली क्रिया से मिटाना चाहते हो, तो यह सम्भव नहीं है | बिना चाहे, बिना किए अपने आप व्यर्थ चिंतन उपज रहा है, तो अपने आप जो उपज रहा है उसको करने वाले चिंतन से तुम दबा सकते हो, थोड़ी सी देर के लिए, अल्पकाल के लिए, लेकिन मिटा नहीं सकते हैं | (प्रवचन 16, page -86, cassette no. 68)

यह साधन-काल की बात है कि दिखाई दे तो उसे अपने लिए न मानना, अपना न मानना और फिर भी उसके प्रति सद्भाव रखना और सेवा करना | तो इससे तो पुराना जमा हुआ राग मिटेगा और जो सदा-सदा से है, उसको पसंद करना, उसको अपना मानना तो उसकी स्मृति जाग्रत होगी | तो राग की निवृत्ति से शान्ति मिल जाती है और भगवत-स्मृति की जागृति से रस की अभिव्यक्ति हो जाती है फिर साधक को कुछ भी करना शेष नहीं रहता है | (प्रवचन 16, page -90, cassette no. 68)

69) प्रतिकूलता में अपने संकल्पों का त्याग सब को करना ही पड़ता है | बिना छोड़े काम नहीं चलता | लेकिन संकल्पों की पूर्ति की अनुकूलता सामने आए और उस समय भी सावधानी पूर्वक मैं निःसंकल्प रह सकूँ, तो कदम आगे बढ़ सकता है |

(प्रवचन 17, page -100, cassette no. 69)

जो उपलब्ध है, काम करके खत्म करो | क्योंकि तुम्हारे चिंतन में वह सत्य रहना चाहिए | तुम्हारे चिंतन में पर-पीड़ा से द्रवित सेवा का कार्य रहना चाहिए | तुम्हारे चिंतन में तुम्हारा परम प्रेमास्पद रहना चाहिए |

(प्रवचन 17, page -103, cassette no. 69)

प्रसंग

एक युवक स्वामीजी महाराज के पास आया करते थे | गीता भवन में उन दिनों में शुद्ध घी की बनी हुई गरम-गरम जलेबियाँ स्वामीजी के पास बहुत आती थी | महाराज जी तो खाते नहीं थे लेकिन सबको मालूम था, कि उनके पास बहुत लोग रहते हैं, तो उनके लिए दे जाते थे | स्वामीजी महाराज उस युवक को जब गरम जलेबियाँ खिलाते तो चार बजे भोर में किया हुआ सत्संग उसे याद आता और कहता, कि महाराज नित नव रस तो इन जलेबियों में है | नित नव रस ऐसा अदभुत है कि प्रत्येक क्षण में नया-नया, नया-नया आनन्द देता है | प्रेमी को भी, प्रेमास्पद को भी, भक्त को भी, भगवान को भी | तो क्या होता है कि सुख-भोग काल में व्यक्ति जड़ हो जाता है | चेतना से अलग हट कर के, वस्तु से, शरीर से और विषय भोगने वाली इन्द्रियों से इतना उसका तादात्म्य हो जाता है, कि वह निज स्वरूप को भी भूल जाता है, निज परमात्मा को भी भूल जाता है | (प्रवचन 17, page -105, cassette no. 69)

शांति के संपादन से कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के जीवन में स्फूर्ति आती है, जिससे वह कर्तव्यपालन कर सके | शांति की अभिव्यक्ति से अहम् में से विचार का उदय होता है, जो सत-असत का विभाजन कराता है | शांति की अभिव्यक्ति में से भाव की वृद्धि होती है, जो विश्वास को सुदृढ़ बनाती है, सजीव बनाती है | भगवत-प्रेम से अभिन्न कराती है |

(प्रवचन 18, page -117, cassette no. 69)

जब साधक को कुछ भी करणीय शेष नहीं है, हर प्रकार से वह अप्रयत्न होकर के बिल्कुल शान्ति में अवस्थित हो गया, तब उसके बाद उस योग में एक अलौकिक गति पैदा होती है और वह इतनी तीव्र होती है, कि उसमें साधक को फिर कुछ सोचना,करना नहीं पड़ता | वह स्वतः ही संपूर्ण अहम् को ले जाकर के उसके उद्गम में मिला देती है |

(प्रवचन 18, page -120, cassette no. 69)

इस शरीर पर मेरा स्वतन्त्र अधिकार नहीं है, यह मेरा नहीं है तो किसका है ? प्रकृति का है, परमात्मा का है, जिसका भी मानो | जगत का है तो उसके लिए इसका उपयोग करेंगे | जो लोग असत के संग का त्याग कर देते हैं, उनके अहम् की अशुद्धि मिटने लगती है | (प्रवचन 18, page -124, cassette no. 69)

प्रसंग

महाराज जी ने एक घटना सुनाई, कहा कि एक रात को मैं ऐसे ही अपनी व्यग्रता में गाँव के बाहर, खेत की मेड पर अकेले कहीं बैठा था | तो रात में जो खेत में जगह-जगह पर मचान बना-बना करके जानवरों से अनाज को बचाने के लिए रखवाले

जगाया करते हैं आपस में एक दूसरे को | तो उनकी आवाज सुनाई देती थी और किसी की नहीं | तो कहें स्वामीजी महाराज कि ऐसी कलेजे में हलचल मचे उनकी ध्वनि को सुन करके | एक-दूसरे को पुकार-पुकार कर चिल्ला रहे थे और टीन में कनस्तर में कुछ डाल करके हिलाते हैं, जिससे कि जानवर आकर के पौधों को काटे नहीं, भागते रहें | तो स्वामी जी महाराज कहे कि मेरे भीतर ऐसी बात उठी, मैं कहूँ कि अच्छा, मुट्ठी भर अन्न के लिए, ये रखवाले सारी रात जग रहे हैं और तुम प्रेमास्पद से मिलना चाहते हो और तुम्हें नींद आती है ? (प्रवचन 18, page -128, cassette no. 69)

70) जीवन की विविध प्रवृत्तियों के द्वारा द्रश्य जगत से संयोग बनाकर उससे मन बहलाना चाहते हैं | रस तो है नहीं कहीं | नाशवान में वह रस कहाँ, जो मानव ह्रदय को तृप्त कर सके | तो वस्तुओं के और व्यक्तियों के संयोग में रस है ही नहीं, इसलिए तृप्ति होती नहीं है | (प्रवचन 19, page -130, cassette no. 70)

साधक की द्रष्टि जिस क्षण से वास्तविक जीवन की ओर चली जाती है, अनन्त परमात्मा की ओर चली जाती है, उसी क्षण से उसके भीतर की नीरसता का और निराशा का नाश हो जाता है | (प्रवचन 19, page -134, cassette no. 70)

नीरसता का नाश करने के लिए उदार बनना सीखो | उदार बनने का अर्थ क्या है कि दुखियों के दुःख में करुणित होना और सुखियों के सुख में प्रसन्न होना सीखें | तो करुणा और प्रसन्नता का रस जो है, वह अनेक प्रकार के विकारों का नाश करने में मददगार है | (प्रवचन 19, page -136, cassette no. 70)

जीवन को जानने वाले अनुभवी जन सलाह देते हैं कि तुम्हारे भीतर जो कमी महसूस होती है वह बाहरी वस्तुओं की, परिस्थितियों की सहायता से कभी दूर नहीं होगी | उस अभाव को मिटाने के लिए आवश्यक यह है, कि अपने ही में सहज आनन्द स्वरूप, सहज ही रस स्वरूप जो विद्यमान है उस पर ध्यान रखो | (प्रवचन 20, page -146, cassette no. 70)

अविनाशी तत्वों की अभिव्यक्ति के बिना न अभाव मिटेगा, न नीरसता मिटेगी | लेकिन भीतर-भीतर अभाव और नीरसता से पीड़ित रहने पर भी हम पराश्रय और पराधीनता के द्वारा ही समस्या का समाधान करना चाहते हैं | तो बड़ी कठिनाई हो जाती है | (प्रवचन 20, page -146, cassette no. 70)

इच्छाओं की पूर्ति का जितना अधिक अवसर आपको मिलेगा, भीतर-भीतर उतना ही इच्छापूर्ति के सुख का दास आप बनते चले जाते हैं | सुख की दासता बढती जाती है | सुख भोगने की शक्ति घटती जाती है |
(प्रवचन 20, page -148, cassette no. 70)

भारतवर्ष के लोगों के जीवन में वृद्धावस्था में डिप्रैशन की बीमारी कम दिखाई देती है | वे कहते हैं कि बहुत दिन हो गए भई, संसार का यह तमाशा बहुत देख लिया, बहुत खा-पी लिया, बहुत मौज कर लिया, अब क्या करें ? भई अब तो उसको याद करो जो सदा-सदा का साथी है, जो आनन्द स्वरूप है, जो शान्ति स्वरूप है, जो प्रेम स्वरूप है | सारी जिन्दगी परिश्रम के लिए नहीं है, सारी जिन्दगी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति में लगाने के लिए नहीं है |
(प्रवचन 20, page -149, cassette no. 70)

अपने भीतर जो अविनाशी तत्व विद्यमान है, उसके प्रकट हो जाने में जो जीवन है, वह संसार से सम्पर्क बनाने में नहीं है |
(प्रवचन 20, page -157, cassette no. 70)

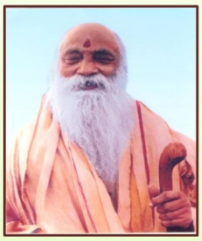

स्वामी शरणानन्दजी महाराज
के प्रति
स्वामी अनुभवानन्दजी सरस्वती
के विचार व्यवहारिक गीता-5 से

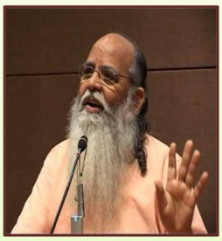

शरणानन्दजी का जीवन पढो आप.... उन्होंने कोई पढाई नहीं की थी, वे प्रज्ञाचक्षु थे | **उनके एक-एक जो अनुभव है, उसको आप "पाँचवा वेद" कह सकते है, इतने श्रेष्ठ अनुभव है और उनके सब अनुभव अपने है, बाहर से नहीं आए हैं कहीं !** तो जब एक व्यक्ति हमारे ही जैसा इस स्थिती में पहुँच सकता है, तो हमारे लिए भी यह संभव है | इसलिये स्वाध्याय में नित्य-निरन्तर साधु-सन्तो के चरित्र का होना आवश्यक है !!

www.swamisharnanandji.org

॥ श्रीहरिः ॥

स्वामी रामसुखदासजी महाराज

शरणानन्दजी की जो बातें हैं ऐसी बातें मिलती नहीं हैं.... शास्त्रों में मिलती है, तो पीछे मिलती है.... उनकी बातें सुनने के बाद मिलेगी.... किन्तु (पहले) मिलती ही नहीं है....
....और इतनी गहरी बातें हैं महाराज.... बहुत विचित्र बातें है.... बहुत विचित्र !!.... बहुत अकाट्य युक्ति दी उन्होंने.... छहों दर्शन है ना उससे तेज है.... थोड़ी-थोड़ी मैंने पढाई की हुई है .... अनुभव किया है.... बहुत विचित्र थे !! प्रवचन:12.11.1997, प्रातः 5

(संसार भर के ग्रंथों में से स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज ने हमें स्वामी श्री शरणानन्द जी महाराज का अकाट्य, अद्वितीय "दर्शन" निकालकर दे दिया है - यह उनकी विलक्षण कृपा है !)

swamisharnanandji.org

**"सर्वमान्य सत्य" को देश, काल, मत, वर्ग, सम्प्रदाय, मझहब का भेद छू नहीं सकता है |"**

"जब शास्त्र के नाम पर, परमात्मा के नाम पर आने वाली पीढ़ी भटकेगी तो परमात्मा का नाम लिए बिना मनुष्यता की और किसी धर्म विशेष का नाम लिए बिना धर्म की प्रतिष्ठा कर देना मानव सेवा संघ की अपनी विशिष्टता है |"

Please refer - swamisharnanandji.org

"मैं तो मानव सेवा संघ के मंच को ऐसा मानता हूँ कि जहाँ पर एक अंग्रेज, एक अमेरिकन, एक रशियन, एक हिन्दू, एक बौद्ध, विभिन्न देशों, विभिन्न मतों के लोग एक साथ बैठे और जीवन के शुद्ध सत्य पर विचार कर सके - इस मंच को ऐसा सुरक्षित रखना है । इस मंच के माध्यम से किसी एक-देशीय साधना की चर्चा कभी नहीं की जाएगी ।" - स्वामी शरणानन्दजी

# सन्तोंका दुर्लभ साहित्य

**परम श्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज जगह-जगह स्वामीजी श्रीशरणानन्दजी महाराज की अनूठी पुस्तकें सुरक्षित रखवाते थे और उन्हींके भावोंका सरल भाषामें अपनी पुस्तकोंके तथा सत्संगके माध्यमसे प्रचार करते थे।** जिससे वर्तमान तथा भविष्य के साधकोंको इस क्रान्तिकारी अकाट्य सन्तवाणी का अध्ययन-मनन करना सुलभ हो सके।

राजेन्द्र कुमार धवनजीने '**क्रान्तिकारी सन्तवाणी**' पुस्तकके प्राक्कथनमें लिखा है कि– 'ब्रह्मलीन स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज एक अभूतपूर्व दार्शनिक सन्त हुए हैं। अध्यात्म-क्षेत्र में वे जितनी गहराई तक पहुँचे थे, उतनी गहराई तक शायद ही कोई दार्शनिक पहुँचा हो। विश्वमें उनके समान महान विचारक मिलना दुर्लभ है। अध्यात्म-जगत में उन्होंने अनेक नये-नये आविष्कार किए। उनके विचार किसी धर्म, मत, सम्प्रदाय, देश आदिमें सीमित न होकर मानव मात्रके लिये हितकारक है। परन्तु अभी तक उनके क्रान्तिकारी विचारोंका व्यापक प्रचार नहीं हुआ है। इतना अवश्य कह सकते हैं कि जिस समय संसार उनकी विचारधाराको जान लेगा, उस समय अध्यात्म-जगतमें एक क्रान्ति आ जायेगी, इसमें किंचिन्मात्र भी सन्देह नहीं है।'

श्रीशरणानन्दजी महाराजके ठोस एवं मार्मिक साहित्य-सागरमें न जाने कितने बहुमूल्य रत्न छिपे पड़े हैं, जिन्हें कोईभी जिज्ञासु खोजकर विशेष लाभ प्राप्त कर सकता है।

'**एक अद्वितीय सन्त**' पत्रमें स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराजने लिखा है, 'शरणानन्दजीके समान मुझे दूसरा कोई नहीं दीखता। दीखना दुर्लभ है! शरणानन्दजी हमें मिल गये, उनकी पुस्तकें पढ़नेको मिल गयीं– यह भगवानकी हम पर बड़ी कृपा है।'

मानव मात्रमें क्रान्ति आ जाये ऐसे क्रान्तदर्शी श्रीशरणानन्दजी महाराजकी विचारधाराका प्रचार-प्रसार करना सन्तोंकी प्रसन्नताका हेतु है। **श्रीशरणानन्दजी महाराजका पूरा साहित्य** (Approx. Cost ₹. 1500/- only) **मानव सेवा संघ, वृन्दावन**से उपलब्ध है। जिसे आश्रमोंमें, पुस्तकालयोंमें, संस्थाओंमें तथा साधु-सन्तों, साधकों, कथाकारों इत्यादि तक पहुँचाना चाहिए– भेट करना चाहिए।

– एक साधक

**हे मेरे नाथ ! मैं आपको भूलूँ नहीं।**

www.swamisharnanandji.org ❋ www.swamiramsukhdasji.org